ओं

ओं ईश्वरा गुरुदेवा !

कुशलता पावें ! संपन्नता पावें !

धृव नक्षत्र की महाकृपा और महाप्रकाश पावें !

प्राण ही अंतर्यामी

(हमारे अंदर होकर हमें संचालित करनेवाला भगवान)

अनुग्राहक

ज्ञानगुरु मामहर्षि

वेणुगोपाल स्वामी जी

मामहर्षि ईशवराय गुरुदेवर तपोवन

सच्चा ज्ञान ध्यान विकास श्रीसभा

वडुगपाळैयम् – पुन्जै पुळियम्पट्टि – 638 459

ईरोडु जिल्ला, तमिलनाडु राज्य

भारत

Ph. : 04295 - 267318

किताब का नाम	:	**प्राण ही अंतर्यामी**
तपोवन प्रकाशन सँख्या	:	96
पहला प्रकाशन तारीख	:	
अधिकार	:	तपोवन को
पृष्ठ सँख्या	:	176
प्रकाशक	:	**मामहर्षि ईश्वराय गुरुदेवर तपोवनम्** पुन्जै पुळियम्पट्टि - 638 459 ईरोडु जिल्ला, तमिलनाडु राज्य, भारत ✆ : 04295 - 267318

इस किताब के तात्पर्यों को प्रकाशित करने या अनुवाद करने के लिए तपोवन के निर्वाहकगण की अनुमति पानी चाहिए

- निर्वाहकगण

ज्ञानगुरुजी और स्वामी अम्मा की कृपापूर्ण आशीर्वाद से

तमिल से हिन्दी अनुवादक:- श्रीमती. गांधिमति गणेशन, चेन्नै

सहायक:- श्रीमती सुमंगला, ईरोडु

Printed at : Sabanayagam Printers, Chidambaram ✆ : 04144 - 223040
Chennai ✆ : 044 - 7969 2738, 92821 02533
E-mail : sabanayagamprinters@gmail.com

प्राण ही अंतर्यामी
हमारे सोचनेवाला ख़्याल ही
भगवान
(हमारी) चेतना की
ऊर्जा ही दैव

– ज्ञानगुरु वेणुगोपाल स्वामी जी

ओं
ओं ईश्वरा गुरुदेवा

ज्ञानगुरुजी का कृपावचन

गुरुदेवजी ने जिन्हें उपदेशित करके दृश्यों तथा भावपूर्वक समझाया और मैं ने अपने अनुभव द्वारा ध्यान के माध्यम से समझ लिया, उन्हें दुनिया के सभी लोगों को इस ध्यान के माध्यम से ऊर्जा प्राप्त करनी चाहिए – इसी अभिलाषा से हमने "प्राण ही अंतर्यामी" नामक इस किताब को लिखना शुरू किया ।

आज के वैज्ञानिक दुनिया में दुनिया के लोगों को कुशलता पाने तथा संतुष्ट रहने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान के द्वारा तरह तरह की भलाइयों को करते रहने पर भी वैज्ञानिकज्ञान से वायुमंडल में "राकेटों" को चलाकर विसफोट करके न केवल वायुमंडल को जहरीला बनाते हैं, बल्की पृथ्वी पर परमाणु बमों को विस्फोट करके तथा मशीनों को संचालित करने के लिए परमाणु ऊर्जा का प्रयोग करके वायुमंडल में परमाणु विकिरणों का प्रसार करते हैं और कृमियों को नाश करने के लिए कृमि नाशकों का छिड़काव करके इसे जहरीला बनाते हैं वैज्ञानिक लोग ।

ज्ञानियों के दिखाये मार्ग पर भलाइयों को ही करके, अच्छे मार्ग पर चलकर, अच्छी स्थितियों को पाकर, जन्मजात स्थिति रूपी प्रकाशमान स्थिति प्राप्त करनी चाहिए – इस प्रकार सोचकर जीवित

रहने पर भी, वैज्ञानियों के द्वारा फैलाये गये जहरीली स्थितियों को दुनिया के सभी लोगों को साँस लेने पड़ने के कारण, मानव के शरीरों में दाखिल होनेवाले अच्छे गुणों को प्रेरित करने वाले अच्छे भावों के परमाणुओं में साँस में लेनेवाली जहरीली स्थितियाँ मिल जाती हैं। अर्थात् जिसतरह विषाक्त मकोड़ों के डंक मारने पर संताप होता है, उसीतरह अच्छे गुणों के भावों के साथ बोलने पर भी, कडुए वचन ही प्रकट होते हैं । इसी प्रकार अज्ञात में ही गुस्सा, क्रोध, घृणा, वेदना आदि विचारों का उत्पन्न होते हैं। इसके अलावा इस से सामान्य लोग से लेकर वैज्ञानिक तक को आत्महत्या कर लेने के लिए प्रेरित कर देते हैं।

शरीर से विलग होकर जानेवाले प्राणात्मा को भी हवा में मिश्रित जहर की स्थितियाँ विकृत करके, अगले जन्म में मानव बनकर जन्म लेने की योगयता खोकर, विषैली कीड़ों के रूप में जन्म लेना पड़ता है।

इस तरह के वैज्ञानिक लोक में जीवित करनेवाले लोग सच्चे ज्ञानियों के दिखाये मार्ग पर, ध्यान के माध्यम से, अपनी शक्तियों को बढ़ाकर, सप्तऋषि मंडलों से बाहर निकलने वाली सच्चे ज्ञान रूपी प्रकाशमान लहरों को प्राप्त करके, अपने साँस के द्वारा अपने शरीरों में मिश्रित जहरीली स्थितियों को हटाकर, मानव, मानव की स्थिति में जीवित होकर, प्राणात्मा को सच्चे ज्ञान प्रकाश के रूप में बदलकर, सप्तऋषि मंडल के परीक्रमात्मक चक्कर में जा पहुँचकर 'सदैव सोलह' (चिरंजीवी) बनकर प्रकाशमान स्थिति पावें ।

गुरुदेवजीने हमें उपदेशित करके, दृश्यों तथा भावपूर्वक जिन्हें समझाये और हम अनुभव पूर्वक अपने ध्यान के माध्यम से समझ

लिए, उन सभी सच्ची स्थितियों को सामान्य लोग भी – परिवार के जीवन में रहने वाले बच्चों से लेकर बड़े लोगों तक ध्यान से शक्तियों को प्राप्त करके जीवन में आनेवाले दुखों को 'आत्मशुद्धि' करके हटाकर प्राणात्मा को प्रकाशमान बन सकते हैं – इस प्रकार हम उपदेशित करते रहने को, चिदंबरम्. श्री.के.पी.कृष्णराज जी किसी न किसी तरह किताब के रूप में लाकर, सभी लोगों को इसे जानकर, समझकर, जीवन में इस स्थिति को पालन करके कुशलता तथा संपन्नता प्राप्त करना चाहिए – इसी बड़ी अभिलाषा से, हमें इस किताब को लिखने के लिए बड़े प्रयत्न के साथ निवेदन करने से हम इस किताब को लिखने लगे।

इस किताब को छपवाने के लिए सभी प्रथत्नों को लेकर किताब के रूप में लानेवाले के.पी.कृष्णराज जी – इस किताब को पढ़कर इससे आत्मबल तथा आत्मज्ञान पानेवाले आत्म ऐक्य सज्जनों की अच्छी आशिषें पाने के लिए हमारी आशीर्वाद पावें। इसके अलावा गुरुदेवजी की कृपा से, आशीर्वाद से, महर्षियों की कृपाप्रकाश से आत्मबल तथा सच्चाज्ञान प्रकाश प्राप्त करने के लिए हमारी आशिषें पावें।

इस किताब को पढ़कर सभी लोगों को भलाई पानी चाहिए – इस अभिलाषा से रात दिन इस किताब के अक्षरों की गलतियों को ठीक करके, यह किताब सभी लोगों को जल्दी मिलने के लिए जो कुछ करना है उन सब कार्यों को करनेवाले चेन्नै.श्री.एस.रुद्रमूर्ति जी को गुरुदेवजी की कृपा आशिष से महर्षियों की कृपा प्रकाश पाकर आत्मबल तथा सच्चाज्ञान प्रकाश पाने के लिए हमारी आशिषें पावें ।

हम से लिखे गये इस किताब को अपने हाथ से लिखकर नकल करनेवाले ताम्बरम् श्री. आर. पळनिसामी जी को गुरुदेवजी की कृपाआशिष से महर्षियों की कृपा प्रकाश पाकर आत्मबल तथा सच्चाज्ञान प्रकाश पाने के लिए हमारी आशिषें पावें ।

जब मैं इस किताब को लिख रहा था तब रोज़ यहाँ आकर अपनी बड़ी सहायता देनेवाले चेन्नै. श्री.एम.कृष्णन जी, बी.ए., को गुरुदेव जी की कृपा आशिष से महार्षियों की कृपा प्रकाश पाकर, आत्मबल और सच्चा जान प्रकाश पाने के लिए हमारी आशिषें पावें ।

कुशलता पावें! संपन्नता पावें!

महर्षियों की कृपा प्रकाश पावें!

वेणुगोपाल स्वामी जी

मामहर्षि ईश्वराय गुरुदेवर तपोवन

पुन्जै पुळियम्पट्टि

ओं

प्राण ही अंतर्यामी
(स्पष्टीकरण)

आदिशक्ति और परब्रह्म

आदिकाल में बाष्प के रूप में होनेवाली शक्तियाँ “आदिशक्ति” हैं। वे शक्तियाँ बादल के रूप में बदलकर, बादल धूल होकर, धूल आकर्षित चुंबकीय सूक्ष्म परमाणु बनकर, आकर्षित चुंबकीय सूक्ष्म परमाणु अपने आकर्षण से विविध गुणों की ऊर्जाओं को इकट्ठा करके, विविध गुणों की भावतरंगों के रूप में बदलकर, एक दूस्रे से मिल जाने पर पानी बनकर, पानी भाप बनकर, इसीतरह एक दूस्रे से मिलने से गरम होनेवाले चुंबकीय परमाणु, एक के साथ एक मिश्रित होने पर अम्ल के रूप में गलानेवाले परमाणु, आकर्षित चुंबकीय परमाणु तथा चिनगारियों को उत्पन्न करनेवाली भावतरंगें अदृश्य स्थिति में परमाणु बनकर, लहर लहरों के रूप में ब्रह्माण्ड में उत्पन्न होकर फैलनेवाली महाशक्तियाँ, तरह तरह के गुणोंवाले सूक्ष्म परमाणुओं के रूप लेने का कारण होनेवाले घटनाएँ ही **“परब्रह्म”** होता है। विभिन्न भावतरंगें एकत्रित होकर एक पदार्थ (चीज़) के रूपधारण करनेवाला घटना **“ब्रह्म”** होता है। उत्पन्न होनेवाला पदार्थ **“शिव”** होता है। अपने भारीपन के वज़न से ब्रह्माण्ड में सरककर घुमाने की ऊर्जा **“शक्ति”** होती है। इस तरह **“शिवशक्ति”** बनकर

संचालन करके घुमाने से गरम होकर, गरमीय तरंगें पदार्थ के अंदर होनेवाली भावतरंगो के परमाणुओं को गरम करके, भावतरंगों को संचालित करने वाली ऊर्जा ही **"अंतर्यामी"** होता है।

ब्रह्माण्ड में, एक छोटी सी चीज़ के रूप लेकर, वह चीज़ शिवशक्ति बनकर घुमाकर, चलते हुए, ब्रह्माण्ड में होनेवाले विविध गुणों की भावतरंगें, चुंबकीय परमाणु, चिनगारी उत्पन्न करनेवाले परमाणु, एक दूस्रे से मिलने पर अम्ल उत्पन्न करनेवाले परमाणु, धूल और धूलकणो को अपने अंदर लेकर विकसित होने की स्थिति पाने वाले हैं।

ऊपर कहने की तरह कई करोड़, करोड़ों साल उगकर, ग्रह बनकर, नक्षत्र बनकर, सूरज के रूप में पूर्णता पाकर, सूरज अपने अंदर विकसित होनेवाली महाऊर्जा के विकिरणीय ताकत, गरमीय परमाणुएँ, प्राणात्माएँ, विभिन्न धातुवर्ग के सार, चुंबकीय परमाणुएँ. धूल, कठोर विषाक्त धूल कण–इन सब को अपनाकर बड़े तूफान के रूप में ब्रह्माण्ड में थूककर ब्रह्माण्ड में फैलाता है।

सूरज के ब्रह्माण्ड में थूकनेवालों से एक छोटा सा पदार्थ बनकर, उसके विकास से ग्रह बनकर, ग्रह अपने विकास से नक्षत्र बन जाते हैं। विकसित करनेवाले ग्रह, सूरज के आकर्षित चक्कर में सूरज को परिक्रमा करते हुए, सूरज के अलिंगन में जीकर विकसित होते रहते हैं।

(सूचना : – सूरज के आकर्षण चक्र एक ब्रह्माण्ड होता है। इस ब्रह्माण्ड में सूरज को परिक्रमा करने वाले ग्रह, नक्षत्र, चाँद – ये सब मिलकर एक सूरज परिवार बनते हैं।)

ब्रह्मांड के अंदर होनेवाले ग्रह, चाँद, नक्षत्र, प्राणात्माएँ – ये सब को सूरज अपनी ऊर्जाओं से चमकाता है। ऊपर कहने अनुसार ब्रह्माण्ड के अंदर होनेवाले सब को प्राण बनकर चलानेवाले सूरज को **“सर्वेश्वरा”** तथा चलाने पर होनेवाली शक्ति को **“सर्वेश्वरी”** कहकर महर्षि लोग पुकारने लगे।

ब्रह्माण्ड में सूरज को परिक्रमा करनेवाली पृथ्वी, ब्रह्माण्ड में तैरकर घुमाते रहने की स्थिति में, ब्रह्माण्ड में तैरते रहनेवाले प्राणाणुओं को तथा विभिन्न भावों के सार को अपने अंदर आकर्षित करके, अपनाकर अपने आप विकसित होते हुए, अपने अंदर वनस्पति राशियों को भी उगाती है। वनस्पति राशि अपने अंदर विकसित करनेवाले सार को पृथ्वी पर फैलाती है। इसी तरह पृथ्वी पर उगनेवाले सर्व सार अपने अंदर विकसित करनेवाले सार को पृथ्वी पर फैलाते हैं। ब्रह्माण्ड से आकर्षित कर लेनेवाली गर्मीय लहरें तथा विभिन्न भावतरंगें पृथ्वी पर फैलाये रहे हैं।

पृथ्वी ब्रह्माण्ड से आकर्षित करके लेनेवाले प्राणात्माएँ, पृथ्वी पर फैलानेवाले वनस्पति वर्ग के सार तथा विभिन्न भावतरंगों के सार – इनको आकर्षित करके, शरीर पाकर उगते हैं। यानी कृमी, कीड़ा, पक्षी, जानवर – इसी तरह मानव तक विकास पाकर उगते रहते हुए जीवित होते रहते हैं।

पृथ्वी ब्रह्माण्ड में एक **“परम”** होने से **“परमेश्वरा”** तथा पृथ्वी के सर्व चीज़ों को संचालित करनेवाली शक्ति को **“परमेश्वरी”** कहकर महर्षि लोग पुकारने लगे।

पृथ्वी के अंदर वायु में मिश्रित होनेवाली सर्व भावतरंगें तथा सर्व सार (पुष्टी) पृथ्वी का "आत्मा" बन जाते हैं। (पृथ्वी एक परम् है । परम का आत्मा **"परमात्मा"** बन जाता है।) पृथ्वी में होनेवाले सभी पदार्थ, वनस्पति वर्ग, जीवराशि – ये सब परमात्मा से ही सारों को आकर्षित करके उगकर जीवित रहते हैं। इसी तरह जीवराशियों के मर जाने पर प्राणाणुएँ परमात्मा में मिल जाते हैं। वनस्पति वर्ग के सार भी परमात्मा में मिलते हैं।

सूरज, ग्रहों तथा नक्षत्रों में उगनेवाली महाशक्तियों के ब्रह्माण्ड में फैलाये रहने से, सूरज में उगनेवाले, प्राणाणु के रूपधारण करनेवाले सूक्ष्म परमाणु तथा कार्तिका नक्षत्र में उगनेवाला विकिरणीय सूक्ष्म परमाणु, बृहस्पति ग्रह में उगनेवाले सार, मंगल ग्रह में उगनेवाले सार – ये चारों शक्तियाँ संदर्भवश में एक दूसरे से मिल जाने पर, एक हमल बनकर तड़पनेवाले प्राणाणु बनते हैं।

(सूचना : इसीतरह सूरज में उगनेवाले प्राणाणु के रूपधारण करनेवाला सूक्ष्म परमाणु, हर एक नक्षत्र में उगनेवाला विकिरणीय परमाणु, बृहस्पति ग्रह में उगनेवाला सार, हर एक ग्रह में उगनेवाला सार – ये चारों शक्तियाँ संदर्भवश में एक के साथ एक मिलने पर एक हमल बनकर तड़पनेवाला प्राणाणु बन जाते हैं। यानी प्राणाणु में दड़कन होते रहने से प्राणाणु के अंदर गरमी होता रहता है। संदर्भवश से वनस्पति वर्ग के सारों में इस तरह के प्राणाणु के गिर जाने पर उस वनस्पति वर्ग के सार को प्राणाणु आकर्षित करते ही प्राण के तड़पने से होनेवाला गरमी, वनस्पति वर्ग के सार में छिपनेवाले गरमीय परमाणुओं को चलाकर कीड़ा का रूपधारण करता है)

ऊपर कहने अनुसार प्राणाणु के तड़पने से प्राणाणु में उत्पन्न होनेवाली गरमी कीड़े के शरीर में छिपने वाले गरमीय परमाणुओं को

चलाकर, शरीर को जीने तथा उगने की तरह करनेवाला प्राणाणु के अंदर गरमी बनकर, प्राण के रूप में हिलने वाला **"प्राण ही अंतर्यामी"** होता है।

कीड़ा बनकर शरीर पाकर जीते रहने की स्थिति में, कीड़े के लेनेवाला चारा तथा साँस में लेने वाले भाव शरीर में सूक्ष्म परमाणु के रूप में उगकर, उगनेवाले सूक्षम परमाणुएँ, कीड़े के आकर्षण में आत्मा के रूप में जमा होकर, प्राणात्मा बनकर, कीड़े के मर जाने पर कीड़े का प्राणात्मा परमात्मा में मिल जाता है।

परमात्मा में मिश्रित होनेवाले कीड़े का प्राणात्मा, पुनर्जन्म में मकोड़ा बनकर पैदा होता है। इस तरह हर एक शरीर में लेनेवाले भोजन तथा विभिन्न गुणों के भावों के अनुसार छिपकली, साँप, पक्षी, जानवर – इस तरह मानव तक रूपधारण करनेवाले

"प्राण ही अंतर्यामी है।" सोचनेवाला विचार ही "भगवान" है।

भावों की कार्रवाई ही "दैव" है।

ओं
ओं ईश्वरा गुरुदेवा!

विषय सूची

1. हमारा जीवन और महान की भेंट 19
2. पागल नहीं, महान हैं – इसका ज्ञात होना 23
3. मुझे उपदेश दिये 24
4. गुरुनाथ के रूप में स्वीकार करना 30
5. आत्महत्या करने वाले प्राणात्मा की हालत 31
6. शाप से होनेवाली स्थिति 32
7. सप्त ऋषि मंडलों को दिखाना 33
8. बिजली को देखने देना 35
9. वनस्पति वर्ग सार लेने का नियम् 37
10. केदारनाथ में ध्यान 39
11. पळनी में बस्सों को रोकना 39
12. "कान्सर" रोग को स्वस्थ करना 40
13. मारपीट के लिए आनेवाले आशीर्वाद पाना 43
14. न दौड़नेवाले आटो को दौड़ाना 43
15. ऐवर पहाड़ जाना 44
16. विद्याओं को सीख लो – गुरुजी कहते हैं। 45

17. गुरुदेवजी को पीठ पर लादकर चलना 48

18. मानव का जीवन 48

19. प्राण ही अंतर्यामी 51

20. गुरुदेवजी के सूक्ष्म स्थिति पहुँचना 53

21. पहला दैव कौन हैं – इसका ज्ञात होना 55

22. गूँगे आदमी को बोलने की शक्ति देना 56

23. तिरुपति जाना 57

24. मेरे परिवार को दृश्य के रूप में दिखाये 61

25. रोगियों को सूँघने पर स्वस्थ करना 65

26. तिरुत्तणि रवाना होना 67

27. व्यापारी का कहना 69

28. वात रोग को स्वस्थ करना 71

29. अरुणगिरीनाथ के ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति 75

30. आवेश में आने वालों की हालत 78

31. मंत्रवादियाँ तथा पैशाचिक दुनिया 79

32. कुमार पाळैयम् जाना 81

33. कुमार पाळैयम् में रोगों को चंगा करना 82

34. मंत्रवादियों से होनेवाली मुसीबतें 83

35. मंगळूर जाना 85

36. कोल्लूर में ध्यान 87

37. कोलमामहर्षि की तपोशक्ति को जानना 88

38. "ओम्" - इस प्रणव की सच्ची स्थिति 90

39. दैविक गुणों के स्वभाव 91

40. विष्णु रक्षा करता है 99

41. ब्रह्मा सृष्टी करता है 99

42. शिव विनाश करता है 100

43. धृव ध्यान 100

44. "आत्म शुद्धि" करने का नियम 102

45. धृव ध्यान, संयुक्त ध्यान, पूर्णिमा ध्यान और कुटम्ब ध्यान करने के नियम 103

46. संयुक्त ध्यान के फल 117

47. पूर्णिमा ध्यान करने के फल 118

48. कुटुम्ब (परिवार) ध्यान के फल 119

49. कलश और ध्यान 121

50. कलश रखने का नियम 122

51. पति और पत्नी ध्यान करने का नियम 124

52. पति अपनी पत्नी के लिए ध्यान करने का नियम 125

53. पत्नी अपने पति के लिए ध्यान करने का नियम 125

54. पति व पत्नी अपने अपने माता पिता के लिए ध्यान करने का नियम 126

55. पति और पत्नी सोने जाने के पहले 128

56. बच्चों पर गुस्सा आते समय 129

57. गर्भवती स्त्रियों को 130

58. शिशुओं को 130

59. बच्चों में ध्यान करने की आदत लाना 131

60. विवरण जाननेवाले बच्चों को 131

61. बच्चे कुशलता पाने के लिए 133

62. रसोई करते समय 133

63. भोजन परोसते समय 134

64. रिश्तेदारों के कष्टों को सुनने के बाद 134

65. प्रेम के साथ सोचते समय 135

66. दूसरों के कष्टों को कानों से सुनते समय 136

67. आँखों से मुसीबतों को देखते समय 138

68. बाहर जाते वक्त 147

69. पेशे के स्थानों पर 147

70. व्यापार करनेवालों को 147

71. पत्र, पत्रिकाओं को पढ़ते समय 148

72. रिश्तेदार तथा मित्रों के घर जाते वक्त 148

73. शादी के लिए जाते समय 148

74. खेत में बीज बोतते समय 148

75. रोगियों से मिलते समय 149

76. संकट देनेवाली भावतरंगों को हटाने के लिए 149

77. दुर्घटनाओं को या अप्रतीक्ष स्थितियों को देखते समय 149

78. दुखदायक घटनाओं के लिए जाते समय 150

79. कुल दैवों की प्रार्थना करने का नियम 150

80. मंदिर जाकर प्रार्थना करने के नियम 151

81. विनायक (गणेश) चतुर्थी - तत्व विवरण 157

82. ज्ञानगुरु और तपोवन 166

ओं

ओं ईश्वरा गुरुदेवा!

हमारा जीवन और महान की भेंट

भोग मामहर्षि मुरुगन (कार्तिकेयन) के रूप में अनुग्रह करनेवाले पळनियंपति में मैं एक सामान्य परिवार में पैदा होकर, उगकर, रूई के कारखाने में काम करते हुए साइक्ल तथा लकड़ी की दूकानों को भी चलाता रहता था। मैं चारवीं कक्षा तक ही पढ़ाया था। मेरे जीवन के लिए जो कुछ चाहिए उसे कमाता था। इस तरह जीवित रहते समय पागल की तरह पळनी में घूमने फिरनेवाला एक आदमी मुझे देखते ही मेरे लिए चाय खरीदकर दिया करते थे । यदी मैं उसे पीने से इनकार करें तो, नाना प्रकार की गालियाँ देकर मुझे कोसते थे। इस गपशप से बचने के लिए विलग होकर जाने पर भी, मेरे कमीज़ को घसीटकर बलवंत से चाय पिलाते थे। इससे डरकर चुपकी से कोई और रास्ते पर चलें तो भी किसी न किसी प्रकार ढूंढ लेते थे। कुछ दिन कहाँ जाएँगे – मुझे पता नहीं था । और कुछ दिन मेरे साइक्ल की दूकान आकर चाय पीने को बताये । कुछ समय मैं कारखाने से लौटते समय, षण्मुख नदी के समीप मुझे रोककर कोई न कोई कहा करते थे । वे क्या कहते हैं – मुझे नहीं मालूम था । उनके बोलने की भाषा भी मेरे समझ में नहीं आता था । इस तरह से ही हम दोनों के बीच में संपर्क हुआ ।

कुछ समय एक चांदी के गोले को मेरे पास देकर कोई न कोई बातें करते रहते थे । कुछ शब्द समझ में आते थे, कुछ नहीं । लेकिन उस चाँदी के गोले को मेरे यहाँ रखने से मैं ने इनकार कर दिया । कारण यही है कि उनके रहने की स्थिति देखकर, मेरे मन में

एक प्रकार का डर होता था । मंत्र, तंत्र करने से ही यह स्थिति आयी होगी – यह विचार मेरे मन में हुआ । उसके बाद उनको देखते ही भय होने लगा क्योंकि उनके दिये पदार्थ को लेने पर, मुझे भी वही स्थिति हो जाएगी – यही डर था ।

उसके बाद उनको रास्ते पर देखते ही मुड़कर किसी और रास्ते पर जाऊँगा । उसतरह जाने पर भी किसी मोड़ पर खड़े होकर मुझे पकड़ लेंगे । मुझे पकड़ते ही 'चोर, चोर' कहकर चिल्लाते थे । इस स्थिति को अन्य लोगों के देखने पर मैं लज्जित हुआ । उससे छिपकर चलने को छोड़ दिया ।

पेशे के कारण मैं एक बार अहमदाबाद गया था । वहाँ दो साल तक रहा था । वहाँ भी एक दिन अचानक मेरे सामने प्रत्यक्ष होकर, चाय पीने के लिए बुला ले गये । मैं ने भी चाय पिया । यदी नहीं पिएँ तो गालियाँ देंगे – इसे मैं जानता था । यहाँ कैसे आये, मेरे यहाँ पर रहने को कैसे जानते थे – इसे पूछने पर गुस्से के साथ किसी अज्ञात भाषा में बोलेंगे । इसलिए वे कैसे अहमदाबाद आये – इसे पूछकर जान नहीं सका । लेकिन उन्हें चाय खरीदकर देने तक देखते रहा था । क्योंकि उसमें कोई और चीज़ को डालकर देने का डर था । कोई अन्य पदार्थ देने पर उन्हें नहीं लेता था । यदी देनेवाले पदार्थ में कोई अन्य चीज़ को मिलाकर दें तो मुझे मुसीबतें आने की संभावना है – यह भय मेरे भन में हमेशा रहता था । इस तरह पागल की तरह होनेवाले के साथ होता रहता था । इसी तरह ही हम दोनों का संर्पक हुआ ।

मेरी शादी होकर दो लड़के और तीन लड़कियाँ थे । एक बेटी की शादी हो चुकी थी । आखिरी बेटा का बरस डेढ़ साल का होगा ।

इस समय मेरी पत्नी की तबीयत खराब होकर, कमर के नीचे दोनों पैरों को न हिलाने की स्थिति हुई । अस्पताल ले जाकर जाँच करने के बाद वैद्य लोगों ने कहा – शस्त्र चिकित्सा करनी चाहिए । लेकिन शस्त्र चिकित्सा करने के लिए शरीर में बल नहीं होने के कारण कुछ दवा देकर तबीयत को ठीक करने के बाद आपरेशन करेंगे । इस तरह बताकर दवा देते रहते थे । लेकिन तबीयत में तरक्की होने के बदले दिन रात क्षीणित होने लगी । इसतरह कई महीनों तक दवा देते रहने पर भी शरीर में उन्नती नहीं आयी । इसलिए वैद्य लोग घर ले जाने के लिए बताए । घर लाते समय पत्नी की स्थिति आज या कल की स्थिति थी । कमर के नीचे दोनों पैर चेतना शक्ति खोकर, पैरों में व्रण होकर बहुत खराब थे । घर लाने के दिन अपनी बेटी की स्थिति देखकर मेरे ससुर बेहोश होकर मर गये । उनकी इकलौती बेटी है मेरी पत्नी । इसलिए यह हालत हुई । अगला दिन ससुर की अंतिम क्रियाओं को करने के लिए तड़पते रहते समय, रोनेवाले लड़के को हाथ में लेकर मैं बाहर आया । तब मुझे चाय देनेवाले पागल आदमी ने मुझे देख लिया । मेरे दुख की ओर उनका ध्यान नहीं चला । तब भी मुझे चाय पीने के लिए बुलाए । मैं ने इनकार कर दिया । इसपर कडुवे शब्दों से कोसने लगे । रिश्तेदार मुझे हँसी उड़ाएँगे – इस प्रकार सोचकर गुस्से के साथ मैं ने उस पागल को गिरा दिया । वे तो मुझे मारने लगे । लड़के को किसी और व्यक्ति के हाथ देकर खड़ा रहा था । मेरे कमीज़ को पकड़कर फाड़ने लगे । “आज मेरे साथ चाय नहीं पियें तो तुझे नहीं छोड़ूँगा” – इस प्रकार कहने पर, मेरे पास होनेवाले लोग बोले – “क्यों यह गपशप, चाय पी लो” – इस प्रकार कहकर मुझे चाय पिला दिए । मैं ने भी चाय पिया । लेकिन वह पागल आदमी मुझे नहीं छोड़े । “आज तुझे नहीं छोड़ूँगा ।” इस प्रकार कहकर मुझे किसी और जगह जाने के लिए

बुलाए । मैने सोचा कि इस पागल आदमी को कुछ दूर पर जाकर छोड़कर आवूँ । इस तरह मैं उनके साथ गया ।

पळनी में होनेवाले पेरियनायकी अम्मन (देवी) मंदिर के तालाब तक मुझे ले गये । मैंने कहा – घर जाना चाहिए । वे नहीं सुने । तालाब में पानी नहीं था । तालाब के अंदर जाने के लिए बुलाए । क्या करना है – इसका पता नहीं था । मेरे हाथ पकड़कर तालाब के अंदर ले गये । कुछ देर तक मौन में थे । उस समय हम दोनों के अलावा कोई भी वहाँ नहीं थे । कुछ देर में तमिल भाषा में अच्छी तरह बोलने लगे । मेरे विवरण जानने के काल से लेकर मेरे जीवन में घटित घटनाओं को, मेरी पत्नी की तबीयत के बारे में, अस्पताल में डाक्टर लोगों के मेरी पत्नी के बारे में कहने को – यानी तुम्हारी पत्नी का जीवित होना भगवान से ही होगा – इस तरह वैद्य लोगों के कथन को बताकर, "भगवान ने तुम्हारी पत्नी की रक्षा कर दी है" – इस प्रकार कहकर ज़ोर से हँसने लगे ।

बाद में तालाब के ऊपर ले आकर चाय की दूकान में चाय पीने को कहा । चाय पीने के बाद मंदिर के पास होनेवाली दूकान से एक नींबू का फल तथा विभूति खरीदकर दिये और बताये कि विभूति को तुम्हारी पत्नी के शरीर पर लगाकर फल का रस लेकर उसे पिलाओ । तुम्हारी पत्नी चंगा हो जाएगी । इसे कहकर मुझे घर भेज दिये ।

पागल नहीं, महान हैं - इसका ज्ञात होना

मैं घर लौटते समय कई विचारों को सोचकर, ये पागल आदमी शायद एक महान होंगे - इस विचार के साथ घर पहुँचा । आने के बाद विभूति को मेरी पत्नी के शरीर पर लगाकर नींबू के फल से रस लेकर उसे पिलाया । दोनों पैरों में चेतना शक्ति के बिना होनेवाली मेरी पत्नी अगले दिन सबेरे पैर की उँगलियों को ज़रा सा हिलाने लगी । बेहाश में रहनेवाली मेरी पत्नी आँखे खोलकर, “मुझे भूख लगता है” - इस प्रकार मुँह खोलकर पूछने पर मुझे और मेरे बच्चों की खुशी की टिकाना नहीं हुई ।

इस विवरण को पागल की तरह दीख पड़ने वाले उस महान को देखकर बताना चाहिए - इसी इच्छा के साथ उन्हें खोजने लगा । लेकिन वे तो कहीं भी ढूंढने पर मिल न पाये । इसतरह खोजते खोजते एक महीना पूरा हो गया । मेरी पत्नी भी इस महीने के अंदर अच्छी तरह चंगा होकर उठकर बैठना तथा कमरे में चलना शुरु करती थीं ।

रोज़ साइक्ल लेकर पळनी भर घूमने फिरने पर भी उन्हें नहीं ढूंढ पाया । एक दिन बाजार में सड़क के मोड़ के पास “उन महान को देखना चाहिए” - इस तरह याचनीय भाव के साथ सड़क के दूस्री तरफ़ देखता रहता था । अचानक मेरे पीछे से कोई मुझे छूकर कहे - “क्या मुझे ढूंढे?” - यह आवाज़ सुनाई पड़ी । मुड़कर देखते ही अचरज में पड़ गया । साथ साथ बहुत सा खुश भी हुआ । क्योंकि जिन्हें ढूंढकर एक महीने तक घूमता रहा वही महान वहाँ खड़े थे । तुरंत उसने बताया - “मुझे एक चाय खरीद लाओ” (अब

तक वे ही चाय खरीदकर देने का आदत था) मुझसे कुछ नहीं बोल सका । मैने चाय खरीदकर दी । सड़क पर जाने आनेवाले लोगों को बुलाकर "उन सब को भी चाय खरीदकर दो" – इस तरह बोले । इस तरह 10 रुपये हिसाब आने तक चाय खरीद देने को कहा । बाद में, "बस, तुझे एक और मुझे एक खरीद लाओ" – इस तरह कहने पर मैं भी खरीद लाया और दोनों चाय पिये । इन सब को देखते रहनेवाले दूकानदार, "यह एक कार्यकारी पागल है" – इस तरह कहने पर महान बहुत गुस्से में आकर पत्थर लेकर दूकान पर फेंके और दूकान की चीजों को घसीटकर फाड़ डाले ।

दूकानदार इन्हें मार पीटने के लिए आने पर मैंने रोका और कहा – तुम्हारी चीज़ों का दाम कितने हो, उसे मैं दे दूँगा – इस प्रकार बताकर मैंने रुपये दे दिया ।

मुझे उपदेश दिये

तदनंतर पेरियनायकी अम्मन (देवी) मंदिर के पासवाले तालाब गये । तालाब के अंदर कुछ देर तक मौन होकर बैठे थे । बाद में मुझे देखकर, "क्या मुझपर तुम्हें भरोसा है?" – इस प्रकार पूछे । मैं ने कहा – "हाँ भरोसा है". वे बोले – "मैं जो कुछ कहूँगा, उन सब को कर सकोगे?" मैं ने भी कहा – "हाँ, करूँगा । वे बोले – "इस वचन से क्या तुम नहीं बदलोगे?" मैं बोला – "नहीं बदलूँगा ।" वे बोले – "मेरे साथ आओ" – इस प्रकार कहते हुए मुझे मेरे नाम वाले वेणुगोपाल विनायक (गणेश) मंदिर को ले चले ।

मैं पळनी में रहने पर भी इस छोटे मंदिर को अब तक नहीं देखा था । कोई और जगह में भी इस नाम के विनायक (गणेश) को

नहीं देखा था । उस विनायक (गणेश) मूर्ति के कुछ विवरण बताने पर, पेरियनायकी अम्मन मंदिर ले चले । वहाँ के दक्षिणा मूर्ति को दिखाकर पृथ्वी तथा दक्षिणामूर्ति के संपर्क के बारे में स्पष्टीकरण किए । इसी तरह हर एक को दिखाकर उनके बारे में व्याख्या देते रहे । धूपस्तंभ के पास खड़े होकर उस स्तंभ की स्थिति तथा उसे वहाँ निर्माण करने का उद्देश्य आदि के बारे में कहते रहते थे । बाद में मारियम्मन का मंदिर ले जाकर, मारियम्मन कौन है – इसका विवरण दिए । बाद में बैरव का मंदिर ले जाकर उस मूर्ति के स्थापित करने के उद्देश्य के बारे में स्पष्टीकरण किये ।

दुपहर होते ही वहाँ के एक होटल में दही भात खरीदकर खिलाये । फिर एक बार ले चलकर दुष्ट दैवों को दिखाकर उनसे होनेवाली भलाई तथा बुराइयों के बारे में बताये । इस तरह कई जगहों को मुझे ले चलकर कई व्याख्याओं को बताने पर शाम को 6 बजे हो गया । सात लड्डुओं (मिठाई) को खरीदकर, “बच्चों को इन्हें दे दो” – इस प्रकार बताकर दिये । मैं भी उसे स्वीकार करके घर लौट आया ।

दूसरे दिन सबेरे करीब 8 बजे के समय हमारे सड़क पर होनेवाले बिजली के स्तंभ पर पत्थर से थापकर मेरा नाम न कहकर, “तेलुगु राज्यम्, यहाँ आओ”– इस प्रकार चिल्लाते रहते थे । मैं इस पर ध्यान नहीं दिया । पहले ही इस तरह पत्थर से स्तंभो को थापकर, “हलो” बताने के बाद “आठ सौ, हज़ार, लाख, करोड़” – इस प्रकार कहते हुए और दूसरे वचनों को बताते हुए चलाया करते थे । मैं अप्रतीक्षित घर से बाहर आते ही मुझे देखकर, “हे तेलुगु राजयम्” – इस तरह गुस्से के साथ कोसने पर ही मुझे मालूम हुआ ।

तब से मुझे कोसते समय 'तेलुगु राजयम्' और अच्छे विषयों के बारे में बोलते समय मेरा नाम बताना आदत बन गया ।

बाद में वहाँ से ही मुझे पळनी पहाड़ को ले चले । पहाड़ की हालत के बारे में कहते हुए ले चलते थे । पळनी पहाड़ को एक बार प्रदक्षिण (गिरीवलम) कर चुके । बाद में पहाड़ के पास होनेवाले कोडैक्कानल पहाड़ के निचले भाग ले चले ।

वहाँ एक पेड़ के नीचे दोनों बैठे । कुछ देर तक बातचीत करते रहे । मैं तमिल भाषा में बोलते बोलते वे किसी एक अज्ञात भाषा में बोलते रहे । मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया । वे पूछे – "मेरा कथन समझ में आता है न?" मैंने कहा "कुछ भी नहीं समझ पाया ।" बाद में भी वही अज्ञात भाषा में ही बोलने लगे । न समझ सकने की उस स्थिति में ही उनके भाषण के अर्थ मेरे मन में आ पहुँचते रहते थे । उनकी परीभाषा का अर्थ स्पष्ट होने लगा ।

बाद में भोग मामहर्षि के बारे में सच्ची स्थिति को तमिल में कहने लगे । भोग, मुरुगन (कार्तिकेयन) की मूर्ति को बनाने के लिए क्या क्या पदार्थ लिए – इसके विवरणों को बताकर, भोग, मुरुगन की मुर्ति को करने के कारण कार्य के बारे में कहते रहते थे । अचानक पूछे कि भूख लगता है न? मेरे 'हाँ' कहने पर वे तुरंत जंगल में जाकर, कुछ ही देर में कुछ हरे पत्तों को देकर खाने को कहे । खाकर पानी पिया ।

भूख मिट गया। शरीर में बहुत उत्साह आ गया । फिर सूरज, पळनी मुरुगन की मूर्ति तथा मुरुगन को प्रार्थना करनेवाले लोग – इन सब के संपर्क के बारे में कई तरह के विवरणों को बताया । फिर

लोग, मुरुगन की मूर्ति तथा भोग मामहर्षि के संपर्क के बारे में कई मुख्य विवरण देते रहते थे । इन सब विवरणों को दृश्यों तथा भाव पूर्वक काम में लाकर दिखाये । इस तरह भोग के मुरुगन की मूर्ति बनाने के उद्देश्य को बताकर स्पष्टीकरण किये। आज की स्थिति में भोगजी के अतिमूल्य महा सच्चाई के तत्व छिपा जाकर, लोगों को न मिलने की तरह गायब हो गये।

इस तरह बताते बताते शाम को 4 बजे हो गया । ‘‘जंगल के अंदर जाएँगे’’ – इस प्रकार बोलते हुए मुझे ले चले । वहाँ के कई पौधों और लताओं को अपने हाथ में पकड़कर मुझे सूँघने के लिए बताये । इस तरह एक घंटे तक तरह तरह के पौधों तथा लताओं को सूँघने के बाद बोले कि घर चलें । क्यों और किस लिए इसतरह सूँघने को कहे – मुझे पता नहीं था । उनसे पूछकर विवरण जानने में डर था । घर आकर रातको सोते समय महा आनंद की स्थिति मैंने पायी ।

दूसरे दिन सबेरे आदत के अनुसार 8 बजे होते ही स्तम्भ को पत्थर से थापने की आवाज़ सुनते ही मैं बाहर आया । परीभाषा में पूछे कि चलेंगे । मेरे ‘हाँ’ कहने पर हर एक सड़क पर पैदल ही ले चले । तब कुछ घरों के सामने खड़े होकर परिभाषा में बताये कि घूरकर देख लो । इस तरह कई सड़को पर जाते जाते कुछ घरों को दिखाते रहते थे । बाद में षण्मुख नदी के पास हम दोनों गये । वहाँ एक शांत स्थल में एक पेड़ के नीचे हम दोनों बैठ गये । तब उनसे दिखाये गये हर एक घरवालों के नाम बताकर वे बाले, ‘‘अमुक अमुक व्यक्ति मुझसे विद्याओं को सीखने के लिए प्रार्थना करते हुए मुझको तरह तरह के प्रकार से ललचाकर, विद्याओं को सीख लेने की इच्छा होनेवाले थे । कुछ लोग दवाओं के मूल को सिखा दें

तो, मेरे चाह के अनुसार सुविधाओं के साथ इमारतें बनाकर देंगें । आप वहीं ठहर सकते हैं – इस प्रकार बताये । तब मैं आधा पागल के रूप में अभिनय करता था। जब मैंने कुछ परिवार के भयंकर रोग से पीड़ित होकर वेदना में पड़नेवाले एक व्यकि को दवा दी तब उपचार, दावत, स्वागत तथा प्रशंसा देते थे, लेकिन रोग चंगा होने के बाद एक बार जाने पर भी मुँह मोड़कर देखेंगे । अगली बार जाने पर, 'पागल आ गया मुसीबतें देने के लिए' –इस प्रकार बताकर घर में बच्चे होने पर भी दरवाजे बंद करके कुछ दूर चले जाकर लौटेंगे । कुछ लोग मुझे देखते ही 'पागल आ गया' कहकर दरवाजा वंद करेंगे" । इस तरह उन घरवालों के नाम बताकर मानव के गुणों को भी मुझे समझाया ।

उस समय मैं जहाँ बैठता था, वहाँ एक चींटी की बस्ती थी । पहले मैंने उसे नहीं देखा । बहुत देर तक बैठते रहने से पैर सुधबुध खो गये । उससे पैरों को लंबा करके ठीक किया । उस समय मेरे पैर चींटी की बस्ती में पड़ने से चींटियाँ मेरे पैरों में चढ़कर काटने लगीं । मेरे हाथों से उन चींटियों को रगड़ने से कुछ चींटियाँ मर गयीं । इसे देखने वाली उस चींटी का प्राण मेरे साँस से आकर्षित होकर मेरे शरीर में मिलने को दिखाये । उसे स्पष्ट करते समय, चींटी गुस्से के साथ काटना तथा तुम गुस्से के साथ रगड़ना – इन दोनो भाव एक ही तरह होने से, तुम शरीर के साथ होने से चींटी का प्राण तुम्हारे शरीर में आ पहुँच गया । यह तुम्हारे रक्त में मिलकर, रक्त अम्ल के रूप में बदलते समय उसके साथ मिल हो जाता है । अम्ल शुक्ल के रूप में बदलने पर वीर्य में मिल जाता है । वीर्य में तुम्हारी ताकत की सभी शक्ति होने से चींटी के प्राण में, चींटी के शरीर के सार के सभी ताकत प्राण के आकर्षण से आत्मा बनकर घनिष्ट

रहनेवाले परमाणु शिशुएँ, बच्चे होकर पैदा होनेवाले परमाणु शिशुएँ बनकर उगेंगे – इस प्रकार बताए ।

बाद में चींटी की बस्ती में ही बिठाकर आँखो को बंद करके मेरे शरीर के अंदर क्या होता रहता है – इसे देखने के लिए कहा । उसके कथन के अनुसार मैं बैठा था । कुछ ही देर पर अपने अंदर होनेवाली घटनाओं के बारे में मैं समझने लगा । उस समय बस्ती में होनेवाली चींटियाँ मेरे शरीर में दौड़ने लगीं । जब चींटियाँ मेरे शरीर पर रेंगती थीं तब मेरे शरीर के भाव कैसे संचार करते हैं, मुझे चींटियों के काटते समय किस तरह मेरे हाथ अज्ञात में ही चींटियों को रगड़कर दबाते हैं तथा दबायेवाले चींटी के प्राण मेरे सांस के आकर्षण में कैसे मिलते हैं – इन सब को समझाया । शरीर में रेंगनेवाली दूसरी चींटियाँ अपने भाव के शब्द बनाकर एक दूसरे को समझाकर कार्यवाही करने को भी समझाये ।

इसी तरह और कुछ घटनाओं को दृश्य तथा भावों के द्वारा उदय देकर भी समझाकर दिखाये । और कुछ अद्‌भुतों को भी करके दिखाये । बाद में “देर हो गया । घर में तुम्हारी पत्नी कोसती होगी । चले जाएँ ” – इस प्रकार बताये । घर की तरफ़ आते वक्त, “मैं पागल की तरह अभिनय करूँगा । यदी तुम्हें इसके पहले समझायी सच्चाइयों, अब जाननेवाली सच्चाइयों और भविष्य में जाननेवाली सच्चाइयों के बारे में किसी से, किस कारण से भी बताएँ तो तुम्हें भी पागल बनाकर सड़क सड़क पर घूमने की तरह बनाकर, लोग पत्थर से तुम्हें मारेंगे ।” – इस प्रकार चेतावनी देकर मुझे घर जाने के लिए बताए । उसके साथ “कल रात को 12 बजे आकर बुलाऊँगा । तुम्हें जल्दी आना चाहिए ।” – इस प्रकार बताकर चले गये । मैं सीधे घर चला । वे कोई और तरफ़ चले गये । जब मैं शहर के अंदर आया तब उनके साथ मेरे जाने को

देखनेवाले मित्र, “काम के लिए भी न जाकर, दूकान में भी न ध्यान रखकर, सास के मरने की चिंता भी न होकर क्यों इस तरह करते हो?” – इस प्रकार बताकर मुझे सलाह देने लगे । “मैं छुट्टि में हूँ” – इस प्रकार बताकर घर जाने पर मेरी ससुर रोती हुई कुछ बिलखने लगीं ।

गुरुनाथ के रूप में स्वीकार करना

दूसरे दिन रात को अपने कहने अनुसार आकर आदत की तरह स्तंभ को पत्थर से थापने लगे । मैं घर से बाहर आया । मुझे पळनी में होनेवाले वैयापुरी तालाब को ले चले । उस तालाब में एक कुआँ था । उस कुएँ में गिरकर कई लोग मर गये थे । यह मुझे मालूम था । उस कुएँ के पास रात के समय जानेवाले भयभीत होकर मर चुके थे – इस प्रकार कई लोगों का कथन भी सुनाया था । उस कुएँ में एक बडे पत्थर को ले जाकर डालने को बताकर वे कुछ दूर पर जाकर खड़े रहे । मुझे भय आ गया । मैं पहले ही भयभीत होनेवाले स्वभाव का था । इसतरह बताने पर भ्रम के साथ डरता हुआ खड़ा था । “मेरे वचन पालन करूँगा इस प्रकार वादा करके अब क्यों हिचकते हो” – इस प्रकार बताकर चिल्लाने लगे । किसी तरह संभालकर उससे दिखानेवाले पत्थर को लेकर चलते चलते मेरे हाथ पैर गिड़गिड़ाने लगे । भ्रम में पड़कर खड़ा रहा था । मेरे सामने एक सफ़ेद आकार दीख पड़ा । उतना ही था, मेरे हाथ से, हाथ के कंपन से पत्थर नीचे गिर गया । मेरे पीछे कुछ दूर पर गुरुनाथ जी खड़े थे । मेरे देखने वाला सफ़ेद आकार गुरुजी के साथ द्वंदव युद्ध करने को देखा । “मुझे बचाओ, मुझे बचाओ” – इसतरह धीमे स्वर में वे चिल्लाये । मैं उनके पास गया । “मार डालूँगा – इस प्रकार कहो” –

इस तरह बताये । मैं भी बताया । अचानक वह आकार गायब हो गया ।

गुरुदेवजी मुझे देखकर ज़ोर से हँसने लगे । हँसने को बंद करके, “अब कैसे उस पैशाच को भगाया? कुएँ में पत्थर डालने को कहने पर मुझे धोखा दिया” – इस प्रकार पूछकर “ठीक है, अब किसी और जगह जाएँ ” – कहते हुए तालाब के किनारे पर ही चल रहे थे । तब किनारे के नीचे से किसी स्त्री की चिल्लाइट सुनाई पड़ी । वहीं खड़े होकर उस आवाज़ को घूरकर सुनने को कहा । वहाँ किसी एक समय में आत्महत्था करनेवाली स्त्री के शरीर का खून वहाँ के धरती पर घुस जाकर दाखिल होने से, उस स्त्री का प्राणात्मा वहाँ घूमता रहता है – इस प्रकार बताये ।

आत्महत्या करने वाले प्राणात्मा की गति

उस औरत की भावतरंगें एकत्रित होकर एक आकार बनकर दीख पड़ा । उस स्त्री की चिल्लाने की शब्दतरंगें कैसे मुझे पहुँचकर, उन शब्दतरंगों को मैं कैसे समझ लेता हूँ – इसे दृश्य बनकर दिखाये । आत्महत्या करनेवाले प्राणात्मा, प्राण के आकर्षण से परमाणुशिशुओं के विकास में घटाव होकर रहने की स्थिति को दिखाया । यानी जिस तरह मधुमक्खियाँ भीड़ भीड़ बनकर घनिष्ठ होकर रहते हैं उसी तरह ।

इसी तरह पूर्णत्व पानेवाले प्राणात्मा में अर्थात् 60 आयु तक जीवित होकर मरनेवाले – शरीर से विलग होनेवाले प्राणात्मा में, प्राण के आकर्षण से परमाणुशिशुओं के रूप में पूर्ण रूप से विकसित होकर रहने को दिखाकर, ये प्राणात्माएँ अगले जन्म में मानव के रूप लेने की योग्यता पानेवाले हैं – इस प्रकार समझाये ।

आत्महत्था करनेवाले प्राणात्माएँ, यानी आत्महत्या करनेवाले इस तरह के प्राणात्माओं को यदी परीवार की जटिलताओं से विरक्त होनेवाली स्त्रियाँ अप्रतीक्षित देखकर भयभीत हों तो भय के आकर्षण से, वह आत्मा शरीर के अंदर जाकर, रक्त में मिलकर, अम्ल बनते समय, अम्ल शुक्ल बनकर, वह शुक्ल में मिल जाता है ।

इस तरह मिलनेवाले प्राणात्मा के अपूर्ण, आत्महत्या के भाव के साथ होनेवाले परमाणुशिशुएँ जिस औरत के शरीर पर मिश्रित हो जाते हैं, वे औरत यदी गर्भवती हों तो गर्भपात या अकालिक प्रसव हो जाएगा । अकसर आत्महत्या करने के भाव का ख्याल होकर उस औरत के शरीर को क्षीणित कर देता है ।

इस तरह आत्महत्या करनेवाले प्राणात्माएँ विरक्त होनेवाली औरतों के शरीर पर घुसकर, घुसनेवाले शरीर को क्षीणित करने के साथ घुसनेवाला प्राणात्मा भी मानव जन्म के लिए नहीं आ सकता । ऊपर कहनेवाली स्थितियों को मेरे गुरुनाथ जी मुझे दृश्यों तथा भावपूर्वक दिखाकर अनुग्रह किये ।

शाप से होनेवाली स्थिति

माता और पिता कई पेशों को करके, कष्ट झेलकर, कमाकर धन जमा करने पर भी अपने बच्चों को बिना कष्टों से श्रेष्ट तथा विशेष रूप में जीवित होना चाहिए । उनका भविष्य हराभरा होना चाहिए – इस भाव की इच्छा से विचार करके, सुविधा तथा मौकों को श्रम झेलकर, करके देकर, कई दैवों को प्रार्थना करके मेरे बच्चों को अच्छी तरह रहना चाहिए – इस प्रकार ख़याल रखनेवाले माता व पिता की इच्छा में विकसित करनेवाले अच्छे भावों को, उन

बच्चों को अच्छे भावों को प्राप्त करने का मौका समझकर, माता और पिता को प्रणाम करके, अपने अच्छे भाव तथा विचारों को आदत में लाने के बदले, दैवों को दक्षिणा देकर, वह दैव देखभाल करेगा – (इस विचार से) दैव पर भरोसा रखकर रहते हैं । लेकिन बच्चे अपने अपने भाव के अनुसार दूस्रों के साथ शामिल होने पर संदर्भवश होनेवाले भय से, सांस में लेनेवाली बुरी भावतरंगें बच्चों के भावों में मिश्रित होकर उनके अच्छे गुण छिपा जाकर, बुरी राह पर कार्य करने लगते हैं। माता और पिता भलाइयों के बारे में बताने पर भी न सुनकर बुरे भावों से प्रेरित होकर उनके खिलाफ़ हो जाते समय, वेदना होकर दैवों को प्रार्थना करके – "इस तरह काम करता है – पापी" – इस प्रकार विचार करके शाप देते हैं ।

इस तरह अनजान में ही वेदना की भावतंरगों की क्रियाएँ प्राणात्मा में बढ़कर, बुढ़ापा होकर, मरकर, शरीर से विलग होनेवाला प्राणात्मा पुनर्जन्म में मानव के रूप में नहीं पैदा हो सकता । आत्मा कैसे क्षीणित होता है और इसी तरह वेदना लेने वाले मानव के आकर्षण में इस प्राणात्मा के जाने पर, उस मानव को भी वेदना में डालकर मृत्यु की ओर ले जाता है – ये स्थितियों को और बच्चों को उनसे देनेवाले शाप से वे बच्चे जीवन में कैसे क्षीणित हो जाते हैं – इन्हें दृश्य के रूप में समझाया ।

सप्त ऋषि मंडलों को दिखाना

"दुनिया के सभी धर्म, अपने अपने धर्म मार्ग के रीतिरिवाजों के अनुसार प्रार्थना करके, दैव के पूजापाठ करके, उपदेश करनेवाले नैतिकताओं तथा विविध तहज़ीबों को अनुसरण करके जीवित करने

वाले हर एक मानव अपने प्रार्थना करनेवाले दैव अपनी रक्षा करेंगे – इस भरोसा के साथ सभी मार्गों पर भलाइयों को ही करने की विचार दुनिया के सभी लोग करते हैं । लेकिन दृश्यों द्वारा तुम्हें समझाने के अनुसार हर एक को अज्ञात से ही संदर्भवश बुरी भावतरंगें मानव के शरीरों में किसतरह जमा हो जाते हैं – इसे ही तुम्हें समझाया"– इस तरह बोले । "उनमें तुम भी एक हो । बुरी भावनाओं से तुम अपनी रक्षा कैसे करोगे?" – यह प्रश्न चिन्ह के साथ अपनी कथन को बंद कर दिये । कुछ देर के बाद मुझे आकाश की ओर देखने के लिए बताए । अनेक नक्षत्रों से बाहर प्रकट करने वाली प्रकाशमान लहरों को दिखाकर उन स्थितियों के बारे में समझाये । बाद में सप्तऋषि मंड़लों के आकर्षण में छोटे छोटे बिंदु बनकर परिक्रमा करनेवाली रंग भिरंगी गोलियाँ थीं । "ये सब क्या हैं" – इस प्रकार पूछे । "मुझे नहीं मालूम" – इस प्रकार कहने पर, दूस्रों के साथ पागल के समान बोलने की तरह मुझे कुछ न समझनेवाली स्थिति में बोलते हुए मुझे ज़ोर से मारा । मैं दंग रह गया । बाद में उस स्थिति के बारे में समझाये । "वे सब सप्त ऋषि मड़ल से प्रकट करनेवाली प्रकाशमान शक्ति को पृथ्वी पर मानव बनकर जीवित होते समय, अपने तप के फल से और इंद्रियों के भाव से, उस प्रकाशमान शक्ति को अपने सांसों से आकर्षित करके, रक्त के नलों में इकट्ठा करके, अपने तप की ताकत से, सप्त ऋषि मंड़लों की प्रकाशमान शक्तियों की ऊर्जाओं को, अपने शरीर में जमा कर लेने से, मानव को जानवर के रूप में बदल सकनेवाली बुरी भावतरंगों को हटाकर, अपने आप को जान लेने वाले ज्ञानीलोग बनकर, ज्ञान के मार्ग श्रृंखला पर सच्चे ज्ञानी बनकर, उनके प्राण में आत्मा बनकर चलनेवाले परमाणुशिशुएँ, प्रकाश के रूप में बदलकर प्राण के साथ प्राण के

रूप में मिलकर, प्रकाश के भाव के साथ जड़ बनकर चमकनेवाले नक्षत्रों को ही तुमने देखा" – इस प्रकार कहे ।

(सूचना : प्राण के आकर्षण में आत्मा होने वाले परमाणुशिशुएँ हर एक शरीर में जमा कर लेने वाले भावों के अनुसार परमाणुशिशुएँ बदलते रहने से, बदलने वाले परमाणु शिशुओं के अनुसार मानव का शरीर या जानवर का शरीर पाता है ।)

विजली (संपा) को देखने को कहा

कुछ देर पहाड़ों, जंग़लों तथा समतलों को बार बार मुड़कर देखने को कहा । मैं भी मुड़ते हुए देखता रहता था । तब हलके काले रंग के घनत्व के अनुसार हलकी रोशनी, प्रकाशमान ज्योति इस तरह रंग भिरंगे छोटे छोटे बिंदुओं के समान दीख पड़े । उनके विवरणों का स्पष्ट रूप से उपदेश करते थे । वे बोले, "जब बिजली चमकता है तब आँखों को मत बंद करो" । मुझे भय आ गया । मैंने कहा "यदी आँखों को नहीं बंद करें तो दृष्टी खो जाएगी तो क्या करना है?" उतना ही था । वे पागल आदमी की तरह मुझे न समझनेवाली भाषा में बोलकर, बाद में मेरे भावों में जानने की तरह समझाये । "मेरे कहने के अनुसार काम करूँगा – इस प्रकार बताए । अब क्यों हिचकते हो?" – इस तरह पूछकर, "क्या तुम अपने आप देखते हो? देखने के लिए बतानेवाला मैं हूँ न?" – इस प्रकार बोले । थोड़ी देर समतल को देखता रहता था । तब वे बोले, "इन मानव के शरीरों से विलग होनेवाले प्राणात्माएँ ही छोटी छोटी बिंदुओं के रूप में हैं ।" इस तरह बोलकर कुछ प्रकाशमान बिंदुओं को दिखाया । " 'पर काय प्रवेश' (अपने शरीर छोड़कर दूस्रे जानवर या मानव के शरीर में घुसना) करके कई क्रियाओं को करके दिखाकर अंत में

'परकाय प्रवेश' करने की शक्ति खोनेवाले प्राणात्माएँ काली बिंदु बनकर रहते हैं । विभिन्न मंत्र तंत्रों को करके दिखानेवाले प्राणात्माएँ भी काली बिंदु बनते हैं । इन सभी प्राणात्माओं में प्राण के आकर्षण से आत्मा बनने वाले परमाणुशिशुएँ दीख पड़ते हैं । कोई और लोग किसी प्रकार की प्रत्याशा के बिना, विविध मुसीबतें आने पर भी उन्हें झेलकर, अच्छे कामों को करते रहकर, "दैव ही सहायक हैं" – इस स्थिति में विकसित होनेवाले प्राणात्माएँ हलके लाल रंग की बिंदु बनकर दीख पड़ते हैं " – इस प्रकार बताकर समतल की ओर देखते रहने के लिए कहे । उस समय अप्रतीक्ष रूप में बिजली चम चमाकर गिरने लगी । उस बिजली में फंसनेवाले रंगबिरंगे प्राणात्माओं के परमाणु शिशुएँ निकम्मा हो गये । लेकिन प्राण नहीं मिट जाते ।

प्रकाशमान होनेवाले प्राणात्माएँ बिजली के विकिरण में फँसाने पर भी किसी भी बाधा न होकर चमचमाते रहे । इस तरह के प्रकाशमान प्राणात्माएँ पुनर्जन्म के बिना पृथ्वी की आकर्षण से परिक्रमा करते हुए अपने को विकसित करने की ताकत पानेवाले हो जाते हैं । समय चलते चलते वे आकाश जा पहुँचते हैं ।

इस तरह के प्रकाशमान प्राणात्माओं से बाहर निकलनेवाले उज्जवल परमाणुएँ यदि संदर्भवश से दूस्रे एक मानव के भाव के आकर्षण में मिलें तो उस मानव की ताकत बढ़कर ज्ञान के मार्गश्रृंखला में अपने आप को जानकर सच्चा ज्ञानी बन जाता है । इस तरह हो जाना दुनिया में किसी न किसी एक व्यक्ती को ही मिल जाता है । – इसे समझाकर फिर बिजली से निकम्मा हो जानेवाले प्राणात्माओं के बारे में बताने लगे । बिजली से हमला किये जानेवाले प्राणात्माओं के परमाणुशिशुओं के निकम्मा होनेवाले सार,

प्राण में जोड़ने वाले आत्मा बन जाते हैं । वह पुनः मानव का शरीर पाने में असमर्थ हो जाता है । इस तरह के प्राणात्माएँ जब पृथ्वी के वनस्पति वर्ग में पड़ते हैं तब प्राण के दड़कन से निकम्मा हो जानेवाले आत्माएँ फिर परमाणु गर्भों के रूपधारण करके, नये प्रकार के कीड़े मकोड़े के आकार कैसे पाते हैं – इसे समझाये ।

दूसरे दिन सूरज को देखते रहने को बताकर, उससे प्रकट होनेवाली प्रकाशमान लहरों के फैलाने को देखने के लिए बताए । उन लहरों में मिश्रित एक परमाणु को अलग करके दिखाकर, वह जिस तरह परमाणु घड़ी की तरह तड़पता रहता है – इसे मेरे अंदर समझाया । बाद में उसमें होनेवाले गरम चुंबकीय सूक्ष्म परमाणु तथा सूक्ष्म ध्वनी वर्धक यंत्र (Mike) की तरह आकर्षित करने की ताकत होनेवाले चुंबकीय सूक्ष्म परमाणु के स्वभाव को समझाकर, वह आकाश में शरीरों को उत्पन्न करनेवाले प्राणात्मा के रूप लेकर, हमारे पृथ्वी पर आ पहुँचकर, कीड़े का शरीर पाकर मानव तक कैसे विकास पाता है तथा मानव के रूप में पूर्णत्व प्राप्त करने के बाद, मानव के विकास से प्राण कैसे प्रकाश के रूप में बदलकर सप्तऋषि मंडल बन गये । – इसे दृश्य के रूप में, मेरे अंदर चेतना में समझाये और अपने कथन से उपदेशित करके कोड़ैक्कानल पहाड़ी शृंखला को मुझे ले गये ।

वनस्पति वर्ग के सार लेने की रीति

कोड़ैक्कानल पहाड़ की तलहटी के जंगल ले जाकर, वहाँ के पौधों और लताओं को पुनः अपने हाथों में पकड़कर, मुझे सूंघने के लिए कहे । इस तरह सैकड़ों पौधों व लताओं को सूंधने के बाद उन विवरणों को बताकर, पौधे व लताएँ किसतरह हवा से अपने को जो

सार चाहिए उन्हें अपने अंदर लेकर, कैसे अपने आप उगाते हैं, उससे बाहर निकलनेवाले सार किस तरह दूस्रों के साथ मिल जाते हैं – इन विवरणों को स्पष्ट करके, “तुम भी वनस्पति वर्ग से प्रकट होनेवाले सारों को अलग अलग करके, आकर्षित करके, एक के साथ दूस्रे को मिलाओ – इस तरह बताए । मुझे नहीं मालूम – इसे कहने को मैं डरता था । मैं मौन होकर खड़ा रहा । वे बोले” “मैं पूछता हूँ । तुम मौन रहते हो ।” – इसे बताकर ज़ोर से हँसने लगे । और क्या क्या कहेंगे – मैं इसी भय में था । कुछ देर बाद एक 25 बीड़िवाला गणेश बीड़ि के गट्ठे को एक साथ धकाकर मेरे मुँह में रखकर चूसने को बताकर मेरे कान में कुछ बातें करते रहते थे । तब वनस्पतियों के गंध तथा सारों की ताकत को मैं सूँघ सका । उन सारे बीड़ियों के खत्म हो जाने पर थोडी देर ध्मान में बिठाये । उस समय मेरे भावों में दृश्य रूप से कई सच्चाइयों को समझाते रहते थे । उसके बाद एक ‘पासिंग शो’ सिगार के गट्ठे (10) को एक साथ धकाकर पहले की तरह रखकर कान में कुछ बातें करते रहते थे । सिगार खत्म होने के बाद कुछ स्थितियों को समझाकर एक बीड़ी को धकाकर, हवा में होनेवाली जड़ी–बूटियों के सार को अलग अलग करके आकर्षित करके कठिन रोग से पीड़ित लोगों पर किसतरह चलाकर उन के रोगों को हटाना है – इन स्थितियों को समझाये । बाद में हम रात भर जंगल में ही थे ।

दूस्रे दिन आनैमलै के पहाड़ पर ले चले । इस तरह पहाडों और जंगलों को ले जाकर अनेक सच्चाइयों की स्थितियों को भाव तथा प्रदर्शन से समझाये ।

केदारनाथ में ध्यान

हिमालय पहाड़ में केदारनाथ ले चलकर, अपने कपड़ों को उतारकर एक कौपीन के साथ शरीर को भूलकर ध्यान करने को कहा । कैसे शरीर भूल जाऊँ? पोशाक होने पर भी सर्दी नहीं झेल सका । पोशाक उतारने पर मेरा हृदय ज़ोर से धड़कने लगा । उतना ही था मैं बोल नहीं सका । मेरी हालत देखकर ज़ोर से हँसने लगे । थोड़ी ही देर पर मेरी हालत गिड़गिड़ाने लगी । बाद में मेरे कान में कुछ बताकर ध्यान करने के लिए बताए । उसके बाद मेरे शरीर में गरमी होने लगी । उस समय महाआनंद तथा महाआनंद की सच्ची स्थितियों को समझाते रहते थे । ध्यान से छूट जाने पर मेरी हालत में सर्दी नहीं झेल सका । बाद में मुझे पळनी वापस ले आये ।

पळनी में बस्सों को रोकना

पळनी आने के बाद बस्सों को रोकने को कहा । सड़क पर संकुचित स्थानों पर बैठकर कुछ लिखने को कहा । भ्रम में पड़कर खड़े हो जाने पर मेरे कुरते को फाड़कर, “मेरे वचन पालन करने की वादा की है न, अब करो” – इस तरह बोले । इस प्रकार कुछ ही दिनों में मुझे देखनेवाले ‘मैं पागल आदमी बन गया’ – इस प्रकार सोचने की तरह कर दिये । मेरे परिवार में भी मुझे देखते ही घृणा, मित्रों के बीच में अवहेलना हो गयी । इससे मेरे मन में बहुत वेदना होकर, ‘जिऊँगा कि मरूँगा’ – यह स्थिति हो गयी । किसी तरह संभालकर गुरुनाथ जी से मेरी हालत बताकर पळनी के पास सात्वीं मील पर पाप्पम्पट्टि नामक गाँव में रहनेवाले मेरे मित्र राइसमिल श्री. रामसामी नायुडु के घर जाकर दस दिन वहाँ ठहरने के बाद

आवूँगा – इस तरह बोल उठा । उनकी अनुमति पाकर पाप्पम्पट्टी जाकर श्री रामसामी नायुडु के राइस मिल में ठहरा । तब रामसामी नायुडु ने कहा कि परसों पहाड़ की तलहटी में होनेवाले मेरे घर जाकर वहाँ दस दिन ठहरेंगे । मैं भी मान लिया ।

कैंसर (Cancer) रोग को स्वस्थ करना

दूसरे दिन सबेरे महालिंगम नामक एक ज्योतिश रामसामी नायुडु को देखने आये । बातचीत करते रहते समय महालिंगम बोले, "मेरे बड़े भाई के पुत्र कैंसर रोग से पीड़ित है । उसे चेन्नै ले जाने के लिए डाक्टर लोग सलाह दिये हैं ।" तब रामसामी नायुडु मुझे देखकर बताये "अपने गुरुदेवजी के कहने के अनुसार इस लड़के को चंगा करने की कोशिश करो ।"

थोड़ी देर सोचने के बाद मैं बोला – "मुझे नहीं मालूम कि इस रोग का इलाज क्या है । मैं कैसे दवा दूँ?" रामसामी नायुडु छोड़नेवाले नहीं थे । "गुरुनाथ जी को स्मरण करके थोड़ी सी विभूति देकर दर्द को कम करने की कोशिश करो ।" – इस तरह बार बार कहने पर मैं महालिंगम के घर जाकर मुरुगन दैव के चित्र के सामने दूध, फल आदि रखकर दीप आराधना करके ध्यान करने के बाद उस लड़के का पेट दर्द कम होना चाहिए – इस तरह विचार करते हुए, विभूति को दिया । लेकिन दर्द कम होने के बदले ज्यादा होकर वह तड़पने लगा । मल और रक्त के साथ विरेचन होने लगा । इसे देखकर महालिंगम बहुत घबराने लगे । "अब क्या होगा" – इस तरह सोचकर आसपास के लोग मुझे न केवल घूरकर देखे बल्की कोसने भी लगे ।

थोड़ी देर में गुरुनाथजी मेरे सामने प्रदर्शन करके बताए, "मैंने दवा दी है । अभी तीन घटिके में उस लड़के के पेट में होनेवाले शोथ बाहर आ जाएगा । उसे तुम अपने हाथ से अन्न को पानी में पीसकर, उस द्रव को देते रहो । जब तक वह शोथ बाहर आ जाएगा, तब तक देते रहो ।" लेकिन यह विवरण देकर अन्न और पानी माँगने पर कोई भी न सुने । इसके बदले मुझ पर घृणा तथा गुस्से के साथ ही बोले । महालिंगम तो भय के मारे बिलखने लगे । उस समय महालिंगम के 14 आयु होनेवाले बेटा तथा 11 आयु होनेवाली बेटी के सामने गुरु जी प्रत्यक्ष होकर अन्न को पीसकर पानी में मिलाकर देने पर शोथ बाहर आकर वह चगां हो जाएगा – इस प्रकार कहने पर सब लोग शांत हो गये और उन दोनों के बातों को सुन रहे थे । तीन घटिके बीत गये ।

गुरुनाथ जी के कथन के अनुसार शोथ बाहर आकर लड़के के पेटदर्द भी खत्म हो गया । लेकिन आठ दिन के लिए महालिंगम के घर में ही ठहरकर मेरे हाथ से अन्न को पीसकर पानी में मिलाकर दो घंटों में एक बार देने के लिए गुरुनाथ जी ने बताया । उसी तरह मैं करता रहता था । अगला दिन वह लड़का चंगा होकर सकुशल बन गया । इसे देखनेवाले गाँव के लोग मुझे घेरकर, "मुझे शरीर में दर्द, सिर्दर्द, ज्वर आदि कहकर विभूति माँगने लगे । उस समय गाँव भर ड़ेंगु ज्वर फैल रहा था । विभूति पानेवाले सभी लोग दूस्रे दिन आकर बोले – 'मुझे च्वर चंगा हो गया' – इस प्रकार बताकर अपने साथ कोई और लोगों को ले आने लगे । उससमय श्री रामसामी नायुडु मुझे देखने आये । यहाँ के घटनाओं को सुनकर आश्चर्य चकित हो गये । "मैं बगीचे में एक कुटीर बनाकर आवूँगा । आप वहाँ ठहरिए ।" – इस प्रकार बताकर, आशीर्वाद लेकर चले

गये । इस तरह 10 दिन भीत गये । लड़का भी सकुशल था । लोगों के आना भी बढ़ता जा रहा था ।

अचानक गुरुदेवजी मेरे सामने प्रत्यक्ष होकर बोले कि इसी क्षण रवाना होकर पळनी आ जा । मैं दंग रह गया । मुझे दर्शन देने की तरह महालिंगम के बच्चों को भी दर्शन करके, "तुरंत पळनी को रवाना होने के लिए गरुदेवजी कहते हैं ।" – इस प्रकार दोनों के बताने पर मैं भी तैयार हो गया । लेकिन मुझे देखने के लिए आनेवाली भीड़ मुझे जाने न देने की स्थिति थी । मैं किसी तरह संभालकर पळनी आ गया गुरुदेवजी को देखने के लिए । वे आदत के अनुसार रात को 2 बजे के समय "गंगा बैंडिंग" दूकान के चबूतरे पर बैठा करते थे । वे (गंगा बैंडिंग दूकान के लोग) भी गुरुजी से विभिन्न विद्याओं को सीखने के लिए तथा बैद्य के तरीकों जानने के प्रयत्न करनेवाले थे । इनकी तरह बहुत से लोग प्रयत्न किये थे । इसलिए "गंगा बैंडिंग" दूकानदार से मैंने पूछा कि गरुदेवजी कहाँ हैं । उस समय गुरुदेवजी से विद्या और वैद्य के विवरणों को जानने के उद्देश्य से वहाँ आनेवाले चार, पाँच आदमी वहाँ थे । वे सब "गरुदेवजी कहाँ हैं?" – इस प्रकार मेरे पूछने को सुनकर हँसने लगे । वे बोले – "तुमही ईश्वर भदूर् को तंग करते हुए कुछ न कुछ करते रहते हो" – इस प्रकार बताकर तुम्हें "तेलुगु राज्यम्" कहते हुए गालियाँ देते हुए पळनी में सड़क सड़क पर 10 दिनों से भटकते रहनेवाले, आज सबेरे एक हाथ और पैर में अंगघात होकर यहाँ गिर पड़े थे; हम (गुरुदेवजी को) उठाकर अस्पताल में भर्ति करके आते हैं" । इस तरह कहकर, "और भी वे (गुरुदेवजी) अस्पताल में बड़े शोर मचाकर लुठते हुए जाकर, वहाँ होनेवाले पलंगों को घसीट डाल रहे थे । वहाँ के रोगियाँ डरकर बाहर आ गये । डाक्टर लोग

आकर, 'इन्हें (गुरुदेव को) उठा चलिए' – इस तरह हमसे शोर मचाये । हम उन्हें छोड़कर आ गये । उसके बारे में ही (हम) बोल रहे थे । आप आ गये" – इस प्रकार बताये ।

मारपीट के लिए आनेवाले आशीर्वाद पाना

अस्पताल जाकर देखा । वे अपने बिस्तर पर नहीं थे । उनके बारे में पूछने पर वहाँ के लोग विवरण दिये कि वे शवगृह के पास एक अलग कुटीर में हैं । वहाँ जाकर उन्हें देखते ही उन्होंने पूछा कि क्यों इतनी देर हुई । वे बोले – "वहाँ के कुटीर में होनेवाले बाँस के विभाजनों को अलग करके लाओ ।" जब मैं दंग रहकर खड़ा था तब "मेरे वचन को पालन करने को स्वीकार किया था । अब मेरे कहने के अनुसार करो ।" उनके कहने के अनुसार मैं विभाजनों को अलग करके लाया । "उनमें आग लगाकर जलाओ" – इस प्रकार बताये । मैं तो दंग रहकर क्या करना है – इसे न जानकर खड़ा था । वे ज़ोर से कोसने लगे । "आग लगाओ" – उनके कहने के अनुसार आग लगाने पर डाक्टर और अन्य लोग दौड़कर आकर मुझे पकड़कर, "पुलीस के हाथ सौंप दीजिए" – इस प्रकार बताये । इसे देखनेवाले गरुदेवजी और ज़ोर से चिल्लाने लगे । लेकिन उनकी भाषा किसी को भी नहीं मालूम था । तुरंत आग पूरी तरह बुझकर, आग न लगाने के समान पहली स्थिति की तरह विभाजन बनते रहे ।

न दौड़नेवाले आट्टो को दौड़ाना

उनके जाने के बाद, "तुम जाकर अपने मित्र के आट्टो को बुला लाओ" – इसतरह बोले । वह मित्र एक मुसलमान था । उनसे आट्टो लाने के लिए कहने पर वे बोले – "आट्टो को मरम्मत करना है ।

यदी तुम्हारे गुरुदेवजी तुम्हें शक्ति दीं तो उस शक्ति द्वारा इसे दौड़ाओ । मुझे एक पैसा भी नहीं चाहिए । तुम जहाँ आने को कहे वहाँ आवूँगा ।" इसके अलावा वे बताये – "तुम्हें क्यों यह बुद्धि? पागल आदमी के साथ होकर पागलपन में बाल बच्चों को सड़क पर छोड़कर घूमते फिरते हो ।" –इस तरह हँसी उड़ाने लगे । मैं भी उन्हें नहीं छोड़ा । "चलाकर देखो" – मैंने कहा । वे बोले "मरम्मत के लिए पैसे न होकर दो दिन से खड़ा रहता हूँ । कैसे चला सकता हूँ ।" मैं अपनी बात पर अटल रहा । "चलाकर देखिए" – मेरे बार बार कहने पर चलाने की काशिश की । कुछ ही देर में आट्टो दौड़ने लगा । उतना ही था, वे कुछ भी न बोल उठे । "तुम जहाँ चाहे वहाँ ले चलूँगा । पेट्रोल के लिए भी पैसे नहीं चाहिए।" – इस तरह बताकर मेरे साथ आकर गुरुदेवजी को अस्पताल से लेकर पाप्पम्पट्टी गये । वहाँ रामसामी नायुडु के राइस मील पर उतरकर आट्टो को पळनी भेज दिया ।

ऐवर पहाड़ जाना

गुरुदेवजी बोले, ऐवर् पहाड़ ले चलो । रामसामी नायुडु के बगीचे में ईख काटकर उन्हें शक्कर बनाने का कार्य हो रहा था । इसलिए रामसामी नायुडु गुरुदेवजी को ईख के बगीचे में ले जाकर, "कल ऐवर्पहाड़ चलेंगे । सुविधाओं को करने के लिए नौकरों को वहाँ भेजूँगा।" – इस तरह बताकर हमें ईख के बगीचे ले चले । वहाँ के कुटीर में हम ठहरे । कुटीर के चारों ओर ईख के पत्तों को सुखा दिये थे । रात को लगबग 1 बज होने पर वे कुटीर से लुठते हुए जाकर ईख के पत्तों पर आग लगाये । वे तेज़ी से लुठते हुए कुटीर पर आकर मेरा नाम कहकर "वह आग लगा दिया" – इस

प्रकार चिल्लाने लगे । आग तेज़ी से फैलने लगा । वहाँ के नौकरों के कोई न कोई करने पर भी आग के फैलने को नहीं रोक सका । गुरुदेव तो ज़ोर से हँसे । हम जहाँ खड़े थे वहाँ तक आग फैलता हुआ आता था । थोड़ी ही देर में वहाँ भी आग लग जाने की हालत आयी। इनके हँसना नहीं खत्म हुआ । अन्य लोग चिल्लाये । मुझे क्या करना है – न जानकर मैं खड़ा था । यकायक हँसी को बंद किया गुरुदेव ने । आग भी बुझ गया । चिल्लानेवाले हँसने लगे । वहाँ के लोग अचरज में पड़ गये । दूसरे दिन ऐवर पहाड़ को गुरुदेव जी को एक गाड़ी में ले चले । रामसामी नायुडु हमें पहाड पर छोड़कर पाप्पम्पट्टी लौट गये । मैं और गुरुदेवजी ऐवर पहाड़ में थे । रात को 10 बजे तक कई उपदशों को देने के बाद मुझे लेटकर सोने के लिए बताकर वे भी लेट गये ।

विद्याओं को सीख लो – गुरुजी कहते हैं

तड़के चार बजे के समय हमारे सोनेवाले जगह के कुछ दूर पर पहाड़ की चोटी से गुरुदेवजी की आवाज़ सुनायी पड़ी । “मुझे बचाओ” – इस तरह दो या तीन बार आवाज़ सुनकर मैं जाग उठा । गुरुदेव जी बिस्तर पर नहीं थे । उन की आवाज़ सुनते हुए उनके पास गया । चाँदनी फैली थी । उनके रहने का जगह बहुत फिसलदार था । पकड़ने के लिए वहाँ कुछ भी नहीं था । “मुझे बचाओ” – इस तरह बोलते थे । मैं ने अपनी धोती को उतारकर, मरोड़कर, गुरुदेवजी को पकड़ने के लिए बताकर, मैं एक छोर को पकड़कर, धोती को (मैं ने) फेंका । वह उनके पास तक नहीं पहुँचा । कुछ सोचकर मेरे पैर में एक छोर को बांधकर चट्टान पर लेटकर उनकी ओर फिसलते हुए दूसरे छोर को उन्हें पकड़ने के लिए प्रयत्न

किया । लेकिन वह उनके पास न जाकर, उसके विपरीत दूस्री ओर मुझे फिसलते जाकर मैं नीचे गिरने की स्थिति हो गयी । इसे देखते ही गुरुदेवजी, “मुझे बचाने के लिए आकर तुम कहीं ओर जाते हो ।” – इस प्रकार बोलते हुए ज़ोर से हँसने लगे । थोड़ी देर में बोले – “विद्या दिखाता हूँ, उसे सीख लो ।” मैं तो मुत्यु के संग्राम में धीरे धीरे फिसलता हुआ नीचे जा रहा था । चट्टानों के मेरे शरीर पर रगड़ने से रक्त निकलकर फिसलना ज्यादा हो गया । गुरुदेवजी तो बोले कि मेरे वचन सुनो, विद्या सीख लो । मैं भी “अभि थोडी देर में पहाड की तलहटी जाकर विद्या सीख लूँगा ।” – इस तरह मन में शिथिल होकर धीमी स्वर में मैं बोल रहा था । उस समय गुरुदेवजीने नाना प्रकार के अद्भुत उपदेशों को देते रहते थे । लेकिन उनकी वाणी को ध्यान से सुन नहीं पाया । मैं नीचे गिरकर मर जाऊँगा – यही चिंता ही थी । उनकी बातों को सुन भी न सका । इस हालत में गुरुदेव जी ज़ोर से हँसकर, यकायक उठ खड़े होकर, मेरे पास आकर, हाथ बढ़ाकर मुझे उठाकर समतल ले जाकर बिठाये ।

बाद में “शिव का नृत्य” की तरह बहुत ही अद्भुत ढंग से नाचने लगे । बाद में शांत होकर कई उपदेशों को दिया । बाद में आकाश की ओर देखने के लिए बताये । तब आकाश में परमाणुओं की स्थितियों को दृश्य तथा भावपूर्वक समझाते रहते थे । उस समय सबेरा हुआ । सूरज उदय होने लगा । तब सूरज के विकिरण से परमाणुओं की धड़कन तथा उनके हिलने को दिखाकर अनेक परमाणुओं की ऊर्जाओं की शक्तियाँ, एक के साथ एक मिलकर एक नया परमाणु उत्पन्न होने को समझाकर, इस तरह कई ऊर्जाओं की परमाणु शक्तियों के मिलन से जमा होकर एक पदार्थ बननेवाला घटना ही **“ब्रझा”** हाता है – इसे समाझाकर इसे ही हमारे पूर्वजों ने

“ब्रह्मा सृष्टी करता है”– यह नामधारण किया । – इस प्रकार बोले । बाद में इसी तरह धीरे धीरे कई करोड़ों परमाणुएँ एकत्रित होकर, उगकर सूरज के रूप में विकास पाकर, सूरज में उगनेवाले परमाणुएँ ब्रह्माण्ड में फैलकर ग्रहों, नक्षत्रों तथा प्राणाणुओं के रूपधारण किये । – इस तरह समझाकर, अभी सूरज के आकर्षण के आलिंगन में महाऊर्जाओं को सौंपते हुए, विकसित होते हुए रहने से इसको सर्वों का संचालन करनेवाला – **“सर्वेश्वरा”** – यह नामधारण किया । सूरज से प्रकट होनेवाले कई करोड़ो परमाणुएँ एक बनकर, एक पदार्थ बनकर पृथ्वी के रूप में विकसित होनेवाला **“परम्पोरुळ”** का नाम **“परमेश्वरा”** रखा । सूरज से प्रकट होनेवाली उर्जाओं, परमाणुओं तथा प्राणाणुओं को हमारी पृथ्वी आकर्षित करके लेनेवाली ऊर्जाओं की लहरें हमारी पृथ्वी पर हवा के रूप में फैलकर आत्मा के रूप में होने को **“परमात्मा”** – यह नाम दिया हमारे पुर्वजों ने । – इसे समझाकर परमात्मा के अंदर प्राणाणु के रूप में होकर कीड़े से लेकर मानव तक रूपधारण करनेवाले प्राण को “ईश्वरा” – इसे समझाकर एक प्राणाणु से किन किन प्रकारों से एक शरीर मिट जाकर, शरीर में करनेवाली क्रियाएँ इकट्ठा होकर प्राण में आत्मा के रूप में जमा होकर, जमा होनेवाले कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म में शरीर का आकार कैसे बदल हो जाता है – इसे समझाकर, कई घटनाओं को दृश्य के रूप में दिखाया ।

गुरुदेवजी को पीठ पर लादकर चलना

सबेरे 7.00 बजे हो गया । साधु, संत लोग हमारे ठहरने के स्थान पर आने लगे । फिर गुरुनाथ जी हाथ, पैर में अंगघात होने की तरह लेट गये । बाद में मेरे पीठ पर गुरुदेवजी को लादकर हमारे ठहरनेवाले जगह पर आ पहुँचे । करीब 3 बजकर भोजन ले लिए । कुछ देर के बाद उपदेश देते हुए दृश्य के रूप में कई घटनाओं को दिखाया । तदनंतर गुरुदेवजी ने अपने शरीर छोड़कर प्राणात्मा के रूप में बाहर आकर सूक्ष्म में रहते हुए कई घटनाओं को दिखाया । बाद में वह प्राणात्मा उनके शरीर के अंदर चला गया । गुरुदेवजी उठकर बैठे हुए कई विवरणों को समझाकर उपदेश किये ।

मानव का जीवन

हर एक मानव के प्राण में, हर एक नक्षत्र की ऊर्जा संचार करता रहता है । लेकिन, सूरज जिस तरह ग्रहों, नक्षत्रों, चंद्रमा, पृथ्वी तथा ताराओं को अपने आकर्षण के आलिंगन में विकसित करते हुए, अपनी ऊर्जा को बढ़ाते हुए जीवित रहता है, उस तरह हर एक मानव का प्राण सूरज बनकर प्राण में इकट्ठा होनेवाले आत्मा के भाव ग्रहों की तरह मानव के शरीर में मांस बनकर, मांस में उगनेवाले सूक्ष्म परमाणुएँ नक्षत्रों के रूप पाकर, सूक्ष्म परमाणुओं के भाव प्राण के आकर्षण में मिलकर, प्राणात्मा बनकर कैसे संचार करते हैं – इसे समाझाते रहते समय एकायक मेरे सामने एक घोर आकार प्रत्यक्ष हुआ । उसे देखते ही मैं भयभीत होकर मेरे अनजान में ही भय से ज़ोर से चिल्लाया । कुछ देर तक भय के मारे कंपन हो रहा था । बाद में कंपन खत्म होकर मैं शांत हुआ ।

गुरुदेवजी ने कहा – “फिर एक बार वह घोर आकार प्रत्यक्ष होगा । तब तुम अपनी आँखों की दृष्टी के आकर्षण से भय के भाव, अपने शरीर में होनेवाले चुंबकीय ऊर्जाओं में टकराकर, हवा में तैरते रहनेवाले भय की भावतरंगों को अपना शरीर आकर्षित करके, अपने सांस से प्राणात्मा के भाव में टकराकर, भय के भाव अपने शरीर को कंपाकर, तुम्हारे अज्ञात में ही तुम कैसे चिल्लाते हो और भय के द्वारा आकर्षित होनेवाले सांस में मिलनेवाले भय के भावो को अपने शरीर के रक्त में मिलाकर, छान करके, केवल सूखी हवा के रूप में सांस प्रकट हो जाता है – इसे देख लो” । इस तरह बातें करते समय यकायक वह घोर आकार फिर दीख पड़ते ही, भय के भाव मेरे शरीर को चलाकर विचार और क्रियाएँ अपने आप संचालित करने को स्पष्ट रूप से दिखाया ।

इस तरह मानव के जीवन में हर एक मौका परिस्थिति के वातावरण से, भावों की प्रेरणा से श्वास में लेनेवाले सांस में मिलकर आने वाले भावों को रक्त में छानकर, भाव मांस के रूप में बदलते समय – भय से, गुस्से से, नाराज़गी से, ढीलापन से, क्रोध से, और वेदना से सांस में लेनेवाले भाव रात को मांस के रूप में बदलते समय, मांस में विरोध भाव उतपन्न होने को तथा उससे शरीर में व मांस में दर्द होने और रोग का उत्पन्न होने के कारण बन जाते हैं ।

इसतरह रक्त में मिश्रित होनेवाली भावतरंगें शरीर के अंगों पर मिश्रित होकर, जमकर, छानने वाले भाव हड्डियों के अंदर मज्जे के रूप में छानकर जम हो जाते हैं । यानी एक पेड़ – अमरूद का पेड़ –ऐसे लेंगे । कितने प्रकार के भावों की ऊर्जा मिलकर बीज बनकर धरती पर दाखिल होकर, पौधा बनकर, उगकर, पेड़ के रूप में विकसित होते समय भूआकर्षण की सहायता से हवा में तैरनेवाले अपने भाव की ऊर्जाओं के सार को अपने भीतर आकर्षित करके,

जमाव करके, विकसित होकर, अपने सांस लेते समय जिसतरह अमरूद के पेड़ के गंध को बाहर प्रकट करते रहता है, उसी तरह हड्डी के भीतर मज़्ज़े के रूप में जम जाकर भाव, प्राण के संचालन से पेड़ की तरह अपने आप आकर्षित करके जब हम सांस लेते हैं तब श्वास में मिलकर रक्त में मिश्रित होकर मांस के रूप में बदलकर, मांस में सूक्ष्म परमाणुओं के रूप में उगकर, उगनेवाले सूक्ष्म परमाणुएँ प्राण के आकर्षण में मिश्रित होकर, प्राणात्मा बनकर अड़तालीस दिनों में सूक्ष्म परमाणुएँ परमाणु शिशुओं के रूप पाते हैं। हमारे सांस में लेनेवाले भाव परमाणुशिशुओं में टकराने पर ख्याल, वचन व कार्यवाही - इस तरह भावों को प्रेरित करके मानव को संचालित करते हैं।

इस तरह मानव के जीवन में, प्राणात्मा में उत्पन्न होनेवाले परमाणुशिशुएँ, मानव के मर जाने पर शरीर को छोड़कर, विलग हो जाकर हवा में (परमात्मा में) जोड़ना और विलग होकर जानेवाले प्राणात्मा जिस प्रकार के भाव की गंध के साथ हवा में अपने आप तैरता रहता है, उसी प्रकार के भावों की चेतना से अप्रतीक्ष रूप से प्रेरित होकर, श्वास में लेनेवाले शरीरों पर आकर्षित होकर उस शरीर के रक्त में जोड़कर, शरीर के संचालन से इंद्रिय में मिलनेवाले प्राणात्मा के परमाणु शिशुएँ, उस शरीर के आकार का रूपधारण करनेवाले परमाणुशिशुएँ बनकर विकास पाते हैं। अर्थात एक बरेट जिस प्रकार अपनी लार में मिट्टी को मिलाकर उसे ले जाकर, नीड़ बनाकर, उस नीड़ पर एक कीड़े को रखकर उसे डंक मारने पर, बरेट के जहरीला तेज़ाब कीड़े के प्राणात्मा के परमाणु शिशुओं में इकट्ठा होकर, मिश्रित होकर, बरेट का रूप पाता है, उसी प्रकार मानव के शरीर में उगनेवाले प्राणात्मा की गंध के अनुसार उसी गंध

के शरीर होनेवाले बकरी, गाय या दूस्रे जानवर बनकर उनके संदर्भवश हो जानेवाली चतेनाओं की प्रेरणा से सांस के आकर्षण में जाकर दूस्रे शरीर का रूप पा जाता है । इस तरह मानव के जीवन में परिस्थिति के वातावरण के अनुसार भावों की प्रेरणा की सांस से विचार, क्रिया तथा पुनर् आकार पाता है - इसे भाव और दृश्य के रूप में समझाया ।

सूरज में प्राणाणु बनकर उत्पन्न होनेवाला प्राण - सूरज से चलानेवाला तुम्हारा प्राण, प्राण के आकर्षण से विभिन्न चेतनाएँ इकट्ठा हो जाकर शरीर बनकर, प्राण के संचालन से शरीर की भावनाएँ चलकर उन मावनाओं की उर्जा ही विचार, क्रिया तथा शरीर का संचालन हो जाते हैं ।

प्राण ही अंतर्यामी

"प्राण ही अंतर्यामी" होता है । तुम्हारे शरीर को शासन करनेवाला तथा शासक होनेवाला तुम्हारा प्राण ही है । शरीर के संचालन के भावों से उत्पन्न होनेवाले विचार से सांस में लेनेवाली चेतना ही (तुम्हारा प्राण) "इरै" (आहार) हो जाकर शरीर के उगने पर "भगवान" बन जाता है । तुम्हारे शरीर में इकट्ठा कर लेनेवाले भावों की ताकत - तुम्हारे वचन और क्रिया की ताकत, - अर्थात अनुमान कर लो कि तुम तूतिया ज़हर को आँखों से देखते हो । उसे देखने पर शांत होकर रहता है । किसी भी आफ़त नहीं देता । यदी तुम उसे खाओगे तो शरीर के संचालन बदलकर मिचलना और वमन आने देता है । शरीर को कमज़ोर बन देता है । 'क्या मैं मर जाऊँगा' - यह ख्याल उत्पन्न होता है । इसी तरह मिर्च को देखने पर शांत दीख पड़ता है । यदी खाएँ तो 'आ' कहकर चिल्ला देता है ।

तीखापन को हटा करने का खयाल आता है । पानी को ढूँढकर जाकर पिला देता है । यदी स्वादिष्ट मिठाई को खायें तो मन खुश हो जाता है । लेकिन मिठाई ज़्यादा होने पर उसे हटाने की विचार आकर पानी को ढूँढकर जाकर पिला देता है । इसी तरह तम्हारे सांस में आनेवाले भाव की क्रिया ही 'दैव' हो जाता है । दिव्य क्रिया बन जाता है । इसलिए तुम अपने जीवन में विविध गुणोंवाले मानव से संपर्क होने का संदर्भ आता है । मान लो कि उससमय अप्रतीक्ष रूप में एक मूर्ख के साथ वाद विवाद पक्का हो जाता है । तुम अपने बल को मन में रखकर बताते हो कि देखो, तुम्हें मिट जाऊँगा । तुम्हारे वचन से प्रकट होनेवाले भाव, मूर्ख के कानों में ध्वनित होकर, उसके शरीर के भाव प्रेरित होकर, तुम्हें मिटने का विचार उसपर ज़्यादा उत्पन्न होता है । इस संदर्भ में तुम्हारी सांस के भाव तुम्हारे रक्त में मिलकर मूर्ख को मिटाने का विचार याद दिलाते हुए रहेगा । मुर्खता के भाव तुम्हारे शरीर पर इकट्ठा होते हुए क्रिया के रूप में उगकर, तुम्हारे शरीर पर आत्मा के रूप में जमा होकर, जमा हानेवाली क्रियाएँ परमाणु शिशुओं का रूप बन जातें हैं । जब तुम्हारे शरीर से प्राण विलग होकर चलता है तब प्राण के आकर्षण में विकसित होनेवाले तुम्हारे भाव की क्रियाएँ पुनर्जन्म में दूस्रे एक प्राणी को खानेवाले जानवर के रूप में शरीर पा जाएगा – इस तरह भाव तथा दृश्य के द्वारा उन्होंने समझाया ।

इन सब को जानते ही मेरे अनजान में ही मुझ पर भय के भाव आ जाते थे । "मेरे वचन और क्रियाओं को भलाई करने की स्थिति पानी चाहिए । मेरे अनजान में मेरा वचन और क्रिया से दूस्रों को हानी न पहुँचाकर मेरी रक्षा करनी चाहिए" – इस तरह गुरुदेव जी से प्रार्थना किया । वे ज़ोर से हँसकर बोले **"प्राण ही अंतर्यामी होता है ।**

उसके विराजमान होनेवाला मंदिर तुम्हारा शरीर होता है । उसपर अशुद्धता न जमा होने की तरह रक्षा करने वाला तुम्हारा मन है । अज्ञात में ही अशुद्ध होने को शद्ध करना तुम्हारा कर्तव्य है ।" इस प्रकार बताकर, इस पृथ्वी पर मानव बनकर जीवित होकर, जीवन में अपने अंदर इकट्ठा होनेवाले बुरे भावों को हटाकर, महर्षि बनकर, प्राण के साथ चेतनाएँ प्रकाश में ज्योति के रूप में एकत्रित होकर, प्रकाश के आकार में चमककर, आकाश में सप्तऋषि मंड़लों के आकार में शोभित होकर, उससे प्रकट होनेवाले भावों की शक्ति की सहायता से महर्षियों के प्रकट होनेवाले भाव की प्रकाशमान लहरों को अपने अंदर इकट्ठा करके, तुम्हारे अज्ञात में ही अपने अंदर इकट्ठा होनेवाले बुरे भावों को हटाकर, अपने विचार, वचन तथा क्रिया इन सब पवित्र बनेंगे। 'यही तुम्हारे अंदर प्राण बनकर विराजमान होकर तुम्हें शासन करनेवाले शासक की तुम्हारी सेवा बनेगी । इस सेवा में शासक की परिचर्या में तुम प्रकाशमान स्थिति प्राप्त करें"- इस प्रकार आशीर्वाद दिये ।

गुरुदेवजी की सूक्ष्म स्थिति प्राप्त करना

और कई स्थितियों को उपदेशित करके समझाकर, "मैं माघ महीना एकादशी का दिन सूक्ष्म में चलूँगा" - इस प्रकार कहे ।

"मुझे पळनी पहाड़ के तलहटी ले जाकर मैं जिस जगह के बारे में बताऊँगा उस जगह पर मुझे छोड़कर तुम ऐवर पहाड़ में ध्यान करके, एकादशी का दिन तड़के पळनी आकर मेरे कहनेवाले स्थान

पर किसी को भी न जानने की तरह, गुप्त स्थान पर ध्यान में लग जाओ ।" – इस प्रकार बताकर, "मुझे यहाँ से ले जाने के पहले मैं जिन व्यक्तियों के बारे में कहता हूँ उन सब को मिलकर मुझे उनके घर में ठहराने के लिए बताओ । क्योंकि मुझे इस स्थिति में उनके घरों में ठहराने के लिए इनकार करेंगे । ये सब लोग मरे पास आकर विभिन्न विवरणों को जानकर धन कमाना चाहिए – इस लालसा से मेरे पास आनेवाले हैं । उनके भाव तथा क्रियाओं को तुम जान लेने के लिए ही इसे तुमसे बताता हूँ"– इस प्रकार बोले ।

गुरुदेवजी के वचन के अनुसार हर एक को अलग अलग मिलकर गुरुदेवजी को उनके यहाँ ठहराने के लिए पूछा । वे बोले कि तुम्हारे घर में रख लो । मैं बोला – "मेरे घर में उन्हें रखने के लिए सुविधा नहीं है ।" "मुझे क्या हो जाएगा उनको इमारे यहाँ ठहराने से" – इस तरह बोलकर हँसी उड़ाये मेरे मिलनेवाले सभी लोग । इस विवरण को गुरुदेवजी से कहने पर वे बोले "तुम्हें ज्ञात होता है न? तुम पळनी पहाड़ की तलहटी में संगीत सभा घटित होनेवाले स्थान पर मुझे छोड़कर ऐवर पहाड़ ही आ जाओ । बाद में मुझे वहाँ आकर देख लो" – इस प्रकार बताए । मैं गुरुदेवजी को ले जाकर संगीत सभा घटित होने वाले स्थान पर छोड़कर, ऐवर पहाड़ आकर, ध्यान में बैठ गया । बाद में गुरुदेवजी के वचन के अनुसार मारगषि (माघ) महीना एकादशी का दिन पळनी पहाड़ की तलहटी में गुरुदेवजी के कहनेवाले गुप्त स्थान पर ध्यान में बैठ रहा था ।

"पहला दैव कौन हैं – इसका ज्ञात होना"

गुरुदेव जी के कहने के अनुसार गुरुदेव जी अपने शरीर से विलग होकर सूक्ष्म स्थिति में मेरे निकट आकर, सूक्ष्म में ही रहकर बोले – "तुम अपने पहले दैवों के पास जाकर आशिषें पाकर आओ।" – गुरुदेवजी की आवाज़ मात्र आयी । आकार नहीं दीख पड़ा ।

मैं भग्न होकर 'पहला दैव कौन हैं?' – इसे सोचते रहते समय, "इसे नहीं जाननेवाला फिर किसे जान लोगे?" – इस तरह गुरुदेवजी की आवाज़ दूसरी बार सुनाई पड़ी । "इसे जान लो । तुम्हारे माता व पिता ही तुम्हारे पहले दैव हैं" – इस आवाज़ सुनते ही गुरुदेव जी का आकार दीख पड़ा ।

"तुम अपने माता व पिता के पास जाकर मेरे वचन बताकर अड़तालीस दिन तक पादपूजा करके आशिषें पाकर आओ ।" इस प्रकार बताए । मैं राजपाळैयम् जाकर अपने माता और पिताजी से आशिषें माँगा । वे इनकार कर दिये । गुरुदेवजी मेरे माता व पिता जी के सामने प्रत्यक्ष होकर कई अद्भुतों को करके दिखाकर मुझे आशिषें दिलाने दिये । 48 दिन तक पादपूजा करके माता व पिता जी से आशिषें प्राप्त करने के बाद पैदल जाकर गाँवों में यात्रा करके अनुभवों को पाने की आज्ञा दी गुरुदेव जी ने ।

उसके अनुसार पैदल घुमाकर "करूर" नामक जगह आते समय मेरे पिताजी मेरी हालत के बारे में सोच सोचकर, चिंता में पड़कर, उनका देहांत हो गया । मेरे पिताजी की मौत की खबर गुरुदेवजी ने समझाकर, मुझे राजपाळैयम् जाने की आज्ञा दी । वहाँ जाने पर पिताजी के शरीर को नहीं देख सका । जला दिए थे ।

पिताजी की अंतिम क्तियाओं के समाप्त होने के बाद मेरी माताजी गुस्से के साथ बोलीं कि अब तुम अपने पिताजी के साइकल की दूकान को पळनी में रखकर धंधा करके उपनी पत्नी व बच्चों की रक्षा करो । और कोई रास्ता न होने से अपनी माता के वचन के अनुसार दूकान को चलाया । हर एक दिन में एक रुपये का आमदनी भी नहीं आया । इस तरह दो महीने बीत गये ।

जब मैं बहुत चिंता में पड़ रहा था तब गुरुदेवजी यकायक मेरे सामने प्रत्यक्ष होकर बोले – “मेरे वचन पालन करूँगा – इस प्रकार वादा किया । अब तो पेशा करते हो ।” इसे कहकर गायब हो गये । उस दिन से रोज़ बीस रुपये तक आमदनी आने लगी ।

गूँगे आदमी को बोलने की शक्ति देना

उस दिन से दसवीं दिन मेरे एक मित्र चालीस बरस होनेवाले एक आदमी को मेरे पास ले आकर बोले कि यह आदमी एक दुर्घटना को देखने पर बोल नहीं सके । एक साल तक कई इलाज करने पर भी बोल नहीं सके । इनको कोई न कोई उपाय करके बोलने दीजिए । इस प्रकार निवेदन किये । मैं भी तुरंत नींबू का फल तथा विभूति खरीद लाने के लिए बताया । उस समय गुरुदेवजी मुझे उदय देकर बोले कि तुम्हारे भाव को उनके शरीर पर चलाओ । वह बोलेगा । इस प्रकार समझाये । गुरुदेवजी के वचन के अनुसार मैं ने किया ।

अगला क्षण ‘आ’ तथा ‘अम्मा’ चिल्लाते हुए ‘मुरुगा, मुरुगा’ – इस प्रकार वे ज़ोर से आवाज़ उठाने लगे । उतना ही था, मेरे दूकान के सामने भीड़ हो गयी । तमाशा देखने आने वालों से वह आदमी

बोलने की शक्ति खो जाने के कारण को बता रहे थे । उस समय विभूति देने के लिए गुरुदेवजी ने समझाया । आनेवालों को मैं ने विभूति देकर खाने के लिए कहा । विभूति खाकर कुछ ही मिनट में कुछ लोगों को विरेचन होने लगा । 'विभूति में जहर मिलाकर दिये । इसलिए ही इसतरह हो जाता है' – इस प्रकार बताकर मुझे कोसने लगे । थोडी देर बहुत खुश में था । अगला क्षण गालियाँ खानी पड़कर मैं दुख में था । तमाशा देखने के लिए भीड़ ज्यादा हो जाती थी । मैं बहुत वेदना में था । गुरुदेवजी के प्रत्यक्ष होने पर मैं भविष्य वक्ता की तरह आनेवालों को भविष्य वाणी देने लगा ।

विरेचन होनेवालों को उनके रोग बताकर, पत्य में रहने को कहने पर गालियाँ बंद होकर, शांत हो जाने पर कानों में सुनने की शक्ति न होनेवाले एक व्यक्ती ने कहा कि विभूति खाने के बाद अच्छी तरह सुन सकता हूँ । इसे सुनते ही कोसनेवाले मुझे प्रशंसा करके नमस्कार करने लगे ।

दूस्रा दिन मुझे देखने के लिए भीड़ ज़्यादा होकर आने लगी । साइकल दूकान को चला नहीं सका । दिन व दिन गाँव गाँव पर से भीड़ आने लगी । विभूति से रोगों को स्वस्थ होने से एक महीना तक इस प्रकार भीड़ बढ़ती जा रही थी ।

तिरुप्पति जाना

तिरुप्पति जाने के लिए गुरुदेव जी के आज्ञा देने पर साइकलों को मित्रों को देकर मैं तिरुप्पति चला गया । तिरुप्पति पहाड़ पर पापनाशम पारकर सातवीं मील पर जंगल में भालुएँ भीड़ बनकर रहने वाले स्थान पर ध्यान में अड़तालीस दिन तक बैठने को कहा गुरुदेव जी ने ।

गुरुदेवजी के कथन के अनुसार तिरुमलै पर चढ़कर पापनाशम् पहुँचा । उस रात को पापनाशम् में ठहरने के बाद, अगला दिन सबेरे गुरुदेवजी सूक्ष्म रूप में आकर मुझे जंगल में ले चले । लगभग आठ मील होगा । निर्दिष्ट स्थान आने पर वहाँ एक जलप्रपात दीख पड़ा । वहाँ के समीप घना जंगल था । वहाँ जाकर देखने पर एक गुफ़ा दिखाई पड़ी । उस गुफ़े में ध्यान में बैठूँगा । – इस प्रकार मैंने सोचा । उसके अंदर गुरुदेवजी प्रत्यक्ष होकर "यहाँ नहीं" कहते हुए कोई और स्थान ले जाकर उसके दिखाये स्थान पर बैठने के लिए कहे । तब दिन में तीन बजे होगा । मेरे हाथ में ले जानेवाली थैली को उस स्थान पर रखकर जंगल में घूमकर देखने के लिए गया ।

मुझे ध्यान में बैठने वाले स्थान के आसपास ही कुछ पेड़ में कुछ फल दीख पड़े । उनमें से नीचे गिरकर पड़नेवाले फलों को लेकर खाने के लिए कहे । उनमें से कुछ फलों को खाया । वे स्वादिष्ट थे । बाद में कुछ जड़ीबूटी के पौधों को दिखाकर उसे भी खाने के लिए कहे । उसे भी खाया । वे एक प्रकार के मीठापन में थे । खाने के कुछ देर पर भूख मिट गया । शरीर में भी उत्साह आ गया । तुम्हारे ध्यान करनेवाले अड़तालीस दिनों में हरेक दिन दुपहर 12 बजे को ध्यान से जागकर, मेरे दिखाये गये फलों तथा पत्तों को आहार के रूप में लेकर खाने के बाद पुन: लगभग 3 बजे पर ध्यान में बैठने के लिए कहे ।

में थैली को जिस स्थान पर रखा था उस स्थान लौटकर बैठा । थोड़ी ही देर में कई चिंताएँ मेरे मन में होने लगीं । पहले की स्थिति में मेरे जीवन की हालत और आज गुरुदेवजी के दिखाये मार्ग पर चलने की स्थितियों के बारे में विचार करते रहते समय, मेरे सामने एक मेंढ़क अपने को बचाने के उद्देश्य से कूदकूदकर आया । उसे

भोजन के रूप में निगलने के भाव के साथ एक साँप उसे पीछा करके आया । इसे देखते ही मेरे यादे छिप जाकर जब मैं उस साँप के क्रिया और मेंढ़क की हालत को देखते रहता था तब साँप के मुँह पर मेंढ़क फ़ंस गया । मेंढ़क वेदना के साथ चिल्लाया । थोड़ी देर में साँप मेंढ़क को निगल गया । उस समय साँप के शरीर के अंदर होनेवाले सभी घटनाएँ दृश्य बनकर दीख पड़े । मेढ़क का प्राणात्मा विलग होकर साँप के गर्भ के अंगों के आकर्षण में जा पहुँचता है । मेंढ़क की माँसपेशियाँ साँप का भोजन हो जाती हैं । तब गुरुदेवजी ने प्रत्यक्ष होकर साँप की स्थितियों को समझाया । यानी साँप के निगलनेवाली मेंढ़क की मांसपेशियाँ अम्ल बनकर गलाना दीख पड़ता है । गलानेवाला अम्ल सांप की मांसपेशियों में मिलकर उसकी माँसपेशियों के रूप में बदलना दीखता है । गुरुदेवजी प्रत्यक्ष होकर मुझे ध्यान में बैठने के लिए बताकर, साँप के शरीर के संचालनों को ध्यान में ही रहकर सबेरे होने तक गौरकर देखने को कहकर गायब हो गये ।

सबेरे तक ध्यान में बैठा था । सबेरे होते ही गुरुदेवजी ने दर्शन दिये । तब गुरुदेवजी से साँप के शरीर में होनेवाले घटनाओं के बारे में बताया । गुरुदेव जी उसका व्याख्या करने लगे ।

अर्थात मेंढक की मांसपेशियाँ साँप की मांसपेशियों के सार के रूप में बदलकर, साँप की मांस पेशियों में सूक्ष्म परमाणु बनकर, उगकर, साँप के प्राण के आकर्षण में सूक्ष्म परमाणुएँ जा पहुँचकर, साँप का प्राणात्मा हो जाता है । यानी वैज्ञानीकज्ञान से वनस्पति राशियों को कलम बाँधकर जोड़कर एक पेड़ बनकर दो पेड़ों के सार को मिलाकर नये बीजों को उत्पन्न करते हैं न? उसी तरह मेंढ़क को भोजन के रूप में लेने से, मेंढ़क की मांसपेशियों के सार अम्ल के

रूप में गलाकर, साँप की मांस पेशियों में मिलकर, सूक्ष्म परमाणु बनकर, उगकर, उगनेवाले सूक्ष्म परमाणुएँ साँप के प्राण के आकर्षण में एकत्रित होकर प्राणात्मा बन जाते हैं । साँप के मर जाने पर साँप का प्राणात्मा हवा में मिलकर, गंधों से युक्त जड़ों (शरीर) से आकर्षित होकर, उनके गर्भो में उगकर उसका आकार लेकर पुनर्‌जन्म लेता है । उदाहरण के लिए मगर की तरह पुनर आकार पाता है ।

मेंढ़क के प्राणात्मा को साँप के गर्भ के अंगों के आकर्षित करने से, साँप के गर्भ में उगकर, साँप की जाति बनकर, पुनर्जन्म पाता है । उदाहरण के लिए, बरेट अपनी जाति की वृद्धि के भाव से अपने लार को मिट्टी में मिलाकर नीड़ बनाकर, एक कीड़े को ले आकर, नीड़ में रखकर ड़ंक मारने से अपने अंदर जमा करनेवाले अम्ल को कीड़े के शरीर पर चलाता है । कीड़े का शरीर के ऊपरी भाग सूखे पत्ते की तरह बन जाता है । उसकी मांसपेशियाँ अम्ल के रूप में बदलते हैं । कीड़े का प्राणात्मा धड़कन से संचालित करके, नीड़ के बाहर होनेवाले गरमीय चुंबकों को आकर्षित करके चलाने की स्थिति में, कीड़े का प्राणात्मा बरेट के परमाणुशिशुओं के रूप में बदलकर, बरेट का आकार होकर, पुनर आकार पाने की तरह साँप के गर्भ के अंगों से आकर्षित होनेवाले मेंढ़क का प्राणात्मा साँप के गर्भ में साँप के परमाणुतिशुओं के रूप पाकर, साँप के रूप में पुनर आकार पाता है । – इसे समझाकर दृश्य बनकर दिखाया । इस तरह लगातार ध्यान में मग्न होकर, शाम को 3 बजे के समय ध्यान पूरा करके, गुरुदेवजी के दिखाये फल और पत्तों को खाकर, फिर ध्यान में बैठने लगा ।

ध्यान में बैठने के थोड़ी ही देर में पत्नी व बच्चों का याद तथा अपने इच्छानुसार खर्च करते हुए मित्रों के साथ घूमते फिरते

रहनेवाला मैं, गुरुदेवजी के साथ फ़ंसकर, जंगल में अनाथ होकर ठीक तरह के भोजन भी न होकर, इसीतरह रहने की हालत आ गयी – ये यादें आते रहने से ध्यान नहीं कर पाया । थोड़ी ही देर में आँखों को खोल दिया । लेकिन मन तो फट फटाकर तड़पने लगा । धड़कन को शांत करने के लिए उठाकर चलने लगा । तब एक बंदरों की भीड़ दीखाई पड़ी । तमाशा देखकर मन को शांत करूँगा – इस प्रकार विचार करके बंदरों की भीड़ होनेवाले जगह के पास जाकर एक पेड़ के नीचे बैठकर तमाशा देख रहा था ।

मेरे परिवार को दृश्य बनाकर दिखाये

तब एक मूर्ख बंदर, बंदरो की भीड़ को भगाकर काट रहा था । तब छोटे बच्चे भागकर अपनी माता बंदरों पर छलांग मारकर आलिंगन करने को और माता बंदरें बच्चों को लेकर दौडने को देखते ही मेरे मन में लहर लहर बनकर टकराकर, अपने बच्चों को देखने का विचार व लालसा ज़्यादा होकर, बेहोश होकर पेड़ के नीचे झुका लिया । बेहोश की स्थिति में मेरे परिवार में होनेवाले घटनाएँ दृश्यों के रूप में दीखते हैं । मेरा बड़ा लड़का, “लारी के लिए टायर खरीदना तथा मरम्मत के खर्च के लिए पैसे चाहिए । कहीं ओर से पैसे माँगकर दो” – इस प्रकार मेरी पत्नी से माँग रहा है । “पैसे के लिए मैं कहाँ जावूँ?” इस प्रकार बताते रहने पर वह उसे ड़ांटता है – “पैसे दोगी कि नहीं?” “अपने पिताजी से मोंगो” – इस तरह कहने पर, “घर को गिरवी रखकर पैसे दोगी कि नहीं?” – इस तरह डांटता है लड़का । तब मेरी पत्नी रोती हुई कहती हैं कि हाथ के सभी धन खोकर, खेत को भी गिरवी रखकर उसे भी खो दिया । अब घर को गिरवी रखकर तुम्हें देने के बाद हम लोगों को कहीं

गिरकर मरना ही है । इस तरह कहकर शोर मचाकर रोने लगीं । इसे देखते रहनेवाले 2½ साल का बेटा और बेटियाँ रोतेहुए "पिताजी के आने पर बताऊँ" – इस तरह कहते रहते समय मेरी पत्नी आखरी बेटे को हाथ में लेकर दूस्री दो लड़कियों को साथ लेकर "तालाब या पोखरे में गिरकर मरेंगे" – इस प्रकार बताते हुए घर छोड़कर बाहर जाती हैं । तब आसपास के लोग मेरी पत्नी और बच्चों को रोककर, मेरा नाम बताकर, "पापी आदमी, इस तरह करके कहीं चला गया" – इस तरह कोसते हैं । उस तरह मेरे शरीर में भावों की प्रेरणा से होश में आकर, उठकर बैठते ही, "यह क्या जीवन है?" इस तरह का नफ़रत अधिक होकर, आत्महत्या करने के भाव प्रेरित होकर, उठकर जलप्रपात की ओर चलने लगा ।

तब लगभग शाम को 6 बजे होगा । एकाएक गुरुदेवजी प्रत्यक्ष होकर, "मेरे कहने के अनुसार करूँगा – इस प्रकार बताया । अब तो मर जाने के लिए कहते हो?" – इस प्रकार बताकर हँसने लगे । तुरंत मेरी आकुलता चली गयी । मन शांत हुआ । एक पेड़ के नीचे बैठा । गुरुदेवजी दर्शन देने की स्थिति में ही उपदेश करने लगे ।

"सूरज जिस तरह अपने आप गरमी को उत्पन्न करके संचालन करता है, उसी तरह सूरज में उदय होनेवाला प्राणाणु सूरज से ब्रह्माण्ड में फेंक जाने पर, सूरज की तरह अपने आप गरमी को उत्पन्न करनेवाली धड़कन की स्थिति होने वाले प्राणाणु बनकर ब्रह्माण्ड में तैरते रहने पर पृथ्वी से आकर्षित होकर, पृथ्वी पर तैश्कर वनस्पति वर्गों पर गिरकर, वनस्पति के सार को आकर्षित करके सूक्ष्म कृमि के रूप में शरीर पाकर, कुछ दिनों में शरीर में उगनेवाले सूक्ष्म परमाणुएँ, प्राण में आत्मा बनकर मिश्रित होकर, कृमि बननेवाले शरीर के मर जाना तथा कृमि के शरीर को चलाते समय प्राण में

आत्मा के रूप में इकट्ठा कर लेनेवाले भाव के सार पुनर्जन्म में पुनर् शरीर कीड़े के रूप में उत्पन्न होकर उस शरीर के जीवित होना – इसी तरह ही हर एक शरीर में भोजन और भाव लेकर जीवित करने की स्थितियों के अनुसार मकोड़े, सांप, पक्षी, जानवर इस प्रकार कई करोडों जन्म लेकर, पैदा होकर, मर जाकर, मानव के शरीर तक उत्पन्न होना प्राण की धड़कन की आकर्षित स्थिति से ही है – इसे पहले दृश्य बनकर दिखाकर मैंने तुम्हें समझाया है" - इस तरह बोले ।

"तुम्हारे जीवन में, परिवार में लगाव तथा बच्चों पर तुम्हारे पाश से तुम्हारे शरीर में उगनेवाली चेतनाओं से प्रेरित होकर, वे कैसे तुम्हारे शरीर में कार्यवाही करते हैं – इसका ज्ञात तुम्हें होने के लिए ही तुम्हारे भावों को प्रेरित करके, तुम्हारे परिवार की स्थिति को दृश्य के रूप में मैं ने दिखाया । लेकिन तुम्हारे देखे हुए दृश्य की प्रेरणा से तुम्हारे शरीर के भाव प्रेरित होकर तुम्हारे ले गये सांस से तुम सोचने की शक्ति खोकर, शरीर दुर्बल होकर, आत्महथ्या करने का ख्याल उत्पन्न होकर, अपने बच्चों के प्रति होनेवाले पाश को भूलकर अपने शरीर को नष्ट करने की तरह कार्यवाही की हैं न, तुम्हारे दुर्बल भावनाएँ?" – इस तरह बताए ।

"इसी तरह वातावरण की परिस्थिति से होनेवाले हर एक संदर्भ में इंद्रिय ज्ञान से आकर्षित होनेवाले भाव की सांस से शरीर में होनेवाले भाव प्रेरित होकर, बुरी क्रियाओं को कार्यवाही कर सकनेवाले बुरे भावों को हटाने के लिए मैं तुम्हें 'आत्मशुद्धि' करने की ताकत को सिखाने को – तुम चेष्टा करके 'आत्मशुद्धि' करने की ताकत को क्यों नहीं पाया?" इस प्रकार पूछकर ध्यान में बैठकर सबेरे होने के पहले 'आत्म

शुद्धि' कर लेने के भाव की ताकत को प्राप्त करने के लिए विविध स्थितियों को समझाकर गायब हो गये ।

गुरुदेवजी के कहने के अनुसार ध्यान में बैठा । वह रात कितना समय बीत गया – मुझे नहीं मालूम । मेरे ध्यान में बैठनेवाले स्थान के कुछ दूर पर जंगली वराहों के गरजकर आने की आवाज़ कानों में सुनायी पड़ी । कुछ देर मेरे समीप में गरजने की आवाज़ सुनायी । तब भय के मारे मेरा शरीर रोमांचित होता है । तब गुरुदेव जी के कहने के अनुसार ध्यान में एक प्रकार के भाव को आकर्षित करके, सांस लेता हूँ । भय हट जाकर मन मज़बूत होता है । वराह की भीड़ विलग होकर चली गयी ।

बाद में आधी रात होगा । एक प्रकार की ध्वनि लेते हुए एक भालुओं की भीड़ मेरे निकट आयी । मेरे बहुत समीप में भालुओं की भीड़ों की ध्वनि सुनकर आँखों को खोल दिया । मेरे सामने भालुओं के आहार लेने को देखा । देखते ही मेरा भय अधिक होने से, गुरुदेवजी को याद करके, आँखों को बंद करके, ध्यान करने लगा । उसके बाद सबेरे तक क्या हुआ – मुझे नहीं मालूम ।

दोपहर 12 बजे ध्यान से जागकर, गुरुदेवजी के दिखाये पत्तों और फलों को आहार बनकर खाने के बाद, पेड़ के नीचे लेटकर सो गया । जागने पर जंगल में कुछ दूर घूमकर देखने गया । एक स्थान पर पहाड़ के कोनों पर छोटे और बड़े पत्थर एक के ऊपर एक रखे हुए थे । उसे देखने के लिए गया ।

समीप जाकर देखने पर मानव के कार्य की तरह दीख पड़ा । पत्थरों के बीच में घूरकर देखा कि अंदर क्या है । अंदर तो बड़े

भालुएँ और उनके बच्चे दीख पड़े । मेरे गंध को सूंघे कि नहीं वे गरजने लगे । मुझे भय नहीं आया । मैं धीरे से वहाँ से सरककर आ गया ।

रोगियों को सूँघकर स्वस्थ करना

बाद में कुछ और जगहों पर घूमकर देखने के बाद मेरे ध्यान करनेवाले स्थान आकर ध्यान में बैठा । दृश्य दीख पड़ने लगे । उस पहाड़ी प्रदेश में आदिकाल में पहाड़ी लोग कैसे जीवन बिताते थे – इस स्थिति को तथा जंगल में होनेवाले जानवरों के बहुत दूर पर आने को भी सूंघकर, संकेत जानकर, जो जानवर आता है इसे जान लेकर अपनी रक्षा करते हैं । उसी तरह एक आदमी को रोग हो तो उस समय उनमें से एक आदमी रोग के मारे वेदना में होनेवाले को देखकर उस रोग की स्थितियों को जानने के लिए सूंघकर देखने के बाद जंगल में जाकर, कुछ जड़ी बूटियों को लाकर, फिर एक बार रोगी को सूंघकर, अपने लाये जड़ीबूटियों से हर एक को लेकर, हाथ में रखकर, रोगी को सूंघकर देखना फिर जड़ीबूटियों को सूंघकर देखना – इस प्रकार बार बार करके इस तरह हर एक पौधे के पत्तों को इकट्ठा करके परिपाक बनकर उससे रस लेकर रोगी को पिलाते हैं । रोगी भी स्वस्थ हो जाता है ।

गरुदेवजी ने प्रत्यक्ष होकर रोगी को सूंघकर देखना तथा जड़ीबूटियों को सूंघकर देखना इसके उद्देश्य को स्पष्ट रूप से बताया । अथात् रोगी के शरीर में रोग के कारण होनेवाले भावों के गंध बाहर निकलकर आने को सूंघकर देखकर अपने लाये जड़ीबूटियों में कौन सा जड़ीबूटी इस रोग को चंगा करने के लिए सहायता देगा – इसे

जांच कर लेने के लिए ही वह उन्हें सूंघकर देखता है । रोग को चंगा करनेवाली जड़ीबूटी को चुनकर उसे परिपाक बनकर देता है । रोगी भी चंगा हो जाता है । इसी प्रकार हर एक रोग के अपने जांच द्वारा समझ लेनेवाले औषधों के बारे में अपने समुदाय के दूस्रे लोगों को सिखाकर अपने समुदाय के लोग रोगों से छुटकारा पाकर, अपने आप की रक्षा करने के लिए और अपने खोज के तरीकों के न गायब होने की तरह दूस्रों को सिखाकर, और भी नये खोजों से अपनी ऊर्जाओं को बढ़ते रहते हैं जंगल में जीवित होनेवाले मानव जाति – इस तरह बताये ।

बाद में दृश्य बनकर 'नकुल और नाग सर्प एक दूस्रे के साथ झगड़ने को' दिखाते हैं । नकुल के काटने से नाग को घाव होते हैं । नाग गुस्से के साथ नकुल को ड़ंक मारता है । नकुल के शरीर में ज़हर फैल जाता है । नकुल झगड़ना छोड़कर तेज़ी से दौड़ता है । एक स्थान पर खड़े होकर, चारों दिशाओं की ओर देखकर अपने भावों को चलाकर सांस लेता है । बाद में एक दिशा में तेज़ी से बहुत दूर दौड़कर वहाँ फैलनेवाली एक जड़ी बूटि की लता के ऊपर लेटकर, लोटकर उस जड़ी बूटी के कुछ पत्तों को खाता है । बाद में नकुल शांत होकर मामूल की तरह अपना आहार खोजकर जाता है ।

"इसे देखा है न? इस नकुल को किसने इस औषध के बारे में सिखाया कि जहर को अपने शरीर से हटाने के लिए उस औषध को खाना और उस पर लोटना? अर्थात् सांप का विष नकुल के शरीर पर बहने पर, नकुल के शरीर में हीनेवाले वीर्य भावनाएँ प्रेरित होकर, सांप के विष को हटाने का खयाल उत्पन्न होकर, अपने शरीर के वीर्य भाव को चारों दिशाओं में चलाकर सांस लेता है ।

तब नकुल की बेहोशी कुछ निर्मल होता है । उस दिशा की ओर तेज़ी से चलते समय, अपने पहले सांस लेनेवाले गंध के पौधे के पास आने पर जड़ीबूटी की गंध अधिक होने पर वही जाति – इसे जानकर उसपर लोटता है । लेकिन अपने जाति के नकुलों को वह सिखा नहीं सका । लेकिन नकुल के वीर्य भाव से सांस लेनेवाले भाव की ऊर्जाएँ नकुल के मांसपेशियों में मिलकर, सूक्ष्म परमाणु के रूप में उगकर, प्राण में, आत्मा में इकट्ठा होकर, नकुल के मर जाने के बाद पुनर्जनम में अपने आप की रक्षा करनेवाले शरीर की बनावट पाकर दूस्रा आकार पाता है । इसे देखा है न?" – इस प्रकार समझाकर वे गायब हो गये ।

इसी तरह 48 दिनों तक कई प्रकार की स्थितियों को दृश्यों में तथा मेरे शरीर के भावों में समझाकर, उपदेशित करके, कई सच्चाइयों की स्थितियों को स्पष्ट करके, आत्मशुद्धि करने की ऊर्जा को दाखिल किया गुरुदेव जी ने । 48 दिन समाप्त होने पर पैदल तिरुत्तणि जाने को कहा ।

तिरुत्तणि रवाना होना

गुरुदेवजी के कहने के अनुसार यात्रा में निकला । सबेरे लगभग 5 बजे रवाना होकर तलहटी आ पहुँचने के लिए तीन घंटे हो गये । कुछ देर आराम करके, मेरे पास होनेवाले 25 पैसे देकर चाय खरीदकर पीने के बाद तिरुत्तणि की ओर चलने लगा । चैत्र महीना होने से धूप बहुत तेज़ था । पैरों में जूते भी नहीं थे । पाद में तो पैर का गोखरू, ज़मीन तो बहुत गरम था । पैर में होनेवाले गोखरू

छोटा सा पत्थर पर पड़ते ही दर्द होता है । किसी तरह संभालकर चला जाता हूँ ।

सड़क के किनारे पर एक आम का बगीचा दीखता है । बगीचे के बाहर बढ़ाने वाले पेड़ से छोटे कच्चे फल ज़मीन पर पड़े होना दीखता था । मैं वहाँ जाकर एक कच्चे फल को लेकर खाते हुए चलने लगा । कुछ देर में मेरे गले में खराश होकर जीभ पर जलाभाव होकर प्यास होने लगा । मेरे चलनेवाले रास्ते पर कोई घर नहीं थे । कुछ दूर पर एक कुआँ था । कुएँ में उतरकर पानी पिया । पानी तो बेस्वाद था । प्यास नहीं बुझी । पीने वाले पानी से पेट भर गया । गले में खराश नहीं हटा । उसे परवाह न करके आगे बड़ने लगा । पाँच मील चला होगा । प्यास के मारे जीभ सूख जाने से किसी भी विचार के बिना रास्ते के किनारे एक इमली के पेड़ के नीचे ध्यान में बैठा । थोड़ी देर पर इमली के पेड़ के पत्तों को तोड़कर खाने के लिए मन में कुछ भाव सामझाये । तुरंत ध्यान से जागकर पेड़ पर चढ़कर पत्तों को तोड़कर खाने पर जीभ में लार स्रवित होने लगा । प्यास बुझ गयी । गले में खराश भी हट गया । शरीर में उत्साह भी आया । मेरी थैली भर इमली के फूल, पत्ते व कच्चे फलों को तोड़कर रखकर चलने लगा ।

तब मेरे मन में गरीबी के कारण मन मसोस होकर करोड़ करोड़ों लोग किन किन प्रकार से मुरझा होकर वेदना में पड़कर रहते हैं – यह विचार उदय हुआ । वह भी दृश्य बनकर अनेक स्थितियों में दीख पड़ते थे । मुँह में इमली के पत्तों को चबाते रहने से किंचित प्यास भी न थी । मेरे भाव में हर एक मानव के तरह तरह के दुख में पड़ते रहने की स्थितियाँ दृश्य बनकर दीख पड़ते रहने से धूप का क्रूरता या

पैर के गोखरू का दर्द न जानकर चलता रहता था । इस तरह रात को 8.00 बजे तक चलता था । सड़क के किनारे पर एक मंड़प दीख पड़ा । वहाँ जाकर देखा । वहाँ कोई भी नहीं था । उस जगह पर मेरे लाये हुए इमली के पत्तों को खाकर ध्यान में बैठ गया । रात को लगभग एक बजे पर लेट गया ।

व्यापारी का कहना

सबेरे होकर लगभग 7.00 बजे उठकर सूर्यध्यान करके, मंडप के पासवाले इमली के पेड़ से पत्तों को तोड़कर, कुछ पत्तों को खाकर, बाकी से थैली भरकर चलने लगा । 10.00 बजे के समय जब मैं "पुत्तूर" नामक गाँव को पार करता रहता था, तब एक आदमी दौड़कर आया और मेरे हाथ पकड़कर मुझे रोककर पूछा – "मुझे नहीं मालूम है?" । मैं याद करते समय वे बोले, "एक लारी के एक बचचे पर टकराने को देखते ही मेरे 'आ' कहकर चिल्लाने के बाद, मैं बोल नहीं सका । एक साल तक किसी भी वैद्य करने पर भी न बोल सकने वाले मझे आप ने ही फिर बोलने की शक्ति पळनी में दे दी ।" यह विवरण सुनकर मैं बोला, "अब पहचान लिया ।" वे काफ़ी पीने के लिए निवेदन किये । किसी प्रकार इनकार करने पर भी उनके मज़बूर करने पर मैं सिर्फ़ काफ़ी पीकर, "मुझे तिरुत्तणी जाना है । बिदा कीजिए" – इस प्रकार बताया । वे बोले कि आपसे कुछ बातें करनी चाहिए । "आप यहाँ क्या करते हैं?" – मेरे पूछने पर उन्होंने कहा, "हमारे शहर में माल तैयार करके यहाँ लाकर इस शहर में और आसपास के गाँवों में व्यापार करता हूँ ।"

"आप कुछ बातें बताने के बारे में बोले । क्या विषय है?" – मैंने पूछा । "हमारे पड़ोसी एक व्यक्ति को हाथ पैर चलाने की शक्ति

नहीं थी । उनहें एक कार द्वारा आपके पास ले आया था न? उन्हें आप ने एक विभूति पोटली आशीर्वाद करके देकर थोड़ी सी विभूति को हाथ पैर पर लगाकर, थोड़ी सी विभूति को पानी में डालकर पीने को बताकर कुछ अभ्यास भी सिखाकर इस तरह करते रहने से आप अच्छी तरह चलेंगे । – इस तरह आपने बताया । वे आपके वचन का पालन करते रहते थे । अब वे अच्छी तरह चलकर मामूल की तरह काम करते रहते हैं । उनके एक मित्र – किसी रोग से पीड़ित होकर कष्ट झेलते थे, उन को साथ लेकर हम तीनों आपको देखने के लिए पळनी आये । आपके साइकल की दूकान पर जाकर देखने पर दूकान बंद था । निकट में पूछा । वे बोले, 'वे कहाँ गये हमें नहीं मालूम । दो महीने हो गये । यहाँ रोगियाँ रोज़ आकर निराश होकर चले जाते हैं । इसे देखकर हमें दुख होता है' । हम तीनों आपके घर जाकर आप के रहने के स्थान के बारे में पूछने के उद्देश्य से आपके घर पहुँचे । आपकी पत्नी से पूछने पर वे रोती हुई बोलीं कि वे कहाँ गये, हमें नहीं मालूम । छोटा लड़का भी पिताजी को याद करके नाना, नाना (पिताजी) कहते हुए रोता रहता है । इसे सुनकर हमें बहुत दुख हुआ कि क्यों आप के घर जाकर पूछा ।" इसे बताकर उन्होंने आँखों में आँसू के साथ दुखित स्वर में पूछा, "स्वामी, आपको अपने शहर में कया कमी है? कृपया कम से कम बच्चों के खातिर अपने शहर लौटें" – इस प्रकार कहकर मेरे पैर पकड़कर कूटकूटकर रोने लगे । बाद में उन्हें सांत्वना देकर मैने कहा – "जब मेरी पत्नी रोग में पीड़ित होकर मरणावस्था में थीं तब उसे स्वस्थ कर दिया गुरुदेवजी ने । 'मेरे वचन मानोगे?' – इस तरह गुरुदेव जी ने मुझसे वादा करने को पूछा । मेरे 'हाँ' कहकर वादा करने के बाद उनके वचन के अनुसार न करें तो गुरुदेवजी के गुस्से

का पात्र बन जाऊँ है न? इस तरह बताकर उन्हें तसल्ली देकर मैं बोला कि मैं तिरुत्तणी जाता हूँ । वे बोले "बस अभी आयेगा ।" "नहीं चाहिए" कहते हुए मैं तिरुत्तणी की ओर चलने लगा ।

वात रोग को स्वस्थ करना

शामको लराभग 5.00 बजे बजकर मैं तिरुत्तणी जा पहुँचा । पुत्तूर में मुझे देखनेवाले व्यापारी तिरुत्तणी पहाड़ के पहली सीढ़ी पर बैठा था । मुझे देखते ही, 'काफ़ी पियेंगे' बताकर भोजनालय को बुलाए । कितनी ही बार इनकार करने पर भी उनके मज़बूरी से बुलाने पर मैं दूकान गया । दो खरीदकर पी । इसे घूरकर देखनेवाला एक आदमी हमारे काफ़ी की दूकान से बाहर आते ही, व्यापारी को मात्र बुलाकर कुछ पूछताछ करने के बाद, दोनों मेरे पास आये ।

पूछनेवाले बोले – "मैं एक किसान हूँ । यहाँ से दसवीं मील पर हमारा गाँव है । मेरी पत्नी डेढ़ साल से होकर उठकर बैठ या चल नहीं सकती । क्या रोग है? – इसका पता भी नहीं हुआ । किसी भी वैद्य उसे काबू में नहीं ला सका । क्या करना है – इसका पता भी नहीं । स्वामीजी! हमारे गाँव आकर मेरी पत्नी को चंगा करके उसे फिर चलने की शक्ति देना चाहिए । इस तरह उस आदमी ने अपनी आँखों में आँसू के साथ मुझे बुलाया । "मैं यहाँ ध्यान में रहकर, उसके बाद ही कहीं आ सकता हूँ ।" मैं बोला । वे बोले – "आप जब चाहें तब तक यहीं रहकर आपको साथ लेकर जाऐंगे ।"

व्यापारी और किसान को साथ लेकर पहाड़ पर चढ़ा । गुरुदेवजी के बताये हुए स्थान पहुँचने पर, उन दोनों को चार दिन के बाद आने को कहकर, गुरुदेवजी के सूचित स्थान पर ध्यान में बैठ

गया । मैं ने व्यापारी से कहा, “मैं कहाँ हूँ, इसे गाँव के किसी को भी प्रकट न करना ।” इसे बताकर उन्हें भेज दिया ।

मेरे ध्यान में होनेवाले चार दिनो में कई स्थितियाँ दृश्यों के रूप में दिखायी देती रहीं । हमारे दृश्यों द्वारा देखनेवाली कई स्थितियों को गुरुदेव जी स्पष्ट करके उपदेशित करके, अनुग्रह करने के बाद, कल आनेवाले किसान के गाँव जाने की अनुमति देकर गायब हो गये ।

चारवाँ दिन मेरे ठहरनेवाले जगह आकर व्यापारी और किसान मुझे साथ लेकर किसान के यहाँ गये । किसान की पत्नी वातरोग से पीड़ित होकर हाथ और पैर में बाधा होने से विस्तर में ही पड़ी हुई थी ।

उस रात को मैं ध्यान में बैठा । तब यह दृश्य दीख पड़ा ।

‘किसान की माता वात रोग के कारण हाथ पैर न चलने की तरह बिस्तर में पड़ी हुई वेदना के साथ कई बार बहू को (किसान की पत्नी को) बुलाती रहती थीं । तब बहू “शनीचर, हट नहीं सकती” – इस प्रकार धीमी स्वर में कहती हुई, सास को देखने निकट आयीं । “एक तरफ में मुझे हाथ पैर में दर्द होता है । मुझे उस तरफ़ ज़रा लोट दो” – इस प्रकार बतायीं । बहू तो, “तुम्हारे मर जाने से ही मुझे छुटकारा मिलेगा” – इस तरह बोलती हुई, अतीव घृणा के साथ सास को लुटाने को देखकर सास वेदना के साथ, “क्यों इस तरह मुझे कोसती हो? मुरुगा! (भगवान का नाम)” – इस प्रकार वेदना के साथ लंबी साँस ली । बहू गुस्से होकर “मुझसे इस तरह बोलती हो” – इस प्रकार कहती हुई गालियाँ देने पर सास भी वेदना के साथ कुछ बोली । बहू के गुस्से के साथ कोसनेवाली भावतरंगें,

सास की चेतनाओं में प्रेरित होकर, साँस में लेनेवाली भावतरंगें, सास के रक्त में मिश्रित होना दृश्य के रूप में दीख पड़ा । इसी तरह सास के शाप के साथ कोसनेवाली भावतरंगे बहू की चेतनाओं में प्रेरित होकर, बहू के साँस में लेनेवाली भावतरंगें बहू के रक्त में मिलना भी दृश्य बनकर दीख पड़ा ।

ऊपर कहने की तरह एक दस्रे को कई महीनों में याद करके, कोसते हुए, बोलने वाली भावतरंगें, अर्थात् बहू के सास को विचार करके कोसनेवाली भावतरंगें सास के शरीर पर क्रिया (विनै) बनकर उगती हैं । सास के बहू को विचार करके शाप के साथ बोलनेवाली भावतरंगें, बहू के शरीर पर “क्रिया” बनकर उगती हैं ।

सास वेदना के भाव के साथ बहू को विचार करते हुए, उस के शरीर से विलग होकर प्राणात्मा बाहर गया ।

“सास कब मर जाएगी?” – इसी वेदना के साथ तरसते रहने की स्थिति में सास के मरने को देखने पर, सास का प्राणात्मा बहू के साँस के आकर्षण में जाकर उसके रक्त में मिल जाता है । कुछ दिनों में बहू के शरीर में सास का प्राणात्मा संचालन करना शरू होकर, सास जिस रोग से वेदना में होती रहती थीं उसी वेदना को बहू अनुभव कर लेने की स्थितियाँ हुईं ।

मुझे दृश्यों बनकर दीख पड़ते समय गुरुदेवजी प्रत्यक्ष होकर, “इसके लिए तुम क्या करोगे?” – इस प्रकार पूछकर, उसके लिए कुछ रीतिरिवाज़ों को समझाकर उपदेशित किया । बाद में मैंने ध्यान से जाग उठा ।

किसान की पत्नी से – “क्या आप और आपकी सास अकसर

गुस्से में आया करती थीं?" मैं ने पूछा । 'हाँ' बताकर वे मान लीं । यदी मेरे कहने के अनुसार करेंगे तो रोग हट जाएगा । – इस तरह मेरे बताने पर वे बोलीं, "आप जिस तरह करने को कहते हैं उसी तरह हम करेंगे" ।

किसान के परिवार के सभी लोगों को ध्यान में बिठाकर, ध्यान करने के बाद आँखों को खोलने पर किसान की माताजी का नाम बताकर, "उनके प्राणात्मा को महर्षियों की कृपा प्रकाश से पवित्र होना चाहिए" – इस तरह परिवार के सभी लोगों को गुरुदेवजी के समझाये हुए मार्ग पर बताने को कहा । इस तरह दस दिन तक ध्यान करके कहते रहने से किसान की पत्नी दस दिनों में धीरे धीरे उठकर चलने लगीं ।

किसान के परिवार के सभी लोगों की खुशी की टिकाना नहीं हुई । किसान की पत्नी, "फिर एक बार भी किसी को भी मन में दर्द होने की तरह नहीं बोलूँगी ।" इस प्रकार प्रार्थना की । "यदी लगातार ध्यान करते रहें तो आपको अनजान में आनेवाले गुस्सा, क्रोध और भय हट जाकर आपके परिवार में कुशलता तथा संपन्नता पाकर जीवित रहेंगे।" – इस प्रकार आशीर्वाद देकर गुरुदेवजी के वचन के अनुसार तिरुवण्णामलै के लिए रवाना हुआ । लेकिन किसान मेरे साथ तिरुवण्णामलै तक आने के बाद लौटने को कहते हुए मेरे साथ रवाना हुए । गुरुदेवजी मुझे अकेले तिरुवण्णामलै को पैदल जाने के लिए बताने से कोई भी मेरे साथ नहीं आना चाहिए – इस प्रकार बताकर रवाना हुआ ।

(सूचना : किसान के घर में ठहरनेवाले दस दिनों में गुरुदेव जी के वचन के अनुसार रोज़ एक बार अन्न को पानी में गलाकर पिया करता था ।)

मैं तिरुवण्णामलै गया । अकेले दस मील चलना, दो घंटे आराम करना इस प्रकार चलकर रात को 8 बजे होने पर पेड़ के नीचे ध्यान में बैठता था । तब गुरुदेवजी कई स्थितियों को दृश्य तथा भावपूर्वक समझायेंगे । रात को लगभग 11.00 बजे पर लेटने को बतायेंगे । (मैं) लेट जाऊँगा । सबेरे लगभग 5.00 बजे उठकर चलना, चलकर बीच में इमली के पेड़ को देखने पर उसके पत्तों को तोड़कर थैली में रखकर, कुछ पत्तों को मुँह में डालकर चबाते हुए चलूँगा ।

इस तरह पाँच दिन चलते चलते, पाँचवाँ दिन शामको लगभग 3.00 घंटे के समय तिरुवण्णामलै की तलहटी आ पहुँचा । वहाँ के एक मठ में बैठा । कुछ देर में नींद आने से सो गया ।

अरुणगिरिनाथ की ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति

रात को करीब 7.30 बजे पर जाग उठने पर, मुझे कछ ही देर में गुरुदेव जी और कोई जगह को ले चले । वहाँ जाते ही अरुणगिरिनाथ के जीवन की स्थितियों को उपदेश करने लगे ।

यानी अरुणगिरी अपने धन के घमंड़ से स्त्रियों के मोह में पड़कर, कामपागलपन से कई स्त्रियों के शयनगृहें पहुँचकर फिज़ूलखर्ची से धन को खर्च करके, धन खोकर, स्त्रीरोग होकर, वह अधिक होने से कुष्ट रोग में बदलकर, शरीर की सुंदरता खोकर कुरूप हो गया । शरीर में खुजलाहट होने पर भी काम न बुझने से कामदाह से अपनी रूपाजीवाओं के पास जाने पर, रूपाजीवाओं तो अरुणगिरि के कुरूप आकार देखकर घृणा से थूकीं । रिश्तेदारों की घृणा, शहर के लोगों के हँसी उड़ाना, सारे धन को खोना और शरीर में खुजली

भिनभिनाना – ये सब होने पर भी अपने कामदाह से, काम न बुझने पर अपनी बहन से अपनी काम इच्छाओं के बारे में कहकर अपनी रखेलिओं के पास जाने के लिए रुपये माँगा अरुणगिरि ने ।

अपने भाई के पास होनेवाले पाश से उसके अज्ञात में वह अपनी इच्छाओं के बारे में मुझसे कहकर रुपये माँगता है – इस वेदना के साथ वे बोलीं – "तुम्हें अपनी इच्छा मिटाना ही है न? (अपने शरीर को दिखाकर) इस शरीर में अपनी इच्छाओं को मिट जाओ ।" इस प्रकार बोलती हुई बेहोश होकर नीचे गिरकर अपना प्राण खो गयीं । बहन की स्थिति देखकर अरुणगिरि अपने शरीर के जीवन पर घृणित होकर, अपने शरीर को मिटाने के विचार लेकर मीनार (गोपुर) के ऊपर चढ़कर नीचे गिरनेवाले ही थे, तब "कम से कम अगले जन्म में ही इस शरीर से विलग होनेवाला यह प्राणात्मा ऊँचे गुणवाले शरीर को पावें ।" ये भाव प्रेरित होकर आकाश की ओर देखकर तरसते रहने की स्थिति में, दैविक गुणों की चेतानाओं को होनेवाले एक सच्चे ज्ञानी का प्राणात्मा, अरुणगिरि के तरसते रहनेवाली साँस से आकर्षित होकर, रक्त में मिश्रित होने से, अरुणगिरि की चेतनाएँ सच्चे ज्ञान की चेतनाओं के रूप में बदल गयीं । उससे मीनार से नीचे न गिरकर सच्चे ज्ञान की चेतना से विद्वत्ता पाकर गीतें गाने की शक्तियाँ पायीं । इस तरह उपदेशित करके (गुरुजी ने) कृपा किया ।

अरुणगिरि के रक्त में निवास करनेवाले सच्चे ज्ञानी का प्राणात्मा, अपनी सच्ची ज्ञान की ताकत भरी भावतरंगों के आकर्षित करनेवाले को अरुणगिरि अपनी साँस पर लेने से, जब वह अरुणगिरि के प्राण में रगड़ता है तब उन्हें दैविक भावोंवाले गुणों को गाने देता है ।

साँस लेनेवाली सच्चे ज्ञान की ताकत भरी चेतनाएँ रक्त में मिलकर, रक्त के मांस तथा शरीर के अंगों पर मिश्रित होने से मांस तथा शरीर के अंगों में परमाणुतिशुएँ बन जाती हैं । उत्पन्न होनेवाली परमाणुतिशुएँ, सूक्ष्म परमाणुओं के रूप में उगकर, अरुणगिरि के प्राणात्मा के आकर्षण में जाकर, प्राण के अलिंगन में प्राणात्मा संचालित करता है । अरुणगिरि के रक्त में निवास करनेवाले सच्चेज्ञानी की ताकत भरा प्राणात्मा और भी अपनी उर्जा को बढ़ाता है ।

अरुणगिरि के शरीर में सच्चेज्ञानी की भावतरंगें दाखिल होकर संपन्नता पाते रहने से, अरुणगिरि अपनी ऊर्जा को बढ़ाते हुए, अपने देखकर जाननेवाली सच्ची स्थितियों को गीत और उपदेश के रूप में लोगों को समझाने लगे । इस तरह गाँव गाँव पर जाकर वहाँ के मंदिरों में अपने समझनेवाले दैविक गुणों के भावों को गाना तथा उपदेशित करनेवाली स्थिति में, उन्हें सुन्नेवाले लोगों को अरुणगिरि के प्रति भक्ति, प्रेम तथा पाश अधिक बढ़ने लगे ।

इसे देखकर ईर्ष्या होनेवाले मंत्रवादी लोग यानी पैशाचों को अपने कैवलय बनकर, यज्ञ करके, भगवान के नाम पर अनेक अद्भुतों को करके दिखाकर, लोग तथा राजा को धोखा देकर प्रशंसा पानेवाले मंत्रवादियों को अपनी प्रशंसा धीमित होते रहने को देखकर, अरुणगिरि को कई मुसीबतों को मंत्रवादी लोगों ने दिया । मंत्रवादियों की चालों की परवाह न करके, महासच्चाइयों की भावतरंगों की ऊर्जाओं को कई सालों में अपने अंदर विकसित करनेवाले प्राणात्मा को, प्रकाश के रूप में विकसित करके अपने शरीर से विलग होकर, ज्योति बनकर बाहर निकले (अरुणगिरि) । इन सभी स्थितियों को गुरुदेवजी ने दृश्य बनके दिखाकर समझाये ।

ऊपर कहने के अनुसार अरुणगिरि के जीवन में, अपने रक्त में निवास करनेवाले सच्चेज्ञानी के प्राणात्मा के विकास से अरुणगिरि का प्राणात्मा सच्चे ज्ञान को प्राप्त करनेवाला प्राणात्मा बनकर विकास पाता है ।

अरुणगिरि के रक्त में निवास करनेवाले सच्चे ज्ञानी का प्राणात्मा, अरुणगिरि के शरीर को चलाकर, सूरज से प्रकट होनेवाले चुंबकीय ऊर्जा को तथा ग्रहों, नक्षत्रों और सप्तऋषि मंड़लों से प्रकट होने वाली महाशक्तियों को पाकर, अपनी ताकत भरी भावतरगों से उत्पन्न होनेवाली सच्ची स्थितियों को गीत बनाकर गाना और गानेवाली गीतों को शब्द तरंगों के रूप में फैलाना –इस तरह अरुणगिरि के शरीर पर रहते हुए, महाशक्तिशाली प्राणात्मा के रूप में विकसित होकर, अरुणगिरि के शरीर से विलग होकर सच्चेज्ञानी का प्राणात्मा ज्योति रूप से निकलकर सप्तऋषि मंड़लों के घुमाव चक्त जा पहुँचता है ।

आवेश में नाचनेवालों की स्थिति

थोड़ी देर आराम करने के बाद, फिर उपदेश देने लगे । हर एक गाँव में 'गाँव की रक्षा करनेवाला दैव' नाम से एक दैव की पूजा करने वाले, अपनी कमियों, कष्ट नष्टों तथा रोगों को हटाने की अभिलाषाओं को लेकर प्रार्थना करके, जीवराशियों का बलिदान करके, उस शमय पम्बै, उरुमी मैळम् इत्यादी वाद्यों को बजाकर (जानवरों की तरह) भूँककर, जीभ को घुमाकर एक प्रकार का शब्द निकालकर, लोगों को आवेश होकर नचा देते हैं । ऊपर कहने के अनुसार वाद्यों की ध्वनियों को सुननेवालों की चेतनाएँ प्रेरित होती हैं ।

उस समय अपने कष्टों के बारे में सोचकर, वेदना के भाव से तरसते रहते समय, वेदना के भाव प्रेरित होकर, इसी तरह के भावों के साथ मृत्यु होकर हवा में तैरते रहनेवाले प्राणात्मा को आकर्षित करके, सांस लेना पड़ता है । तब आकर्षित होने वाले भाव रक्त में मिलकर दैव के नाम बताकर आवेश में आकर नाचने लगता है ।

इस तरह वेदना के भाव होनेवाला प्राणात्मा, रक्त में मिश्रित होते रहने से, हाथ पैर में पीड़ा, शरीरि का दर्द आदि संकट आ जाते हैं तथा पंबै इत्यादी वाद्यों की ध्वनी सुनने पर और मंदिर जाकर कपूर आराधनाओं को देखने पर उन्हें आवेश में आकर नचाते हैं ।

आवेश होकर नाचनेवालों के परिवार में कई प्रकार के कष्ट आने का कारण बनते हैं । ये लोग किसी भी व्यक्ति से बोलें तो सुन्नेवालों के मन में इनके प्रति घृणा होने के भाव प्रेरित हो जाते हैं । इस प्रकार के लोग अपने जीवन में हर एक संदर्भ में हताशा, संचलता, दुर्बलता, घृणा, भय, गुस्सा आदि भावों के उत्पन्न होने के कारण होकर सांस लेने से तरह तरह के रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

मंत्रवादी लोग तथा पैशाचिक दुनिया

इनके सांस लिए भावतरंगें रक्त में मिलकर, मांस के रूप में बदलते समय, परमाणुतिशुओं के रूप पाकर, रोगों को उत्पन्न कर देते हैं । रोगों को उत्पन्न करनेवाले परमाणुतिशुएँ, वेदनाओं को पैदा करनेवाले भावों के सूक्ष्म परमाणुओं के रूप में विकास पाकर, प्राण के आकर्षण में जाकर, प्राण के आलिंगन से प्राणात्मा बनकर संचालित होने लगते हैं ।

इस प्रकार के लोगों के मुत्यु होने पर, इनके प्राणात्मा मानव के शरीर प्राप्त करने की क्षमता खोकर पैशाचिक दुनिया में संचारन करना पड़ता है । इनके सांस में आकर्षित होकर, इनके रक्त में मिश्रित होनेवाले प्राणात्मा भी, इनके मृत्यु होने के बाद, (पुनर्जन्म में) मानव का शरीर प्राप्त करने की योगयता खोकर पैशाचिक दुनिया में संचारन करना पड़ता है ।

इन के प्राणात्माओं के पैशाचिक दुनिया में संचारन करने की स्थिति में मंत्रवादी लोग 'इक्षिणि' आदि हमलों को उत्पन्न करके रखकर, उसके युक्त मंत्रों को उच्चारण करके, ऊपर कहनेवाले जैसे प्राणात्माओं को अपने वश में लाकर 'कैवल्य' बनकर, धन कमाने के उद्देश्य से इस तरह के प्राणात्माओं को जादू-टोने से चलाकर दूस्रों को हानी पहुँचाने के लिए और पदार्थों को जासूसी से लाने के लिए प्रयोग करते हैं ।

इसी तरह जादू-टोने से, कष्ट झेलनेवाले लोगों पर इस तरह के प्राणात्मा को चलाकर वेदना को काबू में रखते हैं । आत्महत्या करनेवाले प्राणात्मा (पैशाच) किसी और शरीर में मिलकर कष्ट पहुँचाता तो इस तरह के आत्माओं को (उसपर) चलाकर काबू में लाते हैं । इस तरह काम करनेवाले मंत्रवादी लोग मर जाने पर अगले जन्म में मानव जन्म लेने को खोकर, पैशाचिक दुनिया पर संचार करते रहने की स्थिति में, दूस्रों के शरीर में यदि मिलना पड़ें तो उन शरीरों को कष्ट पहुँचाते हैं ।

ऊपर कहनेवाले सभी को दृश्य के रूप में दिखाकर समझाने पर "तुम आत्मशुद्धि करके लेट जाओ" । - इस तरह बताये । गुरुदेवजी के वचन के अनुसार आत्मशुद्धि करके मैं सोने लगा ।

कुमारपाळैयम् जाना

सबेरे होते ही करीब 6.00 बजकर उठने पर भूख लगने लगा। इमली के पत्तों को तोड़कर खाने के बाद ध्यान में बैठा। थोड़ी ही देर में गुरुदेवजी दर्शन करके, "तुम्हें तंग करता हूँ। – क्या इस प्रकार सोचते हो?" – इसे पूछकर हँसने के बाद "तुम तिरुत्तणि में देखनेवाला किसान, एक हज़ार रुपये को तुम्हें देने के लिए लाता है। उस के देनेवाले धन को लेकर, तुम एक सौ रुपये लेने के बाद बाकी को उनको आशीर्वाद के साथ दे दो।" इस प्रकार बताकर, "तुम कल 'कुमारपाळैयम' नामक शहर जाकर वहाँ अविनाशियप्पन को देख लो। उसके बारे में तुम्हें पता है। उसके घर पर नहीं ठहरना। वहाँ के 'पंड़री मंदिर' नामक भजन मठ में ठहरो। विभिन्न प्रकार के रोगियाँ, पैशाचों के वश में पड़नेवाले और दोषों से पीड़ित लोग आयेंगे। तुम्हें उपदेशित करनेवाली शक्ति को प्रयोग करके, तुम्हारे पास आनेवाले रोगियों को देखते समय, उनके शरीर में संचालित करनेवाली स्थितियाँ दृश्य बनकर दीख पडेंगी। उसे जानकर, समझकर, रोगों को हटाकर, उन्हें आनन्दित करो। इस प्रकार तुम्हारे करने पर मंत्रवादियों की आमदनी कम हो जाएगी। उससे मंत्रवादियाँ तुम्हें तंग करने लगेंगे। तुम उनको ध्यान से अच्छे उपदेशों को देकर भलाइयाँ करने की तरह उन्हें पक्व बनाओ। इस तरह उपदेशित करके कृपा किये।

गुरुदेव जी के कहने के अनुसार तिरुत्तणि से किसान मुझे खोजकर आकर हज़ार रुपये को "मेरे दक्षिणा के रूप में ले लीजिए" बताकर दिये। गुरुदेव जी के कहने अनुसार सौ रुपये को लेकर, बाकी रुपये को आशीर्वाद करके उनके हाथ में ही लौट दिया।

कुछ देर बाद किसान को आशीर्वाद करके गाँव जाने के लिए भेजकर, दिन भर तिरुवण्णामलै में रहकर, दूस्रे दिन सबेरे बस में कुमारपाळैयम् रवाना हुआ ।

कुमारपाळैयम में रागों को चंगा करना

गुरुदेवजी के कथन के अनुसार कुमारपाळैयम् आकर अविनाशियप्पन के बारे में पूछताछ करने पर पता लगा कि वे चिन्नप्पनायक्कन् पाळैयम् में हैं । वहाँ जाकर अविनाशियप्पन से भेंट करके विवरणों को कहने पर, वे मुझे पंडरीकोइल (मंदिर) ले चले । पड़री मंदिर के अधिकारी से विवरण देकर पूछने पर वे “ठीक है” कहकर मुझे एक कमरा अलग करके दिये । मैं वहाँ ठहरने लगा ।

दूस्रे दिन सबेरे रोगों को चंगा करने के लिए कुछ लोग आये । गुरुदेवजी के उपदेश के अनुसार रोगियों को देखते समय, रोगों की स्थितियाँ दृश्य बनकर दीखने लगीं । रोग के उचित आशीर्वाद देकर विभूति देने लगा । इसतरह करते रहने की हालत में रोगों को चंगा होने को देखकर, एक ही हफ़्ते में कई जगहों को फैलकर, लोगों की भीड़ अधिक होने लगी । गुरुदेवजी समय समय पर कई स्थितियों को समझाते रहते थे ।

हर एक दिन विभिन्न् प्रकार के, विविध पैशाचों से पीड़ित लोग आएँगे । उन्हें जब देखा, तब उनके शरीरों में पैशाचें जिन जिन प्रकारों से कार्यान्वित करते हैं उन सब को समझकर, गुरुदेवजी के उपदेशित उपाय के अनुसार रक्त में मिश्रित होनेवाली पैशाचों की भावतरंगों को बलहीन बनाकर, पैशाचों से पीड़ित लोगों से कुछ उपाय बताकर, इसके अनुसार करते रहने से पैशाचों की भावतरंगें

सिकुड़ होकर, आप कुशलता पायेंगे । – इस प्रकार बताकर उन्हें विभूति तथा नींबू के फलों को आशीर्वाद के साथ देकर भेजा करता था । इस तरह चार महीनों में लोगों की भीड़ के आना ज़्यादा होता रहता था ।

मंत्रवादियों से होनेवाले मुसीबतें

इसे देखकर वहाँ के मंत्रवादियाँ ईर्ष्या होकर, कई मंत्रवादियाँ एक साथ मेरे पास आकर, "तुम किस गाँव के हो?" पूछकर, धमकाकर, "कहीं से यहाँ आकर विभिन्न जादूगरी दिखाकर लोगों को धोखा देने की कोशिश करते हो" । इस तरह धमकाकर, अनुचित शब्दों से कोसते थे । तब वहाँ होनेवाले सब लोग मंत्रवादियों को देखकर भयभीत होने की स्थिति में चुप रहे थे । कुछ देर बाद जाते वक्त मंत्रवादियों ने बताया कि सबेरे होने के पहले इस शहर छोड़कर तुम नहीं चले जाएँ तो क्या घटेगा, मालूम है? इस प्रकार धमकाकर चले गये । मंत्रवादियों के जाने के बाद वहाँ के कई लोग बोले कि आपके चुप रहना ठीक हुआ । यदी आप किसी बातें करें तो आपको पीट भी सकते हैं पापी लोग । इस प्रकार बताकर दुख के साथ चले गये ।

मंत्रवादियों के मुझे धमकाते वक्त उनके शरीर में इक्षिणि का हमल किस किस प्रकार कार्यान्वित होता रहता था – इसे देखने का मौका मिलने से मैं खुश हुआ । लेकिन गुरुदेवजी तो इन्हें देखकर हँस रहने के बाद बोले कि तुम्हीं को इस तरह तंग करनेवाले सामान्य अनपठित जनता को किन किन प्रकार कष्ट पहुँचाएँगे – इसे तुम्हें जानने के मौके की स्थिति ही आज घटित घटनाएँ हैं ।

मंत्रवादियों के धमकाने को सुनकर अविनाशियप्पन, शक्तिवेल, शक्तिवेल के पिताजी, पण्ड़री मंदिर के दो अधिकारियाँ, सुन्दर राजू व नारायणन् और कई लोग आकर आश्वासन दिये कि हम आपके साथ हैं । फ़िकर मत कीजिए ।

दूस्रे दिन सबेरे करीब 5.30 बजकर मैं ने उठकर दरवाज़ा खोला । द्वार पर एक कपाल और उसपर एक यंत्र का पत्तर रखे थे । उन्हें निकालकर कावेरी नदी की ओर स्नान करने के लिए गया । तब मंत्रवादियों में से एक व्यक्ति मुझे देखकर 'टहरो' बताकर मुझे धमकाकर तलवार ऊँचे उठाकर मेरे पास आया । मैं हँसते हुए नदी की ओर नहाने गया । मत्रंवादी तलवार उठाते हुए कुछ देर वहाँ ख़डे होने के बाद चला गया । मैं नहाकर पंड़री मंदिर आकर आदत के अनुसार आने वालों को आशीर्वाद करके विभूति देता रहता था ।

रोज़ मंत्रवादी लोग मुझे सताते रहते थे । इसे जाननेवाले कई मित्र एकसाथ मेरे पास आकर बोले कि अगली गली में नारायणन् का एक घर ख़ाली पड़ा है । वहाँ आकर आप ठहरें तो सुरक्षित होगा । हमें भी आपकी देखरेख करना आसान होगा । इस प्रकार बताये । मैं बोला कि कुछ सोच विचार करने के पश्चात कहूँगा । "किसी न किसी प्रकार आप नारायणन् के घर में ही ठहरना चाहिए" – इस प्रकार वे निवेदन करने लगे । गुरुदेवजी ने भी अनुमति दी । मैं उसे मानकर नारायणन् के घर में ठहरने लगा ।

मंगळूर जाना

आदत के अनुसार लोग आशीर्वाद लेते जाते थे । इस तरह नारायणन् के घर में ठहरते समय मित्र सुन्दर राजु मेरे पास आकर बोले कि हमारी बुआ बहुत बीमार होकर मंगळूर में हैं । वे यहाँ ले आने की स्थिति में न होने से आप को मंगळूर आकर उनकी बीमारी को चंगा करना चाहिए - इस प्रकार प्रार्थना किए । मैं "कल बताऊँगा" कहकर उन्हें भेज दिया । गुरुदेवजी ने भी अनुमति दी । दूसरे दिन सुन्दर राजू आये । मैं बोला कि मंगळूर जाने की तैयारियाँ कीजिए । अगला दिन मंगळूर जाने के लिए मैं और सुन्दर राजू रवाना हुए ।

रात को रेलयात्रा करके सबेरे 3.00 बजकर मंगळूर में होनेवाले सुन्दर राजू की बुआ के घर जाकर वहाँ ठहरें ।

वहाँ दिनचर्या चुकाकर, स्नान करके ध्यान में बैठा । ध्यान से जागकर रोगी को आशीर्वाद देकर विभूति दी । उसके बाद भोजन करके सोफ़ा में बैठा । तब सुन्दर राजू के ससुर श्री सुब्रह्मण्यम अपनी कठिनाइयों की स्थितियों के बारे में बता रहे थे । तब श्रीनारायण सामि तथा श्री. श्रीनिवास राव आये । उस समय रोगी की तबीयत के बारे में मुझ से पूछकर जान लिये ।

कुछ देर बाद मेरे बारे में विवरणों को जानने की इच्छा प्रकट किए । मैं भी अपनी हालत में विवरणों को देते रहता था । "आप आराम कीजिए" - बताकर श्रीनारायणसामि तथा श्री श्रीनिवास राव घर चले ।

दूसरे दिन आदत के अनुसार ध्यान करके रोगी को आशीर्वाद करके विभूति दी । तब श्री नारायणसामि और श्री. श्रीनिवास राव वहाँ आये थे । सब लोगों को आशीर्वाद देकर विभूति को दिया । सबेरे भोजन लेकर बैठ गये ।

रोग की स्थितियों के बारे में (हम) बोल रहे थे । उस समय गुरुनाथजी के बारे में विवरणों को मैं बता रहा था । जब मैं गुरुदेवजी के कभी कभी गोरखनाथ, मच्छेन्द्रनाथ तथा शोलंगनाथ के बारे में कहा करते थे - इस प्रकार मेरे कहने पर श्री. नारायणसामि हमारे घर के पासवाली खत्री में गोरखनाथ, मच्छेन्द्रनाथ, और शोलंगनाथ की समाधियाँ हैं - इस तरह बताकर “खत्री जाकर समाधि देखेंगे” । इस प्रकार कहते हुए मुझे ले चले । वहाँ जाकर एक घंटा ध्यान में था । गुरुदेव जी दर्शण देकर वहाँ की स्थितियों के बारे में व्यारव्या दे रहे थे ।

यानी, मंगळूर को मंगळादेवी नामक रानी जब शासन करती थी तब मंगळादेवी मच्छेन्द्रनाथ को अपने वश में लेती थी । अपने गुरुजी मच्छेन्द्रनाथ को, गोरखनाथ ने अपनी मंत्र शक्ति के द्वारा मंगळादेवी से छुड़ाकर ले गये - इस तरह वहाँ की स्थितियों को दृश्य के रूप में दिखाकर स्पष्टीकरण करके, उपदेश देकर कृपा किये । बाद में मैंने ध्यान से जाग उठा ।

श्री नारायणसामि मुझे अपने घर ले गये । दोपहर उनके घर में भोजन लेकर कुछ देर आराम करने के बाद श्री. श्रीनिवास राव के घर जाकर, बाद में श्री. सुब्रह्मण्यम के घर आ पहुँचे ।

कोल्लूर में ध्यान

एक हफ़्ते में सुन्दर राजू की बुआ तन्दुरुस्त हो गयीं । मैं और सुन्दर राजू कुमारपाळैयम लौट आये । नारयणन् के घर में ठहरकर रोगों को हटाने के लिए आनेवालों को आशीर्वाद देकर, विभूति तथा नींबू के फ़लों को देता रहता था । इस तरह कुछ दिन गुज़र जाने के बाद गुरुदेवजी ने मुझे कोल्लूर जाने की आज्ञा दी । (अर्थात मूखांबिका मंदिर होनेवाला स्थल) इस विवरण को कुमार पाळैयम के लोगों से बताया । उनको मुझे कोल्लूर भेजने की चाह न होकर, बहुत शीध्र ही आपको कुमारपाळैयम् आना चाहिए – इस प्रकार निवेदन करते हुए मुझे भेज दिये ।

ईरोड़ से मंगळूर तक रेल में गया । मंगळूर में रेल से उतरकर चल रहा था । तब श्री. सुब्रह्मण्यम् ने मुझे देख लिया । वे दूध का व्यापार करते रहने से रोज़ रेल में आनेवाले दूध के बरतनों को लेने के लिए रेल्वेस्टेशन आने से मुझे देखने का मौका मिला । मुझे उनके घर ले जाने पर श्री. नारायणसामि तथा श्री. श्रीनिवास राव को ख़बर देने से वे भी मुझे देखने आये । उनसे “गुरुदेवजी मुझे कोल्लूर जाने के लिए बताए हैं । इसलिए मुझे कोल्लूर जाना चाहिए”– इस प्रकार कहने पर वे बोले कि हम भी आपके साथ मूखांबिका मंदिर आयेंगे । आज एक दिन मंलळूर में ठहरकर कल हम सब चलेंगे – इस प्रकार निवेदन किए ।

दूस्रे दिन बस में कोल्लूर चलें । वहाँ मूखांविका का दर्शन किये । श्री. नारायणसामि, श्री. श्रीनिवासराव तथा श्री. सुब्रह्मण्यम् तीनों बिदा लेकर मंगळूर चले गये । मैं गुरुदेवजी के कहने का स्थल जाकर ध्यान में बैठा ।

कोलमामहर्षि की तपोशक्ति जानना

मेरे ध्यान में बैठने का समय तीव्र वर्षाॠतु का समय था । गुरुदेवजी की आज्ञा के अनुसार पेड़ के नीचे बारिश में भीगता हुआ ध्यान में बैठा था । गुरुदेव जी प्रत्यक्ष होकर, हँसने के बाद, कोल मामहर्षि की तपोशक्ति तथा उनसे पानेवाली ताकत को स्पष्ट रूप से उपदेशित करने लगे ।

तब हमारे पृथ्वी का घुमाना दृश्य के रूप में दीखता है । उत्तर धृव तथा दक्षिण धृव ये दोनों तरफ़ बादल की तरह कुछ अंदर जाना दीखता है । पृथ्वी के ज़मीन के तल पर वह बादल का घनाव पहुँचने पर बरफ़ के पत्थर बनकर जम जाना दीखता है । पृथ्वी के घुमाव के चक्र में गरम होना दीखता है । पृथ्वी के घुमाकर भागने वाले रास्ते के किनारों पर छोटे पत्थर से लेकर बड़े बड़े चट्टान की तरह तैरते रहना दीखता है । चट्टान बनकर तैरते रहनों के बारे में गुरुदेवजी ने विस्तार से बताया ।

अर्थात ग्रहों, नक्षत्रों और सूरज से प्रकट होकर निकलनेवाली भावतरंगें, धूल और धूलकण संदर्भवश से कई सूक्ष्म परमाणुएँ मिलकर, इकट्ठा होकर, एकत्रित होनेवाले पदार्थ ही चट्टान के रूप में दीख पड़ते हैं । उन चट्टान रूपी पदार्थों के अंदर ताकतवाले परमाणुएँ होते हैं । हर एक चट्टान को प्रत्येक ढंग की ताकत है – इसे स्पष्ट किये ।

पृथ्वी के घुमाव से होनेवाली गर्मी के चक्र में चट्टानें (पदार्थ) फँसकर, भाप बनकर, परमाणुओं के रूप में भूआकर्षण में फैलना दीखता है । पृथ्वी के घुमाव के चक्र में गरम होने का घटना दीखता है ।

उससे निकलनेवाली आवाज़ 'ओ' – इस तरह नाद स्वरूप में कान में सुनाई पड़ती है । पृथ्वी के घुमाव के चक्र की गरमीय तरंगें भूआकर्षण के अंदर चलते समय, गरमी घटकर भूआकर्षण में फैलनेवाले विभिन्न भाव के परमाणुओं में हिलना दीखता है । घटने वाली गरमीय तरंगें बाहर निकलते रहने तथा पृथ्वी की आकर्षण में आकर ज़मीन पर "म्.....म्.....म्" बनकर थमते रहना दीखता है । तब गुरुदेवजी ने घटनेवाली गरमी की स्थितियों को विस्तार से बताया ।

यानी घटनेवाली गरमीय तरंगें पृथ्वी के आकर्षण पर आकर थमते रहने से पृथ्वी के अंदर और बाहर घटनेवाली गरमी होते ही रहने से, पृथ्वी की गरमी से पृथ्वी में सारे पदार्थ बाहर में वनस्पति राशि और जीव राशियों को जीवित होकर विकास पाने का कारण बनते हैं । पृथ्वी की गरमी से धृव स्थलों में होनेवाले बरफ़ के चट्ठानें पिघलकर, पानी बनकर सागर में मिश्रित होते हैं – इस तरह स्पष्ट किये ।

और भी गुरुदेवजी ने उपदेश करते हुए बताया कि पृथ्वी के नियम में कार्यकृत होनेवाली जो स्थितियों को कोलमामहर्षि अपनी तपोशक्ति के द्वारा समझें, उन्हें तुमने अब दृश्य के रूप में देखा है न? इस तरह अपने समझनेवाली ऊर्जाओं को अपने अंदर पाकर, अपने प्राणात्मा को प्रकाशमान स्थिति के रूप में बदलते रहने की हालत में अपने अंदर विकसित कर लेनेवाली ऊर्जाओं की स्थितियों को काव्य के रूप में जोड़कर दैविक कार्य के नाम से 'मूखांबिका' नाम रखकर, इन दैविक स्थितियों को काव्य के रूप में सृष्टी करके सामान्य लोग भी दैविक स्थितियों को प्राप्त करने की तरह कृपा किए ।

"ओम्" – इस प्रणव की सच्ची स्थिति

जब पृथ्वी घुमाता है तब उत्पन्न होनेवाली गरमी से प्रकट हानेवाली गरमी की लहरें "ओ" रूपी नाद बनकर, "ओंकार" रूप में फैलकर, नाद घट हो जाकर, भूआकर्षण से ज़मीन के तल तक आ पहुँचते समय 'म्' बनकर थम हो जाना तथा इसी स्थिति लगातार कार्यान्वित होने से "ओ...म्...ओ...म्....म्..." के नाद बनकर गरमीय तरंगें हर एक गुण में " ओम् " रूपी प्रणव, हर एक परमाणु को भी मूल हो जाने से, मंदिरों में हर एक दैविक गुणों के नाम बताने के पूर्व में "ओम्.... म् – इस प्रणव को जप करने का सूक्ष्म यही है"। – इस प्रकार गुरुदेवजी ने कृपा की ।

ब्रह्माण्ड में फैलनेवाले पत्थर, चट्ठानें तथा विषैली धूलकण भूआकर्षण से यदी राक्षसीय तेज़ी से पृथ्वी पर आ गिरें तो पदार्थों तथा जीवराशियों को बहुत खतरा हो जाएगा न? इनको "राक्षस" नामधारण करके, बह्माण्ड़ में फैलनेवाले बड़े चट्ठानें, धूल, विषैली धूलकण – आदि पृथ्वी के घुमाते समय होनेवाले अत्यधिक गरमी के घुमावचक्कर में फँसकर भाप, धूल तथा परमाणुओं के रूप लेकर बदलने वाले घटनाओं के कार्यों को, यानी अत्यधिक गरमी से आनेवाले नाद **"ओंकार"**, और अत्यधिक गरमी को **"ओंकार काळी"** – ये नाम रखकर, उस कार्य के रूप में ओंकार काळी राक्षसों को मिटाकर हमें रक्षा करती हैं – इस प्रकार पृथ्वी के अत्यधिक गरमी की स्थितियों के सूक्ष्म कार्यों को काव्य के रूप में अनुग्रहित किये ।

दैविक गुणों की स्थितियाँ

पृथ्वी के घुमाव चक्र में उत्पन्न होने वाली अत्यधिक गरमी की लहरें भूआकर्षण में फैलते समय गरमी घट होकर, घट होनेवाली गरमीय तरंगें पृथ्वी पर फैलते रहनेवाले परमाणुओं को और पृथ्वी के सारे पदार्थों को संचालित करने का कारण बनती हैं – इन सूक्ष्म स्थितियों के कार्यों को **"पराशक्ति"** – यानी पृथ्वी के सारे पदार्थों, वनस्पति वर्गों तथा जीववर्गों को घट होनेवाली गरमीय तरंगों के संचालन करनेवाली स्थितियों को ही "पराशक्ति" – इस प्रकार नामधारण करके अनुग्रहित किये ।

पृथ्वी की फैलकर घट हो जानेवाली गरमी की तरंगें हर एक भावतरंगों तथा परमाणुओं में थम होकर, चुंबक बनकर, जमा होकर, एक दस बनकर, उत्पन्न होकर विकास करनेवाली स्थिति ही **"महालक्ष्मी"** – यानी पृथ्वी के सारे पदाथों तथा वनस्पति वर्गों को सार बनकर उगने की स्थितियों को ही **"महालक्ष्मी"** – यह नामधारण करके अनुग्रहित किये ।

पृथ्वी में उगनेवाले सारे पदार्थों, सारे वनस्पति वर्गों और सारे जीवराशियों को, हर एक गंध, गुण और स्वाद होते हैं न? नीम के पेड़ के पत्तों को सूंघने पर कडुआपन की गंध को जानने देता है । स्वाद लेने पर कडुआपन के भाव को जानने देता है । उसे निगलने पर वमन के गुण के कार्य को चलाता है । आँखों से नीम को देखते ही यह कडुआ है – उस वमन के गुण की स्थिति को जानने देता है । लेकिन वमन के गुण को जानते ही उसे घृणा करने देता है । "जान लेने की स्थिति" को ही "ज्ञान" और कार्यों को "महासरस्वती" –

यानी नींबू के पेड की तरह पृथ्वी के सारे वनस्पति वर्ग तथा सारे जीववर्ग अपने अपने विकसित कर लेनेवाले भावों के सार के अनुसार, गुणों की गंधों को, हर एक बाहर निकालते समय, हर एक के भाव के गुणों की स्थिति को जानकर कार्यान्वित होते हैं न? इस स्थिति को 'ज्ञान' तथा ज्ञान के कार्यों को **"महासरस्वती"**- इस प्रकार नामधारण करके अनुग्रहित किये ।

भूआकर्षण से ज़मीन पर दाखिल होनेवाले नीम का पेड़ भूआकर्षण की सहायता से ज़मीन पर होनेवाले पानी, हवा में तैरते रहनेवाली घट हो जानेवाली गरमीय तरंगों, अपने वर्ग के भावतंरगों तथा अपने वर्ग की भावतंरगों (नीम का) के सारों को अपने अंदर आकर्षित करके इकट्ठा कर लेने से, घटित गरमीय तरंगों के संचालन से अपने अंदर ले जानेवाली शांत रूपी भावतंरगों के (नीम के) सार पानी में मिलकर नीम के पेड़ बनकर उगनेवाली स्थिति में, नीम की गंघ, गुण और स्वाद को बाहर प्रकट करता है ।

नीम के पेड़ को चलाकर विकसित करनेवाले गरमी की लहरों की ऊर्जाएँ	"गरमी" "पराशक्ति"
नीम के भावों के सार नीम के पेड़ बनकर चुंबकीय स्थिति में उगनेवाली ऊर्जाएँ	"चुंबक" "महालक्ष्मी"
नीम के पेड़ बनकर उगकर, उसके भाव के सार उसकी गंध, गुण तथा स्वाद को प्रकट कर देनेवाली ऊर्जाएँ	"ज्ञान" "महासरस्वती"

चट्टानों दूसरे पदार्थों इन सब को संचालित करने वाली गरमीय लहरों की ऊर्जाएँ	"गरमी" "पराशक्ति"
विभिन्न भावों के सार जम होकर, चुंबक, चट्टान तथा पदार्थों के रूप में उगने वाली ऊर्जाएँ	"चुंबक" "महालक्ष्मी"
चट्टानों और पदार्थों के रूप में उगकर, अपनी अपनी गंध, गुण और स्वाद को प्रकट करके जान ले सकनेवाली ऊर्जाएँ	"ज्ञान" "महासरस्वती"
प्राण के धड़कन की गरमी की लहरों को आकर्षित करके शरीर को संचालन करने वाली ऊर्जाएँ	"गरमी" "पराशक्ति "
प्राण के धड़कन के चलाव से, अपने लेनेवाले भाव तथा भावों के सार शरीर को चुंबक बनकर विकसित करनेवाली ऊर्जाएँ	"चुंबक" "महालक्ष्मी"
प्राण के धड़कन से आहार तथा भावों को शरीर के रूप में विकसित कर लेनेवाली स्थितियों के अनुसार भावों के गुण कार्यान्वित होकर जान ले सकने वाली ऊर्जाएँ	"ज्ञान" "महा सरस्वती"

ऊपर कहने की तरह पृथ्वी के हर एक पदार्थ में तीन स्थितियाँ बनकर संचालन करनेवाली ऊर्जाएँ - यानी संचालन करना, उगाना तथा जानना - ये स्थितियाँ ही शक्ति, लक्ष्मी और सरस्वती होती हैं ।

इन तीन ऊर्जाओं को एक दूस्रे की सहायता से एक के अंदर एक मिलकर उगने तथा जीवित करने की ऊर्जाओं को "मूखांबिका" नामधारण करके कोलमामहर्षि ने अनुग्रहित किया ।

विभिन्न प्रकार के गुणों की भावतरंगों के अंदर गरमीय चुंबकीय परमाणुएँ मिश्रित होते रहने से, भाप बननेबाले बादल और विभिन्न ताकत भरी भावतरंगें ज़रा हिलने से, एक के साथ एक मिलकर, एकत्रित होकर, एक से एक रगड़ने के संदर्भ में होनेवाली गरमी को **"अंतर्यामी"** और एकत्रित होकर भाप बननेवाले बादल, विभिन्न गुणों की भावतरंगें तथा चुंबकीय परमाणुएँ एक साथ मिलकर, गरमी से पदार्थ के रूप लेने के संदर्भ को **'ब्रह्मा'** और पदार्थ के रूप लेकर उगनेवाले पदार्थों से प्रकट होनेवाली भावतरंगों की गंध, गुण तथा स्वाद की ऊर्जाओं को (ज्ञान) **"सरस्वती"** इस प्रकार अनुग्रहित किए ।

रूपधारण करनेवाले संदर्भ 'ब्रह्मा', रूप धारण करनेवाले पदार्थ को जान लेने की स्थिति को सरस्वती (ज्ञान) - ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती इस प्रकार बताए हैं ।

ऊपर बताने की तरह छोटी सी चीज़ के रूप पाकर, बड़ा पदार्थ बनकर विकसित होकर "**परम् पोरुळ**" (पोरुळ - पदार्थ)- रूपी पृथ्वी को "**शिव**" कहते थे । पृथ्वी के भावों को चलानेवाली गरमीय तरंगों को "**शक्ति**" कहते थे ।

उदाहरण के लिए देखें । हमारा शरीर **"शिव"** है । शरीर के भीतर चलनेवाली भावतरंगों को चलानेवाली गरमीय तरंगे **"शक्ति"** बनकर संचालन करके हमें विकसित करते हैं न?

इसी तरह पृथ्वी भी **"शिवशक्ति"** बनकर संचालन करती है – इस प्रकार कहते थे । अर्थात विभिन्न प्रकार की भावतरंगों की शक्तियाँ एक दूसरे के साथ इकट्ठा होकर एक **'शिव'** बनती हैं । एक शिव तरह तरह की शक्तियाँ बनकर संचालित करता है ।

पृथ्वी जब घुमाती है तब उत्पन्न होनेवाली गरमी **"विष्णु"** होती है । यानी पृथ्वी के घुमाने को सूचने के लिए विष्णु के एक हाथ में चक्र तथा पृथ्वी के घुमाते समय होनेवाली गरमी से रचित नाद को सूचित करने के लिए दूसरे हाथ में शंख, गरमी के उत्पन्न होने की स्थिति को सूचने के लिए विष्णु के माथे के मध्ये लाल श्रीचूर्ण और लाल के दोनों तरफ सफ़ेद श्रीचूर्ण होते हैं । अर्थात पृथ्वी के घुमावट से प्रकट होनेवाली चुंबकीय लहरें ब्रह्माण्ड में फैलनेवाली चुंबकीय तरंगों से रगड़ने पर उत्पन्न होनेवाली गरमी को सूचने के लिए माथे पर नामम् – दोनों तरफ़ सफेद और मध्ये लाल हैं – इस प्रकार कहे ।

पृथ्वी के घुमाते समय रचित गरमी भूआकर्षण में गरमीय तरंगें बनकर फैलते समय पृथ्वी पर फैलनेवाली अनगिनत विभिन्न भावतरंगों के सारों के अंदर थमकर, वे भावतरंगें पृथ्वी पर पंजीकृत होकर, पंजीकृत होनेवाली भावतरंगों के सार धूलकण, रेत, मिट्टी, पत्थर, चट्टान और पहाड़ों के रूप पाकर विकसित होने का कारण बनते हैं । उनसे प्रकट होनेवाली भावतरंगों के सार मशरूम (कुकुरमुत्ता), घास पूस, पौधे, लताएँ और पेड़ बनकर उगने का कारण हो जाते हैं ।

पौधे, लताएँ जैसे वनस्पति राशियों से प्रकट होने वाली भावतरंगों के सारों को प्राणाणु आकर्षित करके, आकर्षित करने वाले वनस्पति राशियों के सार, प्राण के शरीर बनकर, उगकर, यानी कृमि, कीड़ा, मकोड़ा, छिपकली, साँप, पक्षी, जानवर इस तरह मानव तक रूपधारण करने के लिए सार के रूप में जम होने का कारण बनकर शांत बनकर उगानेवाली ऊर्जाएँ ही **"महालक्ष्मी"** तथा विष्णु की पत्नी महालक्ष्मी है – इस प्रकार अनुग्रहित किये ।

भाप होनेवाले बादल, चुंबकीय परमाणुएँ, विभिन्न गुणोंवाली भावतरंगें और विविध धूलकण	"आदिशक्ति"
भाप बननेवाले बादल, गरमीय चुंबकीय परमाणुएँ तथा विविध गुणोंवाली भावतरंगें थोड़ी हिलाव से इकट्ठा होकर, एकत्रित होकर, एक दूस्रे पर रगड़ने से रचनेवाली गरमी	"अंतर्यामी"
भाप बननेवाले बादल, गरमीय चंबकीय परमाणुएँ, विभिन्न गुणोंबाली भाव तरंगों के सार – ये सब जमा होकर, एकत्रित होकर, एक दूस्रे से मिलकर, गरमी से उत्पन्न होनेवाले संदर्भ की ऊर्जा	"ब्रह्मा"

ऊपर कहने की तरह दो पदार्थों के रूप लेकर बड़ा पदार्थ – परम् – का रूप पाकर पृथ्वी बनना	“शिव”
पृथ्वी का संचालन	“शक्ति”
ब्रह्माण्ड़ में पृथ्वी को परम् के रूप में देखना	“परम्शिवम्”
पृथ्वी रूपी परम्शिवम् के भीतर विभिन्न भावों को चलानेवाली ऊर्जाएँ	“पराशक्ति”
पृथ्वी के घुमाते समय घुमाने के चक्कर में रचने वाली गरमी	“महाविष्णु”
गरमीय तरंगें पृथ्वी पर फैलनेवाले सारों में थमकर, वे सार एक दूस्रे के साथ मिलकर चुंबक के रूप में उगनेवाली ऊर्जाएँ	“महालक्ष्मी”

ऊपर कहने के अनुसार कोलमामहर्षि अपनी तप की ताकत से ग्रहों की महाऊर्जाओं जानकर, समझकर अपने अंदर जिसतरह महाऊर्जाओं को प्राप्त करके प्राणात्मा को ज्योति रूप में विकसित कर लेते थे – इन महासच्चाइयों को दृश्य तथा भावपूर्वक उपदेशित करके कृपा किये ।

ध्यान से जागने के बाद दीख पड़ा कि मेरे शरीर में कई जोंकें काटकर रक्त को पी रही थीं । कई जोंकें रक्त पीकर सूजकर ज़मीन पर गिर पड़ी थीं । जोंकों के काटने के जगहों पर से रक्त टपक रहा था । इसे देखते ही मेरा शरीर रोमांचित होने लगा । इसके पहले मैं ने जोंकों को नहीं देखा था । इसलिए मैं भ्रम में पड़ा था । तब गुरुदेव जी ने हँसकर कहा कि मानव के रक्त पीनेवाली जोंकों के शरीरों में रक्त सूक्ष्म परमाणु बनकर उगते हैं । जोंक के प्राण के आकर्षण में सूक्ष्म परमाणु प्राण के साथ जोड़कर प्राणात्मा बनता है । जोंक के मर जाने के बाद मानव के भाव की गंध के साथ जोंक का प्राणात्मा हवा में तैरता है । इस तरह का प्राणात्मा आसानी से मानव के आकर्षण में चला जाता है । सांस लेते समय मानव के रक्त में मिलकर इन्द्रिय के अंदर चला जाता है ।

उदाहरण के लिए देखें । बरेट जिस तरह कीड़े को अपने नीड़ पर रखकर कीड़े को डंक मारते ही बरेट के विष रूपी अम्ल, कीड़े के शरीर पर बहकर, मिलकर, बरेट का रूपधारण करनेवाले परमाणुतिशुएँ बनकर विकास पाकर बरेट का रूप पाता है, उस तरह मानव के इंद्रिय में मिलनेवाले जोंक का प्राणात्मा, मानव का रूप लेनेवाला हमल बनकर विकास पाता है । इस तरह इंद्रिय में उगनेवाला हमल, मानव के मर जाने पर उसके शरीर से विलग होकर हवा में, आकाश में तैरता है । इसी तरह सात मानवों के शरीरों पर जाकर हर एक मानव के शरीर में शनैः शनैः विकास होकर सातवाँ मानव के शरीर में मानव रूपधारण करने लायक हमल बनने की ताकत पाता है जोंक का प्राणात्मा – इस तरह कहते हुए मेरे कान में फूंके । मेरे शरीर से रक्त चूसते रहनेवाली सभी जोंकें नीचे गिरीं । बूँदा-बूँदी पानी बरस रहा था ।

नहाकर आने के लिए कहे । समीप में होने वाले नदी जाकर नहाने के बाद, हाथ में होनेवाले खजूर फल में से दो को खाकर थोड़ा पानी पीकर ध्यान करने वाले स्थान को पुनः आकर ध्यान में बैठा ।

मानव के शरीर को संचालन करनेवाले विष्णु, ब्रह्मा, शिव - ये तीन दैविक क्रियाओं से कैसे मानव का शरीर गतिशील होकर रूप धारण पाता है - इस तत्व को उपदेश करने लगे ।

विष्णु रक्षा करता है

प्राण की धड़कन से, मानव के शरीर में होनेवाले भावों के परमाणुएँ गरम हो जाते हैं । गरमी शरीर को संचालित करता है । शरीर के चलाने से सांस लेते समय "सो....ह.....म्, सो...ह....म्" इस तरह नाद बन जाते हैं । यानी सांस को आकर्षित करते समय, "सो..." रूपी नाद बनकर शरीर के अंदर चलता है । बाहर निकलते समय "ह" रूपी नाद में बदलकर, बाहर आते समय "म्" रूपी सांस बनकर निकलता है । इस तरह प्राण की धड़कन से संचालित होनेवाले क्रियाओं को "विष्णु" कहते हैं ।

अर्थात् गरमी, संचालन, नाद इस तरह तीन स्थितियों में गतिशील होकर मानव को जीवित कराने की स्थिति ही "विष्णु रक्षा करता है" - इस प्रकार कृपा किये ।

ब्रह्मा सृष्टी करता है

शरीर में लेनेवाला आहार तथा सांस में लेनेवाली विभिन्न भावतंरगें, रक्त में मिलकर, रक्त मांस में मिलकर, गरमी से

परमाणुतिशुओं के रूप पाकर, परमाणुतिशुओं से शरीर का रूपधारण करनेवाला घटना ही "ब्रह्मा" है । – इस तरह कृपा किये ।

शिव विनाश करता है

शरीर के सांस में लेनेवाली भावतरंगें शरीर के भीतर छिप हो जाती हैं । अंदर लेनेवाले आहार के सारों को शरीर के भीतर छिपा लेता है । आहार की गंध, गुण, रंग और स्वाद – इन सब को अपने अंदर छिपाकर अपनाने की स्थितियों को ही "शिव विनाश करता है"– इस प्रकार अनुग्रह किये ।

ऊपर कहनेवाले तीन दैविक कार्यों को दृश्य तथा भावपूर्वक उपदेशित करके कृपा किया गुरुदेव जी ने ।

गुरुदेव जी हमें उपदेशित करके कृपा करनेवाले ध्यान के नियम को इसे पढ़नेवाले सभी लोगों को प्राप्त करना चाहिए – इस महा अभिलाषा से इसके साथ ध्यान करने के नियम को बहुत विस्तार से जोड़े हैं ।

धृव ध्यान

अगस्त्य मामहर्षि अपने अंदर होनेवाले ज़हर को दबाकर, पृथ्वी के धृव के द्वारा आकाश की ऊर्जा को अपने अंदर सूँघकर, जिसे सीमा रखकर जिसे सूँघे, उसकी ऊर्जा को अपने अंदर पानेवाले हैं । अगस्त्य इस पृथ्वी पर जीवित करते समय हर एक के भाव को सूँघकर, जानकर, उसे अपने अंदर विकसित करके, उसकी ताकत को अपने अंदर बढ़ानेवाले हैं ।

अगस्त्य अपने अंदर विकसित करके उगनेवाली महा ऊर्जाओं को अपनी पत्नी की ओर बहाकर 'अपनी पत्नी को भी सच्चे भाव की स्थिति पानी चाहिए । उसके द्वारा, अंधेरे को हटाकर अर्थ समझने की ताकत पानी चाहिए और अपनी पत्नी को उसके अंदर अनजान में जमा होनेवाले जहर को दबाकर, उस के अंदर जमा होनेवाले भावों को प्रकाश के भाव की स्थिति के रूप में बदलना चाहिए । – इस प्रकार अगस्त्य ने अपने कृपाभावों को अपनी पत्नी को प्यार से प्राप्त कराया ।

अगस्त्य की पत्नी, अपने पति के प्यार से प्राप्त कराने वाले कृपाभावों की स्थितियों को अपने अंदर जोड़कर, उगकर, उस स्थिति से महाआनंद के भाव की स्थितियों को जानकर इन्हें अपने पतिवर से ही प्राप्त करें – इसे समझकर अपने प्राप्त किये महा आनंद के भाव की स्थितियाँ, अपने पतिवर के अंदर और भी उगनी चाहिए । उन्हें ऊँची ऊर्जाओं को पानी चाहिए । उनकी कृपा की सहायता से अपने भीतर कुपाशक्तियाँ बढ़नी चाहिए – इस भाव को अपने अंदर उगकर, अपने पतिवर के भावों के साथ अपने भावों को दो न होने की तरह जोड़कर, दो भावों को एक ही भाव के रूप में एकत्रित करके धृव की ऊर्जाओं को अपने अंदर विकसित कर लेती थीं ।

अगस्त्य और उनकी पत्नी अपने भावों को एक भाव बनकर, जहर को दबाकर, अच्छे प्रकाश के भाव को अपने अंदर विकसित करके, दो प्राणों को एक प्राण बनकर, धृव की ऊर्जा को सूंघकर, अपने भीतर विकसित करके, धृव नक्षत्र बनकर किसी को भी दबाने तथा उत्पन्न करने की स्थिति के रूप में रूपधारण किए । वे आज भी आकाश में पृथ्वी के धृव के भाग में धृव नक्षत्र बनकर 'सदैव

सोलह' बनकर, अविनाश प्रकाशमान शरीर के रूप में जीवित होकर उगते रहते हैं ।

तड़के 4.30 बजे से 6.00 बजे तक धृव नक्षत्र की कृपा ऊर्जाओं के भाव हमारे पृथ्वी में अधिक मात्रा में फैलते हैं । तब पति और पत्नी एकसाथ बैठकर धृव नक्षत्र की कृपा ऊर्जाओं को याद करके, तरसकर ध्यान करते समय, धृव नक्षत्र से प्रकट होनेवाले कृपाभावें आपके अंदर फैलकर, आपके जीवन में आनेवाली बुराइयों को जीतनेवाली शक्ति बनकर आपके अंदर उगते हैं ।

जीवन में आनेवाली बुराइयों को हटाकर, अर्थ समझकर कार्यान्वित होने की ताकत को उगने के लिए, महा मोक्ष, महास्थिति रूपी अविनाश प्रकाशमान शरीर के जीवन प्राप्त करने की स्थिति के लिए और अपने भीतर धृव महर्षि की कृपाऊर्जा के भावों को जोड़कर उगने की स्थिति पाने के लिए, गृहस्थ धर्म को सुधर्म बननेवाले धृव ध्यान करने की रीति को नीचे दिये हैं । इसलिए इस राह पर, तड़के 4.30 बजे से 6.00 बजे के अंदर पति व पत्नी दोनों एक साथ धृव ध्यान में बैठकर, नीचे सूचित करनेवाले ढ़ंग से धृव ध्यान को अनुसरण करके, धृव महर्षि के कृपाज्ञान भावों को अपने अंदर बढ़ाकर, आप लोग महाआनन्दमय महा जीवन प्राप्त करके, जीवित होकर उगने के लिए हमारी कृपापूर्ण आशिषें पावें ।

आत्मशुद्धि करने का नियम

ध्यान करनेवाले आत्मशुद्धि को नीचे देखने की तरह करना चाहिए ।

"माता और पिता की कृपाआशिषों और ज्ञानगुरु, सर्गुरु देव की कृपाआशिषों से 'धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें प्राप्त करने की कृपा करें ईश्वरा' – इस प्रकार आँखों को खोलकर एक मिनट तक तरसते रहने के बाद, आँखों को बंद करके, 'धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, हमारे रक्त के नलों में मिलकर, हमारे रक्त के नलों में होनेवाले सारे जीवान्माओं और जीवाणुओं को पाने की कृपा करें ईश्वरा" ।

धृव ध्यान, संयुक्त ध्यान, पूर्णिमा ध्यान और कुटुम्ब ध्यान करने के नियम

ओं ईश्वरा गुरुदेवा

(तीन बार कहना है)

भगवान की स्तुति

माता और पिता ही पहला दैव हैं ।
उनकी पूजा रोज़ पहला कर्तव्य है ।

आप की कृपा से गुरु की कृपा पाऊँ!
गरु की कृपा से दुनिया जानूँ!
महर्षियों की कृपा शक्ति पाने, मुझे
रूप दिये माता और पिता!
माता और पिता ही पहला दैव हैं ।
उनकी पूजा रोज़ पहला कर्तव्य है!

मेरे शरीर का प्राण कौन है – यह जानूँ!
मेरे शरीर के भाव की लहर को आत्मा – यह भी जानूँ!

आत्मा के रूप और हमल शरीर का चलन यह भी जानूँ!
जीवन में समझे भाव को
अच्छा प्रकाशमय भाव बन पावूँ!

माता और पिता ही पहला दैव हैं ।
उनकी पूजा रोज़ पहला कर्तव्य है!

मेरे गुरुजी की राह महर्षियों की कृपा शक्ति पावूँ ।
मेरे शरीर के जीवन में पवित्रता पावूँ ।

प्राण में प्रकाश की स्थिति पाने
भाव को पवित्र बन जाऊँ!
गुरु की मदद से भाव को पवित्र बन जाऊँ!
प्राण में प्रकाश की स्थिति पाकर
आकाश के प्रकाश को पाऊँ –
गुरु की मदद से आकाश के प्रकाश को पाऊँ ।।

माता और पिता ही पहला दैव हैं ।
उनकी पूजा रोज़ पहला कर्तव्य है!

गुरु की कृपा गीत

ओम् ईश्वरा गुरुदेवा करुणास्वरूपा!
मुझे अपनाकर कृपा करें गुरुदेवा!

ओम् ईश्वरा! ओम् ईश्वरा!

आदि शक्ति की कृपा पाये ईश्वरा! गुरुदेवा!
मुझे अपनाकर कृपा करें गुरुदेवा! करुणास्वरूपा!

ओं ईश्वरा! ओं ईश्वरा!

मेरे गीत के अनुकूल हो जावे तुम!
मेरे याद में तुम ही आवे!

तुम्हारी कृपा पाने लिए
मेरे याद को तुम्हें सौंप दिया ईश्वरा!

ओं ईश्वरा! ओं ईश्वरा!

मैं न हूँ, तुम बिन इस दुनिया में
सभी यादों को पाने लिए
मुझे कृपा करें ईश्वरा !

ओं ईश्वरा! ओं ईश्वरा!

सिर्फ़ गीत को गाकर मैं
कई यादों में न होकर
परिपक्व स्थिति को मुझे कृपा करें ईश्वरा!

ओं ईश्वरा! ओं ईश्वरा!

अपने याद को कहीं ओर घुमाकर मैं
अपनी इच्छा अपने अंदर बिना उगकर
मेरे अंदर सदैव ही रह जावें ईश्वरा!

ओम् ईश्वरा! ओम् ईश्वरा!

अपनी इच्छा अपने अंदर बिना उगकर
मेरे अंदर सदैव ही रह जावें ईश्वरा!

ओम् ईश्वरा! ओम् ईश्वरा!
ओम् ईश्वरा! ओम् ईश्वरा !

(गीत गाने के बाद सब लोग अपने अपने प्राणों को भ्रू के मध्ये "ईश्वरा" – मानकर इस प्रकार दो बार एक साथ बताइये ।)

"ओं ईश्वरा गुरुदेवा ! ओं ईश्वरा गुरुदेवा !"

अब 'ओं ईश्वरा गुरुदेवा' – इस प्रकार बताने पर आपका प्राण 'ईश' बनकर, आपके शरीर के अंदर होनेवाले सब को प्राण ही गुरु हो जाता है । इसलिए 'ओं ईश्वरा गुरुदेवा' बताते समय, आपके प्राण रूपी 'ईश' की प्रार्थना करके आँखों की याद को भ्रू के मध्ये रखकर, तरसकर रहिए ।

"ओं ईश्वरा गुरुदेवा ! ओं ईश्वरा गुरुदेवा !"

हमारे जीवन में दूस्रों के झेलनेवाले कष्टों को हम सुनकर, सूंघकर जानते समय वे भाव हमारे रक्त के नलों में मिलकर उनके झेलने वाले सभी वेदना के भाव और कष्ट के भाव हमारे रक्त के नलों में मिल जाते समय कलंक हो जाता है । इसलिए उसी समय हमारे भाव भी कमज़ोर हो जाते हैं । यह दिन ब दिन हमारे अंदर अधिक मात्रा में मिल जाते वक्त भलाई के भाव होनेवाले सभी परमाणुएँ कमज़ोर हो जाने से हमारे अंदर रोग की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ।

मान लें कि हम अब साधारणत: एक काम करते हैं । हमारे हाथ पर गंदगी पड़े तो उसे धो देते हैं । शरीर पर पड़ें तो नहा लेते हैं । कपड़ों पर पड़ें तो उन्हें धो देते हैं । इसी तरह हमारे जीवन में दूस्रों के कष्ट तथा वेदनाओं को हमें सूंघने पर, हमें ज्ञात होने पर भी हमारे रक्त के नलों में ये भाव मिश्रित होने पर हमारे शरीर के सभी परमाणुओं को कमज़ोर हो जाना पड़ता है । हमारे रक्त में भी कलंक होना पड़ता है । इसी तरह हमारे रक्त को शुद्ध करने के लिए हमारे गुरुजी के दिखाये कृपामार्ग पर अगस्त्य जिस तरह अपने जीवन में सर्व जहर को हटाकर, भाव को प्रकाश के रूप में बदलकर, प्रकाश के शरीर पाकर आज धृव नक्षत्र बनकर जीवित होकर उगते रहते हैं,

उससे आनेवाली सभी भावनाएँ पृथ्वी पर फैलती हैं । उस धृव नक्षत्र से आनेवाले भाव को हमारे आँखों की याद के द्वारा धृव नक्षत्र की ओर चलाकर, उसे तरसकर, आँखों के याद को हमारे भ्रू के मध्ये पधारनेवाले प्राण रूपी ईश की ओर चलाकर, उस "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा !" - इस तरह आँखों की याद को हमारे भ्रू के मध्ये रखकर हमारे प्राण रूपी ईश से प्रार्थना करके आँखों को बंद करके याद को धृवनक्षत्र की ओर चलाकर तरसकर ध्यान कीजिए ।

ध्यान

(नीचे दिये वचनों को ध्यान को चलानेवाले के कहने पर, ध्यान में बैठनेवाले ध्यान के सदस्यों को वचनों को याद करके, तरसकर कम से कम 3 मिनट तक आँखों को बंद करके रहना चाहिए ।)

1. हमारे माता व पिता की कृपा आशिषें हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा!

2. हमारे गुरु जी की कृपा आशिषें हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा!

3. माता और पिता की कृपाआशिषों से, गुरुजी की कृपाआशिषों से, मामहर्षि ईश्वराय गुरुदेवजी की कृपा से, अगस्त्य धृव बनकर, धृव महर्षि बनकर, धृव नक्षत्र बननेवाले उस धुव नक्षत्र से प्रकट होनेवाली महाकृपा तथा महाप्रकाश को हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा!
4. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा! (आँखें खोलकर एक मिनट तक तरसते रहना है)

अब आँखें बंद करके "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर हमारे रक्त के नलों में मिलकर, हमारे

रक्त के नलों में होनेवाले जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को पाने की कृपा करें ईश्वरा !" इस प्रकार आँखों की याद को रक्त के नलों में चलाकर तरसकर ध्यान कीजिए ।

5. "धृव शक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, हमारे शरीर के अंगों को रूपधारण किये सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा!" – इस प्रकार आँखों की याद को शरीर के अंगों पर चलाकर दो मिनट तक तरसकर ध्यान करें ।

   (जिस अंग के बारे में कहते हैं उस अंग पर अपनी आँखों की याद को चलाकर एक मिनट तक ध्यान करना चाहिए ।)

6. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारी छोटी अंतडी और बड़ी अंतड़ी (small intestine and large intestine) भर फैलकर हमारी छोटी अंतड़ी तथा बड़ी अंतड़ियों को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

7. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे अग्न्याशय (pancreas) भर फैलकर हमारे अग्न्याशय को रूपधारण करने वाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

8. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे जिगर (liver) और प्लीहे (Spleen) भर फैलकर जिगर और प्लीहे को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा !

9. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे फ़ेफ़ड़ों (lungs) भर फैलकर, फ़ेफ़ड़ो को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

10. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे मूत्रकोशों (Kidneys) में फैलकर, हमारे मूत्रकोशों को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

11. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे हृदय (Heart) भर फैलकर हमारे हृदयों को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा । (हृदयों को रूपधारण करनेवाले परमाणुएँ निर्मल स्थिति पायेंगे ।)

12. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारी आँखों में फैलकर, हमारी आँखों की पुतलियों को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

13. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे नस के मंडल भर फैलकर नस के मंड़ल को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृवनक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

14. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे हड्डी के मंडल भर फैलकर हड्डी के मंडल को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

15. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारी हड्डियों के भीतर होनेवाले मज्जों (Bone marrows) पर फैलकर, मज्जों को उत्पन्न करने वाले सारे परमाणुओं को धुव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

16. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे मांस के मंड़ल भर फैलकर मांस के मंड़ल को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

17. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे चमड़े के मंड़ल भर फैलकर चमड़े के मंड़ल को रूपधारण करनेवाले सारे परमाणुओं को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

18. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, हमारे रक्त के नलों में मिलकर, हमारे शरीर के अंगों पर अज्ञात में इकट्ठा होनेवाली सारी जहरीली स्थितियाँ सरककर, सर्व रोगों, व्याधियों और दर्दों को हमारे शरीर से निकल जाने की कृपा करें ईश्वरा ।

19. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे माता और पिता के शरीर भर फैलकर उनके रक्त के नलों में मिलकर, उनके शरीरों में होनेवाले सारे जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

20. धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा पहाप्रकाश हमारे परिवार के सारे लोगों पर फैलकर, हमारे परिवार के सारे लोगों को धृव नक्षत्र की महा कृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

ओं ईश्वरा गुरुदेवा (दो बार)

(नीचे दिये हुए वचनों को ध्यान को चलानेवाले के बताते रहते समय ध्यान में बैठनेवाले ध्यान मार्ग पर चलनेवाले सभी सदस्यों को अपने अपने परिवारों में शरीर से विलग होकर जानेवाले प्राणात्माओं को याद करके ध्यान करते रहना है)

सप्त ऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, हमारे रक्त के नलों में मिलकर, हमारे रक्त के नलों में होनेवाले सारे जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को पाने की कृपा करें ईश्वरा ।

ओं ईश्वरा गुरुदेवा – (दोबार)

(नीचे दिए हुए वचनों को ध्यान को चलाने वाले के बताने पर दूस्रों को उन्हे दुहराना चाहिए)

हमारे साथ जीवित होकर, उगकर, शरीर से विलग होकर जानेवाले हमारे कुलदैव रूपी पूर्वजों के प्राणात्माएँ, सप्तऋषि मंड़लों के प्रकाशमान लहरों में मिलकर, शरीर पाने के भाव गला होकर महामोक्ष तथा महास्थिति – यह हालत पाकर, अविनाश प्रकाशमय शरीर पाकर, जन्मजात स्थिति प्राप्त करने की कृपा करें ईश्वरा ।

(इस प्रकार दो बार कहना है)

ओं ईश्वरा गुरुदेवा – (दो बार)

हमारे साथ जीवित होकर उगकर शरीर से विलग होकर जानेवाले हमारे रिश्तेदार तथा मित्रों के प्राणात्माएँ सप्तऋषि मंड़लों के प्रकाशमान लहरों में मिलकर शरीर पाने के भाव गला होकर महामोक्ष तथा महास्थिति – यह हालत पाकर, अविनाश प्रकाशमय शरीर पाकर, जन्मजात स्थिति प्राप्त करने की कृपा करें ईश्वरा ।

(इस प्रकार दो बार कहना है)

ओं ईश्वरा गुरुदेवा – (दो बार)

सपतऋपि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, हमारे रक्त के नलों में मिलकर, हमारे रक्त के नलों में होनेवाले जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को प्राप्त करने की कृपा करें ईश्वरा ।

ओं ईश्वरा गुरुदेवा (दो बार)

(अब ध्यान को पूर्ति करना चाहिए ।)

बाद में नीचे दिए वचनों को ध्यान को चलाने वाले के बताने पर ध्यान में बैठनेवाले सभी लोगों को उन्हें दुहराना चाहिए ।)

1. अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्त ऋषि मंडलों की महाकृपा तथा महाप्रकाश ध्यान करनेवाले सारे लोगों के शरीरों में फैलकर, उनके रक्त के नलों में मिलकर, रक्त के नलों में होनेवाले सारे जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को प्राप्त करके, उनके जीवन में अज्ञात में जमा होने वाली बुरी क्तियाओं से उगने वाली, पाप क्तियाओं से उगनेवाली, शाप क्तियाओं से उगनेवाली और पूर्व जन्म

क्तियाओं से उगने वाली सर्व व्याधियों को, सर्व रोगों को तथा सर्व दोषों को हटाने की कृपा शक्ति पाकर, उनके जीवन में तन्दुरुस्ती पाकर, मनोबल पाकर, मनोविकास पाकर, कृपा ज्ञान पाकर, धंधे में उन्नति बढ़कर, कृषि में उन्नति बढ़कर, धन धौलत, प्रभाव तथा वाक्चादुर्य बढ़कर, स्पष्ट मन एवं प्रसन्न भाव के साथ कृपा ज्ञान जीवन जीने की कृपा करें ईश्वरा ।

2. अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्त ऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश ध्यान करनेवाले सभी लोगों के परिवारों में फैलकर, उनके रक्त के नलों में मिलकर, उनके रक्त के नलों में होनेवाले सभी जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को पाकर, उज्ञात से इकट्ठा हो जाने वाली सारी बुरी क्तियाएँ, शाप क्तियाएँ, पाप क्तियाएँ एवं पूर्व जन्म कियाएँ सरककर, उनके परिवार के सभी लोगों को महर्षियों के कृपाचक्र में जीकर मन का रोग हटाकर मनो बल पाकर, तन का रोग हटाकर तंदुरुस्ती पाकर, कृपा जीवन बिताकर, स्पष्ट मन एवं प्रसन्न भाव के साथ पति और पत्नी वसिष्ठ तथा अरुन्धती के समान जीवित होकर, नळायिनि की तरह पति और पत्नी एक दूस्रे का आदर करके, सावित्री की तरह पति और पत्नी अपने दो भावों को एक भाव बनकर, दो मन को एक मन बनकर, दोनों प्राणों को एक प्राण बनकर, जीवित होकर, गृहस्थ जीवन में अंधेरे को हटाकर, ज़हर को जीतकर महाकृपा पाकर, महाप्रकाश होकर, कृपाज्ञान जीवन जीकर उनके परिवारों में, उनके नज़र में उगते रहनेवाले बच्चों को कृपाज्ञान बच्चे बनकर, विद्या में ज्ञान, उद्देश्य समझकर काम करने की शक्ति और दुनिया का ज्ञान पाकर, इस संसार की रक्षा करनेवाले कृपा ज्ञान बच्चे बनकर जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा !

3. अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपा शक्ति, धृव नक्षत्र की महा कृपा तथा महाप्रकाश, सप्त ऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें ध्यान करनेवाले इस जगह (घर, दूकान या दफ़तर) भर फैलकर, यहाँ ध्यान करनेवाले सभी लोगों को अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश, सप्त ऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाकर इस जन्म में जन्मजात स्थिति रूपी कृपा शक्ति पाकर, इस जन्म में जन्मजात स्थिति रूपी कृपा जीवन जीकर, इस जन्म में जन्मजात स्थिति पहुँचने की कृपा करें ईश्वरा!

4. ध्यान करनेवाले परिवारों में गर्भ होने पर, गर्भ में उगनेवाला शिशु अगस्त्य के पानेवाली कृपा, धृव बनने की कृपा तथा धृव नक्षत्र की महाकृपा पाकर, गर्भ में उगकर, पैदा होकर, अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश सारी गर्भवती माताएँ और उनके गर्भ में उगनेवाले सारे शिशुओं को पाकर, महालक्ष्मी की तरह आकर्षित करने की ऊर्जा पाकर, महासरस्वती की तरह सर्व ज्ञान पाकर, पराशक्ति की तरह सब कुछ को उत्पन्न करने की ऊर्जा पाकर, इस संसार की रक्षा करने वाले कृपाज्ञान बच्चे बनकर उगकर जीवित होने की कृपा करें ईश्वरा!

5. अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश, सप्त ऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश इस पृथ्वी भर फैलकर, इस पृथ्वी पर मिश्रित होनेवाली सारी जहरीली स्थितियों को हटाकर, इस पृथ्वी पर रहनेवाले सभी लोगों को महर्षियों के कृपाचक्र में जीवित होकर,

धर्म भेद, जातिभेद, भाषाभेद एवं मनभेद के बिना कृपाज्ञान जीवन जीकर, भ्रातृ भाव के साथ दुनिया के सभी लोगों को एकत्रित होकर, जीवित होकर, उगने की कृपा करें ईश्वरा !

ओम् ईश्वरा गुरुदेवा (दो बार)

6. अगस्तय मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश, सप्त ऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश बादलों में मिलकर, काले बादल इकट्ठा होकर भलाई करनेवाला वर्षा बरसकर, झीलें और तालाबें भरकर, वनस्पति वर्ग पनपकर, गाँव और शहर, देश और दुनिया तथा दुनिया के लोगों को कुशलता और संपन्नता पाने की कृपा करें ईश्वरा !

(इस तरह बादलों की ओर याद चलाकर कुछ देर तक ध्यान कीजिए । फिर एक बार ऊपर कहनेवाले वचन को बताइये।)

ओम् ईश्वरा गुरुदेवा !
ओम् ईश्वरा गुरुदेवा !
ओम् ईश्वरा गुरुदेवा !

तपोवन को याद करके उस धृव नक्षत्र की महाकृपा पानी चाहिए – इस प्रकार सोचिए । क्योंकि गुरुजी ने हमें दिखाया । उस गुरु जी के मार्ग पर ही 'ईश्वराय गुरुदेवर् तपोवनम्' का निर्माण हुआ । इसलिए इस तपोवन को याद करके उस धृव नक्षत्र की महाकृपा पानी चाहिए । हमारे रक्त के नलों में मिलनी चाहिए । हमारे शरीर के अंगों को उत्पन्न करनेवाले परमाणुओं को पानी चाहिए – इस तरह सोचें तो – हमारे शरीर में होनेवाले रोगों को हटाना चाहिए । हाथ पैर का दर्द विलग होना चाहिए । हमारे परिवारों में प्रेम, सद्गुण तथा दया के साथ एकत्रित होकर जीना चाहिए । हमारे शरीर

में कुशलता पानी चाहिए । हमारे बच्चों को तंदुरुस्ती पानी चाहिए । वे विद्या में उन्नति पानी चाहिए । हमारे बच्चों के विवाह होकर जाने वाले सभी परिवार धन दौलत के साथ पनपना चाहिए । बच्चों को पुत्र भाग्य पाने की शक्ति पानी चाहिए । – इस प्रकार तपोवन को याद करके पायें तो वह आप को तुरंत ही फल देगा । आपके जीवन में दुर्बलता, बेचैनी, संकट, घृणा, गुस्सा और कोध आने पर और धंधे में नष्ट होने पर भी उन्हें निवृत्त करने के लिए धृव नक्षत्र की महाकृपा पाकर, मन में प्रोत्साहित होकर कार्रवाई करने की शक्ति पायेंगे । इसलिए धृव नक्षत्र के भाव को हमारे अंदर बढ़ते रहने से गृहस्थ जीवन में अर्थ समझकर कार्यान्वित होने की ताकत, इस जीवन के पश्चात धुव नक्षत्र के आकर्षित चक्र पहुँचकर हमें जन्मजात स्थिति पाने के लिए यह सहायता करेगा । इसलिए मानव बनें तो अंतिम स्थिति जन्मजात की स्थिति होती है । उस अनुग्रह को पाने के लिए ही आपको यह ध्यान सहायता करता है । कृपाभाव को बहाकर कृपाजीवन जीने के कृपाज्ञान को देकर, हमारे गुरुजी के मार्ग पर आपका ख्याल कृपामार्ग पर चलकर, कृपा जीवन बिताकर, सोचकर कार्रवाई करने की शक्ति पाकर, जन्मजात स्थिति पहुँचने के लिए हमारी आशिषें और गुरुजी का अनुग्रह आपको श्रेष्ट सहायक बनकर धृव नक्षत्र की महाकृपा पाकर, आपके जीवन में सच्चा अर्थ जानने की कृपाशक्ति पाकर, सदैव जन्म जात स्थिति पाने के लिए हमारी आशिषें हैं ।

ओम् ईश्वरा गुरुदेवा !

ओम् ईश्वरा गुरुदेवा !

ओम् ईश्वरा गुरुदेवा !

(अब ध्यान पूर्ति कर दीजिए ।)

संयुक्त ध्यान के फल

बरसात के काल में छोटी छोटी बूँदे होकर पानी बरसकर बड़े बाढ़ के रूप में जमा होकर बहता है । तब वह कूड़े कर्कट तथा अशुद्धों को तेज़ी से ले जाता है । उसी तरह अधिक लोग इकट्ठा होकर एक जगह पर बैठकर "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पानी चाहिए – यह एक ही भाव के ख्याल लेकर, सब लोग ध्यान में आकर्षित करने से संयुक्त ध्यान में बैठनेवाले सभी लोग धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महा प्रकाश को अधिकमात्रा में पाते हैं । उससे हर एक मानव के जीवन में अपने अज्ञात में इकट्ठा होनेवाली बुरी शक्तियाँ और बुरी भावनाएँ मिट हो जाती हैं । इसलिए संचलता दूर हो जाता है । मन शांति पाता है । अच्छे विचारों के भाव ताकत पाते हैं । आत्मा भी प्रकाशमान स्थिति प्राप्त करने की ऊर्जा पाता है । इसलिए हर एक हफ़ते में एक दिन संयुक्त ध्यान करना बहुत अनिवार्य है । अकेले ध्यान करके संचलता को न हटानेवाले संयुक्त ध्यान में मिलने से संचलता को हटा सकते हैं । मन में शांति भी प्राप्त करते हैं । हम दूस्रों को देखते समय वे भी मन में शांति पाते हैं । हमारे छूकर देनेवाले पदार्थों में अच्छे मन होने से व्यापार भी अच्छी तरह होने के लिए हमारा मन ही सहायता करता है । मन में शांति होने से पेशा करते समय विचार करके कार्यवाई कर सकते हैं । आत्मा भी प्रकाशमान स्थिति प्राप्त करने की ऊर्जा पाता है ।

हर एक मानव हर एक नक्षत्र की ऊर्जा होनेवाला है । मानव लोग 'धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पानी चाहिए'– इसी

एकत्र तथा तरसनीय भाव के साथ संयुक्त रूप में ध्यान करने से (जिस तरह सूरज 27 नक्षत्रों की प्रकाशमान शक्ति को लेता है उसी तरह) हर एक व्यक्ति 27 नक्षत्रों की ऊर्जा प्राप्त कर सकता है ।

आकाश मंड़ल में उत्पन्न होनेवाले ग्रहों के बदलाव से होनेवाले - बदलनेवाले बुरे भावों से भी हम अपने आप की रक्षा करने के लिए संयुक्त ध्यान बहुत सहायता देता है ।

पूर्णिमा ध्यान करने से होनेवाले फल

हमारे गुरुजी के दिखाए मार्ग पर पूर्णिमा ध्यान करनेवाले सभी आत्म ऐक्य सदस्यों के विचारों को एकत्रित करके, जमा करके, यदी एक लाख व्यक्ति ध्यान करें तो ध्यान करनेवाला हर एक व्यक्ति को, उन एक लाख व्यक्तियों की शक्ति प्राप्त होती है । उस समय हमें शक्ति अतीब स्थितियों में बढ़ता है । हमारे गुरुजी के दिखाए नियम के अनुसार आप ध्यान करते समय हम भी उस समय ध्यान करते हैं । उस समय आपकी शक्ति को बढ़ाने के लिए, हमारे गुरुजी के दिखाये मार्ग के अनुसार आपके प्राणात्माओं को प्रार्थना करके, उस शक्ति आपको प्राप्त करने के लिए हम सहायता कर सकते हैं ।

अब, साधारणतः पृथ्वी पर एक फूल का पौधा होता है । पृथ्वी पर होनेवाली चुंबकीय लहरों के अंदर रचित अपने वर्ग की सुगंध को अपने अंदर आकर्षित करके आप भी उगकर, अपने विकसित सुगंध को जिस तरह पृथ्वी पर फैलाता है, उसी तरह हमारे पहले बतानेवाले नियम के अनुसार इस ध्यान को करते रहें तो, इस हवा की लहरों में मिश्रित महर्षियों तथा ज्ञानियों के - जब वे इस पृथ्वी पर जीवित रहते थे, तब यहाँ उनसे फैलानेवाली सभी शक्तियों

को और उसी तरह हम आकाश की ओर देखकर चाँद को ध्यान करते समय आकाश में महर्षि लोग आज धृव नक्षत्र, सप्तऋषि मंड़ल तथा परवेली (ब्रह्मण्ड) मंड़ल बनकर रहने से ही, उन से प्रकट होनेवाली श्रेष्ट शक्तियाँ पृथ्वी के बाहर फैलती रहती हैं । ये शक्तियाँ इस नियम से आप ध्यान करने पर उन महर्षियों की श्रेष्ट कृपा शक्ति आपको प्राप्त करने के लिए हम अपने गुरुजी के दिखाये मार्ग के द्वारा सहायता कर सकते हैं ।

इसलिए पूर्णिमा ध्यान में आपकी इस शक्ति को बढ़ाने के लिए हमारी सहायता करने से, उस समय को व्यर्थ न करके आप ध्यान करके फल प्राप्त करें ।

इस पूर्णिमा ध्यान से आपको मार्ग जानकर कार्रवाई करने का ज्ञान प्राप्त होता है । धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा पहाप्रकाश पाने से हमारे आत्मा में भी प्रकाश पाने के परमाणुएँ उगते हैं । हमारे पूर्वजों को प्रकाशमान शरीर पाने की सहायता करते हैं । उसी समय सप्त ऋषि मंडलों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हम प्राप्त करने की योगयता पाते हैं ।

परिवार ध्यान के फल

परिवार के जीवन में प्रसन्न होकर रहने पर भी, बाहर के जीवन में अप्रतीक्ष आनेवाले मुसीबतें तथा घृणा के भावों से गुस्सा और क्रोध की चेतनाएँ विकसित होकर संचल और वेदना के भाव के साथ धंधे करते समय, विचार करने की ताकत कम होकर, घृणा के साथ धंधे करने पर, दूस्रे लोगों के हमें घृणा के साथ देखने व

बोलने, उससे हमारे धंधे करने वाले जगहों पर कई संकट हो जाते हैं । व्यापार में हमारे छूकर देनेवाले चीज़ों में घृणा की भावतरंगों के पड़ने से, चीज़ों को खरीदनेवाले उन चीज़ों को देखकर खरीदते वक्त, उन चीज़ों पर घृणित होकर, चीज़ को बिना ख़रीदकर चले जाते हैं । व्यापार में मंदगति आते समय, वेदना के भाव ताकत होने लगते हैं । उससे रक्त का दबाव जैसे रोग और दूस्रे रोगों के उत्पन्न होने का कारण बनते हैं ।

परिवार में पत्नी, बच्चे, माता और पिता से बान्धव्य के साथ रहने पर भी, परिवार में किसी एक पर छोटी सी कमी को यदी हम देख पडें तो हमारे अनजान में ही घृणा, वेदना तथा गुस्सा होकर बोलने के भाव की ताकत को प्रेरित कर देते हैं । इससे परिवार में भेद भाव उगने लगते हैं । अच्छे गुणों के भाव की ताकत धीमित हो जाती हैं । संचल और वेदना के भाव और भी अधिक होकर रहने से, यदी मंदिर जाकर वहाँ शांति पाने को चाहें तो भी शांति नहीं पा सकते । ज्ञानियों के उपदेशित करके अनुग्रहित अच्छे भावों को पाने के लिए चाहें तो भी नहीं पा सकते । इसलिए हमारे अनजान में ही हमें नचानेवाले इस तरह के बुरे भावों को मिटाकर ज्ञानियों के उपदेशित करके अनुग्रहित अुच्छे गुणों के भाव की ऊर्जा प्राप्त कर देनेवाला है यह परिवार ध्यान ।

परिवार ध्यान करनेवाले मन में शांति पाते हैं । घर में दाखिल होनेवाली संचल की लहरें गायब हो जाती हैं । बच्चे माता पिता के वचन पालन करके अच्छी तरह पढ़ने के लिए भी सहायता देता है । परिवार में शांति छायेगी । व्यापार अच्छी तरह चलाने के लिए सहायता करता है । धंधे करनेवाले जगहों पर शांति के साथ पेशा

कर सकते हैं । अच्छा नाम और प्रशंसा मिलेंगे । प्राणात्मा में हानेवाले परमाणुशिशुएँ प्रकाश के रूप में बदलने की ताकत पाते हैं । **इसलिए परिवार के जीवन में ही 'आत्मज्ञान' पाकर "जन्मजात स्थिति" रूपी प्रकाशमान स्थिति पहुँच सकते हैं । अपने आप पर विश्वास कीजिए । आपके पास होनेवाली ऊर्जा से इस मार्ग को पालन करके प्रकाशमान स्थिति पहुँच सकते हैं ।**

कलश और ध्यान

कलश रखने के लिए आवश्यक सामग्रियाँ

1. नारियल
2. लोटा (छोटा सा घड़ा) (ताम्र, पीतल, एवर्सिलवर या चाँदी)
3. कच्चा चावल
4. थाली (ताम्र, पीतल, एवर्सिल्वर या चाँदी)
5. हलदी लगाया हुआ धाग
6. आम के पेड़ के 5 पत्ते
7. एक रुपये का सिक्का
8. एक नींबू का फल
9. फूल – एक हाथ का फासला
10. एक हलदी

कलश रखने का नियम

एक पीतल की थाली पर, उस थाली के उचित मात्रा में कच्चा चावल भरकर, उसपर 'ओं' शब्द लिख लीजिए । तदनन्तर एक पीतल के (छोटा सा) घड़े (लोटा) में शुद्ध पानी भरना चाहिए । उस पर पाँच आम के पत्तों को रखना चाहिए । उसके ऊपर एक पक्का हुआ नारियल को रखने के पहले उसपर अच्छी तरह हल्दी लगाकर चंदन और कुमकुम से बिंदी लगाना चाहिए । बाद में नारियल को घड़े पर रखते समय सरगुरुदेवजी को याद करके एक रुपये का सिक्का घड़े के अंदर डालना चाहिए । बाद में घड़े के गले पर हलदी बांधने वाली रस्सी (धागा) को बांधना चाहिए । अब नारियल पर फूल को हार की तरह डालना चाहिए ।

यदी पूजा गृह हों तो उस कमरे में कलश रख सकते हैं । पूजागृह नहीं होने वाले बच्चों के हाथ न पड़ने की तरह कुछ ऊँचाई पर छोटी सी पेटी की तरह बनकर दीवार पर दाखिल करके उसपर कलश रख सकते हैं । अलमारी हों तो उसमें कलश रख सकते हैं । इस तरह कलश रखने से दोष या आशौच पड़ा होगा इस भय की आवश्यकता नहीं है । परिवार के सभी लोगों को कुछ देर अपने अपने संकट एवं वेदनाओं को दूर करके इससे 'कुशलता तथा संपन्नता पाएँगें' – इस भाव के साथ अपने प्राण को भ्रू के मध्ये "ईश्वरा" – इस प्रकार सोचकर "ध्रुव महर्षि की कृपाशक्ति मुझे पाने की कृपा करें ईश्वरा" – इस भाव के साथ एक मिनट तक तरसकर अगला मिनट 'ध्रुव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मुझे प्राप्त करने की कृपा करें ईश्वरा' – इस तरह तरसते हुए, कलश के समीप जाकर, कलश को देखते हुए 'ध्रुव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश यहाँ फैलनी चाहिए ईश्वरा' – इस भाव के साथ पाँच मिनट तक ध्यान

कीजिए । ध्यान करने से धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश को परिवार के सभी लोगों को प्राप्त करने का हेतु बन जाता है । **“आपके भाव की ऊर्जा ही आपकी रक्षा करेगी”** – इस अटल विश्वास के साथ ध्यान करके कुशलता तथा संपन्नता पावें ।

नियम के अनुसार कलश रखकर परिवार सहित अपने अपने प्राण को भ्रू के मध्ये ‘ईश्वरा’ मानकर याद करके “माता और पिता की कृपाआशिषों तथा गुरुजी की कृपाआशिषों से ‘धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मुझे पाने की कृपा करें ईश्वरा’ – इस भाव के साथ पाँच मिनट तक कलश को देखने के बाद, ध्यान के वचनों को एक व्यक्ति के कहने पर दूस्रों को मन में याद करते हुए कलश को देखते रहना चाहिए । ध्यान के वचन बताने के बाद आँखें बंद करके “धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, रक्त के नलों में मिलकर रक्त के नलों में होनेवाले सभी जीवान्माओं और, जीवाणुओं को पानी चाहिए ।” – इस भाव के साथ सारे शरीर को याद करके एक मिनट तक ध्यान कीजिए । तरसते रहना है । आँखें खोलते ही पति व पत्नी दोनों एक दूस्रे के माथे को देखकर, “धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मेरे पति के जीवान्मा को पानी चाहिए” – इस प्रकार पत्नी और, “धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मेरी पत्नी के जीवान्मा को पानी चाहिए” – इस प्रकार पति की याद करने के बाद ध्यान को पूर्ति करना चाहिए ।

प्रसाद देते समय ‘बच्चों को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पानी चाहिए ईश्वरा’ – इस भाव के साथ याद करके बच्चों को प्रसाद देना चाहिए ।

बच्चे प्रसाद लेते समय, 'माता, पिता की कृपा आशिषें मुझे पानी चाहिए ईश्वरा' इस भाव के साथ तरसकर उनके चरण छूकर प्रणाम करके प्रसाद ले लेना चाहिए ।

इस तरह करने से बच्चों के दोष विलग होकर माता, पिता के ऊपर पाश के साथ उगेंगे ।

पति व पत्नी के ध्यान करने का नियम

"ओं ईश्वरा गुरुदेवा"

माता व पिता की कृपाआशिषें हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा!

(ईश्वरा बताते समय, भ्रू के मध्ये होने वाले प्राण को ईश्वर के रूप में याद करना चाहिए)

गुरुजी की कृपाआशिषें हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा...!

"माँ और बाप की कृपा आशिषों से, गुरुजी की कृपाआशिषों से अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश, सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा!"

अब दोनों आँखें बंद करके,

"धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, रक्त के नलों में मिलकर रक्त के नलों में होनेवाले सारे जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को पाने की कृपा करें ईश्वरा!" इस प्रकार ध्यान करना चाहिए ।

"ओं ईश्वरा गुरुदेवा"

अब पति ‘मेरी पत्नी को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाकर, कृपा ज्ञान पाकर, अच्चतम ऊर्जाओं को पानी चाहिए’ – इस तरह और पत्नी अपने ‘पति को धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाकर, कृपाज्ञान पाकर, उच्चतम ऊर्जाओं को पानी चाहिए’ – इस प्रकार ध्यान करना चाहिए ।

पति अपनी पत्नी के लिए ध्यान करने का नियम

“अगस्तय मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश पत्नी को पाकर कृपाज्ञान पाकर, फूल की तरह सुगंध और प्रसन्न होकर जीने की शक्ति पाकर महर्षियों के कृपाचक्र में जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा” – इस तरह पति को अपनी पत्नी की ओर याद चलाकर कुछ मिनट तक ध्यान करना चाहिए ।

पत्नी पति के लिए ध्यान करने का नियम

“अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति धृव महर्षि की कृपाशक्ति धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश मेरे पति को पाकर, कृपाज्ञान पाकर, महर्षियों की कृपाशक्ति से धंधे में उन्नति बढ़कर, उनके देखनेवाले और उनको देखनेवालों को महर्षियों की कृपाशक्ति से फूल की तरह सगंध और प्रसन्न होकर जीने की शक्ति पाकर, जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा” – इस प्रकार पत्नी अपने पति की ओर याद को चलाकर ध्यान करना चाहिए ।

ओं ईश्वरा गुरुदेवा

अब पति एवं पत्नी को अपने अपने माता पिताओं को मन में याद करके उनको उच्चतम शक्ति पानी चाहिए – इस प्रकार दोनों को अपने माता पिता के लिए ध्यान करना चाहिए ।

पति और पत्नी अपने माता पिता के लिए ध्यान करने का नियम

(दोनों के आत्मशुद्धि करने के बाद)

“अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्त ॠषि मंड़लों की महाकृपा तथा पहाप्रकाश हमारे माता और पिता पाकर महर्षियों के कृपाचक्र में जोड़कर, महाआनन्द के साथ महाजीवन जीकर, उनकी कृपादृष्टि में उनकी कृपा आशिषों की श्रेष्ठ सहायता लेकर हम सदैव अच्छे लोग बनकर, श्रेष्ठ ज्ञानवान बनकर, उच्चतम ऊर्जा पाने की स्थिति में जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा” – इस तरह दोनों को अपने माता व पिता के लिए ध्यान करना चाहिए ।

उसके बाद पति एवं पत्नी दोनों ‘सप्त ॠषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा’ – इस प्रकार याद करके तरसने के बाद,

“हमारे साथ जीवित होकर, उगकर, शरीर से विलग होकर चलनेवाले हमारे कुलदैव रूपी पूर्वजों के प्राणात्माएँ सप्तॠषि मंड़लों की प्रकाशमान लहरों में मिलकर, शरीर पाने के भाव गलाकर महामोक्ष तथा महास्थिति – यह हालत पाकर, अविनाश प्रकाशमान शरीर पाकर, जन्मजात स्थिति प्राप्त करने की कृपा करें ईश्वरा!”

इस तरह अपने अपने कुलदैव बननेवाले पूर्वजों के प्राणात्माओं को आकाश की ओर चलाकर सप्तऋषि मंड़लों के महाप्रकाश में जोड़ना चाहिए ।

फिर एक बार सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पानें की कृपा करें ईश्वरा – इस प्रकार विचार करके तरसने के बाद ध्यान को पूर्ति करना चाहिए ।

"ओं ईश्वरा गुरुदेवा"

नीचे दिये वचनों को दोनों में एक के कहने पर दूस्रे व्यक्ति को तरसते हुए दुहराना चाहिए ।

1. 'अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृर्व महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्त ऋषि मंडलों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे परिवार भर फैलकर, हमारे परिवार के सभी लोगों को अर्थ समझकर कार्रवाई करने की होशियारी पाकर, महर्षियों की कृपाशक्ति से हमारे बच्चे विद्या में ज्ञान, उददेश्य समझकर कार्रवाई करने की होशियारी तथा दुनिया का ज्ञान पाकर दुनिया की रक्षा करनेवाले कृपा ज्ञान बच्चे बनकर जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा...!

2. हम अपने जीवन में जिन्हें देखते हैं, जिनके साथ होते है उन सब लोगों को अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश, सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाकर वे सब तंदुरुस्ती और मनोबल पाकर, पुष्प की तरह सगंध रथा२ प्रसन्न होकर रहने की शक्ति पाकर महर्षियों के कृपाभाव के साथ जीकर,

उनके परिवार के सभी लोगों को धन में समृद्धि के साथ जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा!

3. अगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महर्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे धंधे करनेवाले जगहों पर फैलकर वहाँ पुष्प की तरह सुगंध तथा प्रसन्न होकर रहने की शक्ति फैलकर, हमारा धंधा श्रेष्ठ रूप से होकर धंधे में उन्नती के साथ जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा...!

4. आगस्त्य मामहर्षि की कृपाशक्ति, धृव महार्षि की कृपाशक्ति, धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे सभी ग्राहकों को पाकर, उनके जीवन में धन में समृद्धि के साथ जीवित होकर उगने की कृपा करें ईश्वरा....!

“ओं ईश्वरा गुरुदेवा”

पति और पत्नी के सोने जाने के पहले

पति और पत्नी, एक दूस्रे के सामने बैठकर भ्रू के मध्ये प्राण को ‘ईश्वरा’ – इस प्रकार याद करके दो मिनट तक तरसते रहने के बाद “धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा” – इस भाव के साथ दो मिनट तक तरसने के बाद आँखे वंद करके, “धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमारे शरीर भर फैलकर, रक्त के नलों में मिलकर, रक्त के नलों में होनेवाले जीवान्माओं तथा जीवाणुओं को पानी चाहिए” – इस भाव के साथ शरीर भर ध्यान करके, आँखें खोलकर एक दूस्रे के माथे

को देखकर, "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश उनहें पानी चाहिए" इस भाव के साथ दोनों एक दूस्रे को देखने के बाद सोने जाना है । पति के परदेश जाते समय भी पत्नी को ऊपर कहने के अनुसार ध्यान करके याद करना चाहिए । पति को भी इसी तरह पत्नी को याद करना चाहिए । पत्नी की भावतंरगे पति की रक्षा करने की सहायता करती हैं । पति के पत्नी को याद करते समय पति की भावतरंगें पत्नी की रक्षा करने की सहायता करती हैं । उदाहरण के लिए, मित्रों के बीच में मित्रता की स्थिति से एक दूस्रे को याद करके 'मित्र ने मदद किया' – इस तरह सोचते समय बहुत दूर में रहने पर भी हिक्का होता है न? उसी तरह पति एवं पत्नी ध्यान में ऊर्जा पाने से, पति के बहुत दूर पर रहने पर भी पत्नी के पति को 'धृव शक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पानी चाहिए' – इस प्रकार सोचते समय, पति को किसी प्रकार की उलझन या आक्षेप आने पर, पत्नी के विचार के भाव पति को उलझनों से रक्षा करने की सहायता करता है । इसी तरह पति के पत्नी को याद करते समय पत्नी को भी रक्षा मिलती है ।

बच्चों पर गुस्सा आते समय

बचचों के हठ करके रोते समय, या शरारत करने को देखते समय, गुस्सा आकर, उनहें शाप देने की तरह कोसने से बच्वों के गुण विगड़ जाने के साथ साथ शरीरों में भी बाधा होते हैं । इस तरह हमारे अनजान में शाप देने पर भी आपके अनजान में आपके शरीर में इस शाप के भाव इकट्ठा होकर हाथ पैर में दर्द आदि रोगों के उत्पन्न होने के कारण बनते हैं । गुस्सा करने के थोड़ी ही देर में ही 'आत्मशुद्धि' करके 'आगे चलकर उनके करनेवाले सारे काम अच्छे हाने चाहिए' इस तरह याद करना चाहिए । इस प्रकार करने से

आपके अज्ञात में इकट्ठा होनेवाली बुरी लहरें हट जाकर, बच्चों को अच्छा वाक् मिलते हैं । उससे बच्चों की मनोस्थिति अच्छी तरह उगने की सहायता मिलती है ।

गर्भवति स्त्रियों के लिए

गर्भवति महिलाएँ पहले कहने के अनुसार 'आत्मशुद्धि' करके, आँखे बंद करके, गर्भ में होनेवाले शिशु को याद करके, 'शिशु के भाव में धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पानी चाहिए, ईश्वरा ।' – इस तरह थोड़ी देर याद करना चाहिए । इस तरह एक दिन में कम से कम तीन बार याद करना चाहिए । रात को सोने जाने के पहले अनिवार्य से इस नियति को पालन करना है ।

इस तरह करने से शिशु ज्ञानवान बच्चा बनकर पैदा होगा । भविष्य में प्रतिभा तथा वाक्चादुर्य के साथ रहेंगे ।

हाथ के शिशुओं के लिए

शिशुओं को दूध या आहार देते समय 'आत्म शुद्धि' करके 'धृव महर्षि की कृपाशक्ति मेरे शिशु को पानी चाहिए' – इस प्रकार विचार करके आहार खिलाना है । अच्छी तरह खाने को इनकार करने वाले शिशुओं को 'वहाँ देखो । धृव महर्षि' बताकर, आकाश की ओर दिखाकर 'खाओ, ज्ञानी बन जाओगे' – इस प्रकार कहकर आहार खिलाइये । इस तरह बताने पर शिशुओं के दोष विलग होकर, अच्छे ज्ञानवान बच्चे बनकर उगेंगे ।

बच्चों को ध्यान सिखाना

हाथ के शिशु से लेकर पाँच बरस के बच्चे तक ऊपर कहने के अनुसार 'आत्मशुद्धि' करके गोद में बिठाकर सामने होनेवाले कलश, दैविक चित्रों, या दीपक को दिखाकर, 'वहाँ देखो! धृव महर्षि! वे अनुग्रह दियेंगे! ज्ञान दियेंगे! देखो! देखो!' – इस प्रकार दो मिनट तक बताते रहकर दिखायिये । ध्यान करनेवाली माताओं के वाक् की ध्वनि में ताकत होने से बार बार कहने पर शब्द की ध्वनि बच्चों के भाव में दाखिल हो जाती है । इसलिए माता के वाकचादुर्य फलीभूत होकर बच्चे मार्ग जानकर कार्रवाई करनेवाले ज्ञानवान बच्चे बनकर उगेंगे । बच्चे जब जब रोते रहते हैं, तब तब इस तरह दिखाकर बताने पर आपके शब्द के वाक् फ़लित होकर बच्चे अच्छे लोग होकर उगेंगे ।

विवरण समझनेवाले बच्चों के लिए

शरारत करना या अपने वचन न सुनकर मंदगति में होनेवाले बच्चों को आपके देखते समय या याद करते समय, बच्चों पर होनेवाले पाश से, शरारत करनेवाले बच्चे, बाहर जाकर थोड़ी ही देर विलंब होने पर भी, उसकी याद आते ही आपके अनजान में ही भय के भाव उत्पन्न होकर कहीं गिर पड़ा होगा – यह ख्याल या अभि नहीं दीख पड़ा – यह ख़्याल उत्पन्न होना तथा इस तरह उत्पन्न होनेवाली भावतरंगें बच्चों के भावों को चलाकर उसी तरह उपस्थित हो जाते हैं । बच्चों को पढ़ाई में उत्साह होने पर भी जो कुछ पढ़ते हैं उन्हें याद रखनेवाली परमाणुओं की स्थिति बलहीन हो सकते हैं । इस तरह के बच्चे पढ़नेवाले को याद में नहीं ला सकने से

'अध्यापक कोसेंगे' – इस डर के भाव उत्पन्न होना, घर में पढ़ने के विचार करने पर थक जाना तथा कुछ बच्चे 'अच्छी तरह पढ़ना चाहिए' – यह उत्साह होने पर भी, माता व पिता के धमकाकर पढ़ने के लिए बताने से, बच्चों को माता व पिता पर न समझने की तरह घृणा होकर विचारहीन बच्चे बन जाते हैं । घर में ही माताजी रहने से बच्चों को देखते समय या याद करते समय वेदना के भाव प्रेरित हो रहने के साथ, उससे हाथ पैर में दर्द होकर थक हो जाकर इससे मन में भी अशांति की स्थिति हो जाती है । इसलिए इस तरह की स्थिति को सुधार करने के लिए शामको 6.00 बजे या 7.00 बजे के समय कलश के सामने या दैविक चित्रों के सामने दूध और तीर्थ (पानी) रखकर दीप जलाकर, ऊपर कहने अनुसार 'आत्मशुद्धि' करके, बच्चों को बुलाकर, कलश या दैविक चित्रों के सामने बिठाकर, दीप या कलश को देखने के लिए बताकर, 'धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पानी चाहिए!' इस अभिलाशा के साथ दीप को देखते रहिए । 'धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मिलेगी! अच्छी तरह पढ़ाई आयेगी! अच्छे बच्चे हो जाएँगे! अच्छी स्मरण शक्ति आयेगी!' इस तरह तीन बार बताकर दीप को देखते रहने दीजिए । इस तरह पाँच या दस मिनट तक ध्यान करने के बाद, 'ओं ईश्वरा गुरुदेवा' – इसी तरह सब लोगों के एक साथ कहने के बाद दूध और तीर्थ को देते समय 'ज्ञान प्राप्त करनी चाहिए' – इस ख़्याल के साथ दूध व तीर्थ दीजिए । बच्चे 'माता व पिता की कृपाआशिषें तथा ज्ञान प्राप्त करनी चाहिए' – इस तरह विचार करते हुए चरण छूकर प्रणाम करके प्रसाद को लेना चाहिए ।

इस तरह करके देखिए । आपके वाक्चादुर्य से आपके बच्चे कितने अच्छे बच्चे बन जाएँगे – यह मालूम हो जाएगा । इस प्रकार

ध्यान करने के पहले इसे बच्चों को पढ़कर दिखाइये । इसे रोज़ बच्चों को पढ़ने के लिए बताइये ।

बच्चों को कुशलता पाने के लिए

बच्चे स्कूल जाने के पहले मातापिता के चरणों को छूकर, विद्या में विद्वत्ता पाने के लिए कृपा आशिषें चाहिए – इस प्रकार विचार करके, प्रणाम करके स्कूल जाने की आदत लानी जाहिए ।

स्कूल जाकर बैठक में बैठते ही आत्म शुद्धि करना चाहिए । हाथ में किताब लेकर पढ़ने के पहले, माता पिता की कृपाआशिषों से मेरे सारे अध्ययन मेरे याद में स्थिर होकर रहना चाहिए, ईश्वरा!' इस प्रकार सोचकर, तरसकर पढ़ना चाहिए । उससे स्मरण शक्ति ताकत होने के लिए सहायता मिलेगा ।

घर लाटने के बाद आदत के अनुसार ध्यान करनेवाले जगह पर दो मिनट बैठकर 'आत्मशुद्धि' करने की आदत लानी चाहिए । क्योंकि दूस्रे बच्चों के शरारत करने को तमाशा देखते रहें तो, शरारत के भाव इन बच्चों के शरीर में दाखिल होकर, ये भी शरारत करने लगेंगे । पाठशाला से घर आते वक्त अप्रतीक्षित भयभीत होने की संभावना है । नहीं तो दूस्रों की दृष्टी पड़ी होगी । इससे पढ़ाई में मंदता, शरीर रोग आने की हेतु हो जाएँगे । इसलिए बच्चों को 'आत्मशुद्धि' करने के लिए आदत लाना बहुत अनिवार्य हो जाता है ।

रसोई करते समय

रसोई करने के पहले, 'आत्मशुद्धि' करके 'मेरी करनेवाली यह रसोई अच्छी होनी चाहिए । इसे खानेवाले कुशलता, संपन्नता एवं

ज्ञान पानी चाहिए ईश्वरा! । – इस तरह सोचकर रसोई करने से, आपके पकानेवाला भोजन रुचिकर हो जाएगा । इसे खानेवाले को भी तंदुरुस्ती पाने की सहायता करेगा ।

भोजन परोसते समय

भोजन परोसने के पहले 'आत्मशुद्धि' करके, 'इसे खानेवाले सभी लोगों को तंदुरुस्ती पानी चाहिए ईश्वरा!' इस प्रकार सोचकर भोजन परोसना चाहिए । आपके परिवार के लोग आप के विचार करनेवाली अच्छी भावतरंगों से तंदुरुस्ती पाएँगे ।

रिश्तेदारों के कष्टों के बारे में बताने को सुन्ने के वाद

जब रिश्तेदार अपने अपने कष्ट नष्टों को तथा उनके वेदनाओं के साथ रहने के बारे में बताने को सुनते हैं, तब उन वेदना के भाव आपके भावों को भी वेदना में पड़ा देते हैं । इस तरह बोलने के बाद, उनके चले जाने पर भी आपके अंदर उस वेदना का ख़्याल प्रेरित होकर रहने से वेदना रूपी सांस लेने के अलावा दिन भर मन की शांति भी बिगड़ हो जाती है । उस समय सांस में लेनेवाले वेदना की भावतरंगें रक्त में आहिस्ता आहिस्ता मिल हो जाती हैं । इसलिए वेदना देनेवाले परमाणुएँ आपके शरीर में उत्पन्न होने लगते हैं ।

इसलिए वेदना के वचनों को बोलने या सुनने के इसी तरह के संदर्भों में दस मिनट के अंदर, 'आत्म शुद्धि' करके 'उनके जीवन में कुशलता व संपन्नता पाना चाहिए' – इस प्रकार विचार करना चाहिए । इस तरह विचार करने से, आपके रक्त में वेदना की भावतरंगें न

मिलने की तरह रोकने के अलावा आपके वाक् से – 'रिश्तेदार कुशलता व संपन्नता पाना चाहिए' – इस प्रकार विचार करने से आप उनको भी कुशलता पाने की सहायता करनेवाले बन जाते हैं ।

प्रेम के साथ विचार करते समय

आज के वैज्ञानिक दुनिया में कई हजारों शहरों से रेड़ियों पर विभिन्न आकाशवाणी आवृत्ति में प्रसार करके हवा में मिश्रित करते हैं । उसे हम अपने घर के रेड़ियो पर, यानी दिल्ली की समझेंगे; उस आवृत्ति में होनेवाले चुंबक में, आकर्षित चुंबक को जोड़ते ही दिल्ली के आवृत्ति में प्रसार होनेवाली गीतों को या भाषणों को हमारे घर के रेड़ियो पर सुनते हैं न? उसी तरह हमारे शरीर में विभिन्न गुणों की भावतरंगें दाखिल होकर रहने से, हमारे प्रेम रूपी गुण के भाव में, ख़्याल को चलाते ही हमारे शरीर में दाखिल होनेवाले आकर्षित चुंबक में ज़ोड़कर, हवा में मिश्रित होनेवाले प्रेम रूपी गुण की भावतरंगो को हमारा शरीर आकर्षित करके सांस लेता है । हमारे शरीर के जीवाणुओं को चलानेवाला प्राण, हमारे माथे पर भ्रू के मध्ये अंतर्गत होकर, शरीर को संचालित करनेवाले मूलगर्भ बनकर, गुरु के रूप में प्राण रहने की स्थिति में, शरीर में उगनेवाले सभी गुणों की भावतरंगों को प्राण के आकर्षण में गला लेकर, पुनर शरीर रूपधारण करने का गर्भक्रिया के रूप में इकट्ठा कर रहा है ।

हमारे प्रेम रूपी गुण के भाव में विचार को चलाते ही, हमारे शरीर में, दाखिल होनेवाले आकर्षक चुंबक में जोड़कर, हवा में मिश्रित प्रेम रूपी गुणों की भावतरंगों को हमारे शरीर के आकर्षित करके सांस लेने से, प्राण के चुंबक में पड़ते समय, स्नेह के साथ

बोलना तथा स्नेह के योग्य कार्य करना हो जाता है । उस समय मुँह में लार स्नेह के साथ स्रवित होकर, हमारे खानेवाले आहार को स्नेह के साथ हज़म करने से, आहार का सार स्नेह से भरा रक्त के रूप में बदलता है । प्रेम के गुणों की भावतरंगों के सूक्ष्म परमाणुओं को सांस लेने से, ये सब हमारे शरीर भर चलते वक्त स्नेह रूपी सूक्ष्भ परमाणुओं को रक्त छानकर लेता है । स्नेह पूर्वक श्वास निकलता है । तन और मन प्रसन्न होते हैं । तब कृतकार्य भी आनन्दमय हो जाता है ।

रक्त में मिश्रित होनेवाले स्नेहमय आहार का सार, रक्त में छान कर लेनेवाले स्नेहमय भावतंरगों के सूक्ष्म परमाणुएँ – ये दोनों प्राण के संचालन से माँस के रूप में बदलते समय, माँस व शरीर संतुष्ट होते हैं ।

दूस्रों के कष्टों को कानों से सुनते समय

समझेंगे कि आप एक मित्र के पास प्रेम, सद्‌गुण, पाश और वात्सल्य के साथ संपर्क में हैं । मित्र भी वही तरह संपर्क में हैं । लेकिन मित्र को अप्रतीक्ष रूप से, संदर्भवश, व्यापार में नष्ट होकर, उससे परिवार में कई उलझन उत्पन्न होकर, मन में वेदना के साथ आप से कहते समय, मित्र के पास आप के पाश से, मित्र वेदना के साथ कष्टों के बारे में बताने को आप वात्सल्य के साथ सुनते रहते समय, आप के शरीर के आकर्षक चुंबक में जोड़कर, हवा में मिश्रित वेदना की भावतरंगें आपके शरीर से आकर्षित होकर आपके सांस लेते समय, आपके वात्सल्य गुण के भाव बलहीन होकर, शरीर में थकावट आना तथा मन वेदना होकर सांस लेते समय उत्पन्न होनेवाला लार, आपके खानेवाले आहार को कठिन बनाकर आंत में

उससमय आपके श्वास में लेने को छानकर लेना और आहार का सार रक्त बनना – इन दोनों के मिश्रण से रक्त में बदलाव होना, रात को रक्त मांस के रूप में बदलते समय, मांस में न समझने की तरह दर्दों के उत्पत्ती होना और नींद न आने की स्थिति हो जाती हैं ।

दिन के समय जीवन में, उदाहरण के लिए लें कि हम एक कपडे का दूकान चलाते हैं । कपड़े खरीदनेवाले को कपड़ों को दिखाकर कपड़ों के दाम कहते समय, यानी दूध में शक्कर डालने पर भी यदी उसमें थोड़ा सा तीखापन पड़ जाएँ तो तीखापन की स्थिति ही पहले ज्ञात होने की तरह, आप शांत होकर कपड़े का दाम कहने पर भी, आपके मित्र के वेदनापूर्वक बतानेवाली भावतरंगों को आपके श्वास करने से, आपके अच्छे गुणों के भाव के साथ वेदना के भाव शब्द की ध्वनि में मिश्रित होकर, कपड़े खरीदनेवाले के भाव में प्रेरित होकर, आँखों से कपड़े को देखते समय, कपड़ों पर घृणा होकर, कपड़ो को बिना खरीदे चले जाते हैं । आपके मन तो और भी वेदना की भावतरंगों को सांस लेना पड़ता है । इस तरह उस दिन के व्यापार में मंदगति आ जाता है । इस स्थिति में घर जाकर विवरण न जाननेवाले हाथ के शिशु से अपनी फ़िक्र को हटाने के लिए पुचकारते हुए बोलें तो, उस शिशु को न समझने की तरह शरीर में पीड़ा होकर थोड़ी ही देर में रोने लगता है । आपके गलती करने विना ही संदर्भवश से आप भी वेदना में पड़ जाना पड़ता है ।

आँखों से मुसीबतों को देखते समय

आप धर्म के विचार के साथ प्रेम, वात्साल्य, पाश, ज्ञान, धैर्य तथा शांत के साथ जीने के विचार से आपके जीवन में पालन करते रहने पर भी, एक व्यक्ति दूस्रे को जब तकलीफ़ देता रहता है, तब आप उनको देखते समय, आपकी आँखों की इन्द्रिय ज्ञान से गुस्से के भाव को आकर्षित करके, शरीर के आकर्षक चुंबक में जोड़ने पर, शरीर हवा में मिश्रित गुस्से की भावतरंगों को आकर्षित करने से आपके श्वास में मिलकर, प्राण में रगड़ने से, क्रोध के भाव अनजान में ही क्रोध के साथ बोलने या सुनने को प्रेरित करता है । उस समय आपके लार भी बदलाव होकर, आपके खानेवाले आहार में मिलने से, आंत में एक प्रकार का जलन होता है । तब जो कुछ खायें वे सब स्वाद में कमी होकर ही रहेंगे । इसलिए कम आहार लेने से, शरीर में थकावट आने का कारण बनता है । भाव तरंगों को रक्त के छान कर लेने से, रात को सोते वक्त, रक्त मांस के रूप में बदलते समय शरीरों में एक प्रकार का जलन और नींद न आने की स्थिति होने का कारण बनते हैं ।

उदाहरण के लिए देखें । आप खेत को पक्व बनाकर धान को बोकर, धान उगकर आता है । हवा में तैरते आनेवाले न चाहनेवाले बीज खेत पर गिरकर बेकार पौधे उगकर, धान के लिए डालनेवाले खाद को लेकर बेकार पौधे बढ़ते हैं । यदी बेकार पौधों को नहीं निकालेंगे तो धान की विकास घट होकर धान का स्थर में कमी हो जाने की तरह, आपके सांस लेनेवाले गुस्सा गुण की भावतरंगों की सूक्ष्म परमाणुएँ, आपके रक्त में बढ़कर माँस के रूप में बदलते समय माँस तथा शरीर के अंगों पर बढ़कर, शरीर में दर्द, सिर दर्द आदि

संकट शरीर में होना और उससे शरीर थकावट होकर, किसी भी काम को दुर्बलता के साथ करने का कारण बनते हैं ।

आप दुनिया की स्थितियों को जानने के लिए पत्रिकाओं पढ़ते हैं – इसे अनुमान कीजिए । पत्रिका के वचन में 'रात को 8.00 बजे के समय भोजन लेते रहते वक्त अचानक डाकू लोग घर में घुसकर घर के सारे लोगों को मार पीटकर, तीव्र घाव लगाकर, घर के सभी चीज़ो को लूटकर चले गये ।" – इस तरह पढ़ने पर आपके अनजान में ही भय मिश्रित वेदना की भावतरंगों को सांस में लेने से, वे आपके रक्त में मिल जाती हैं । उस दिन रात को आप शांत होकर लेटने पर या किसी एक किताब को पढ़ते रहने पर भी, अप्रतीक्ष खिड़की के दरवाजे का ध्वनि 'ड़प' बनकर आपके कानों में सुनते ही आपके अनजान में ही, भय के भाव प्रेरित होकर, शरीर रोमांचित होकर, भय की भावतरंगों को श्वास लेकर, और भी भय की भावतरंगें बढ़ने के कारण बनते हैं । इस तरह अकसर हो जाने से किसी भी धंधे में लग जाएँ तो मन में एक प्रकार के भय के साथ कार्यवाई करने की स्थिति हो जाती है ।

समझेंगे कि आप एक काम के लिए सड़क पर पैदल चलते रहते हैं । सड़क के नोक के पास चलते समय एक कार अचानक मुड़ने से, आप पर टकराने की स्थिति को देख पड़ें तो आँखों के इंद्रिय ज्ञान भय की भावतरंगों को तुरंत आकर्षित करके, आपके शरीर में होनेवाले आकर्षक चुंबक में बहाने से, आपका शरीर तेज़ी से भय की भावतरंगों को अतीब रूप में सांस लेने से, तेज़ी से चलाकर, शरीर में कंपन होकर, आपकी रक्षा करने का ख्याल तेज़ी से उत्पन्न होकर, दुर्घटना से आपकी रक्षा कर लेने पर भी, अत्यन्त

भय के धड़कन के साथ वाहन के सारथी को देखते समय, क्रोध के भाव प्रेरित होकर, क्रोध के भाव को भी उससमय सांस में लेने से, भय के धड़कन के साथ क्रोध की भावतरंगें प्राण में रगड़ने से, इंद्रियों के यंत्र संचालित होकर, क्रोध के साथ बोलना तथा उसके योग्य कार्रवाई को करने देते हैं ।

आपके दुर्घटना से बचने को देखनेवाले आपको देखकर सांत्वना देंगें कि आपके किये धर्म से आपको भगवान ने रक्षा की । लेकिन आपके श्वास लेने वाले अत्यंत भय तथा कोध की भावतरंगों के सूक्ष्म परमाणुएँ रक्त में मिलकर माँस बन जाते हैं । खेत को पक्व बनाकर धान बोकर, पौधे उगते रहने की स्थिति में कहीं से हवा में मिश्रित होकर आनेवाले बीज, खेत पर गिरने से, वे भी उग जाते हैं । आपके अप्रतीक्ष रूप में अत्यंत भय के भाव के साथ क्रोध के भाव को भी साँस में लेने से, रक्त में मिलकर, रक्त माँस के रूप में बदलना तथा माँस में भय के भाव के परमाणु तिशुएँ क्रोध के भाव के परमाणुतिशुओं के रूपधारण करके, उसके संचालन से माँस में अम्ल स्रवित होकर, ये अम्ल शरीर को चलानेवाले नसों को आकर्षित करके, नसों के संचालन से, नसों में होनेवाले अम्ल के भाव के सार को हड्डियों के आकर्षक चुंबक शक्ति से आकर्षित होकर, हड्डि के अंदर मज्जे के रूप में छान कर लेते हैं । (इस मज्जे को ही **'प्रारब्ध'** – इस प्रकार ज्ञानियों ने नामधारण किये ।)

उदाहरण के लिए नीम के पेड़ को लें । नीम के बीज कितने प्रकार के भाव के सार से बीज बन गया, वह धरती पर उगते आते समय, उसके भावों के सार में मिश्रित आकर्षक चुंबक की शक्ति से

धरती में होनेवाले पानी तथा हवा में तैरते आनेवाले अपनी जातीय भावों के सार को आकर्षित करके, आकर्षित कर लेनेवाली गरमी से पानी में मिश्रित भाव के सार जम हो जाने से गरमी के संचालन से नीम का पेड़ बनकर उगते हैं ।

उसी तरह, अत्यंत भय के गुण की भावतरगों के सार और क्रोध गुण की भावतंरगों के सार को हड्डी के अंदर मज्जे के रूप में छानकर रखने से, प्राण के संचालन में, हड्डी के चुंबकीय आकर्षण से, शरीर हवा में फैलनेवाले भय गुण की भावतरंगों तथा क्रोध गुण की भावतंरगों को आकर्षित करते हैं ।

नीम का पेड़ किस तरह अपने भावों के कड़वापन के सार को आकर्षित करके, अपने को विकसित करते हुए, अपने विकसित कर लेनेवाले कड़वापन के भावो के सार की गंध को प्रकट करते समय, यदी उसे आप सूँघें तो उसके कड़वापन की भावतरंगें आपके मुख विचका कर देते हैं ।

उसी तरह आपके शरीर के आकर्षित करनेवाले भय के गुण के भावों को तथा क्रोध गुण के भावों को आपके सांस लेते वक्त, मुख कडुआ हो जाता है ।

यदी नीम के पत्तों को खायें तो कड़वापन के भाव आंत में चलाकर उबकाई होते समय वमन आ जाएगा – यह भय मिश्रित ख्याल उत्पन्न होता है । इसीतरह आपके शरीर के आकर्षित भय के गुण की भावतरंगों तथा क्रोध गुण की भावतरंगों के आप के सांस लेते रहने से, रक्त के छान कर लेने से भय तथा क्रोध गुणों की भावतरंगें रक्त में सूक्ष्म परमाणुओं के रूप में विकास पाकर, रक्त में दबाव आदि रोगों के उगने का कारण बनना, उससे आवेग की बोली

को कान में सुनते ही भय के ख्याल उत्पन्न होना, उससमय भय से, विचार करने की शक्ति खोकर गुस्से में आना, किसी एक चीज़ के नीचे गिरने की आवाज़ कान में पड़ते ही, आपके अनजान में ही शरीर में रोमांचिन होना - इन सब से भय का ख्याल उत्पन्न होता है । इसी तरह किसी एक क्रिया को करने की कोशिश करें तो आपके अनजान में ही जल्दबाजी तथा क्रोध के भाव के साथ कार्रवाई करने को प्रोत्साहित करता है । लेकिन थोड़ी सी रूकावट होने पर भी नाराज़ के ख्याल उत्पन्न हो जाता है । रक्त, माँस तथा शरीर के अंगों के रूप में बदलते समय, उसमें भय और क्रोध गुणों के परमाणु तिशुओं के रूप में विकास पाकर, माँस में तथा शरीर के अंगों में मांस में वातरोग, आंत में वातरोग, पक्षाघात आदि शरीर के अंगों में वात रोगों के आने का कारण बनना और मांस में उत्पन्न होनेवाले अम्लों को शरीर के अंगों को चलानेवाले नस वर्गों के आकर्षित करने से गठिया, हड्डियों के जोड़ में वातरोग, हाथ पैर स्तंभित करने का वातरोग आदि रोगों के उत्पन्न होने का कारण बनते हैं ।

उदाहरण के लिए देखें । एक पौधा अच्छी तरह उगकर, फूल फूलकर, कच्चा फल बनकर, पक्का फल के रूप लेकर, बीज बनने से वह बीज फिर उगकर अच्छे पौधे के रूप में पनपता है ।

अप्रतीक्ष रूप से उस पौधे में कीड़े मकोड़े गिरकर पौधों के सार को खा लेने पर, पौधे का सार कम होकर, ठीक तरह से फूल न फूलना, फूल आने पर भी उसमें उगनेवाले बीज के सारहीनता से वह बीज अपने वर्ग के पौधा बनकर उग न सककर, उस बीज का सार दूस्रे पौधे का खाद के रूप में मिल हो जाता है । उसी तरह अच्छे गुणों के भावों को श्वास लेकर, शरीर के अंगों में उगनेवाले भावों

के परमाणुएँ, शरीर को संचालन करनेवाले प्राण के आकर्षण में जाकर प्राण के आलिंगन में प्राणात्मा चलते रहकर, शरीर पक्का होकर, शरीर से विलग होनेवाला प्राणात्मा पुनर्जन्म में मानव का रूप पाता है ।

अच्छे गुणों के भाव के साथ सांस लेकर, तंदुरुस्ती के साथ जीते रहने पर भी, अप्रतीक्ष भय गुण का भाव, गुस्सा गुण का भाव, वेदना गुण का भाव, क्रोध गुण का भाव या दुर्बलता के गुण का भाव को संदर्भवश यदी सांस लेना पड़ें तो, अच्छे गुण बलहीन होकर माँस तथा शरीर के अंगों पर रोग उत्पन्न होकर, उस में उगने वाले सूक्ष्म परमाणुएँ, प्राण के आकर्षण में जाकर, प्राण के आलिंगन में प्राणात्मा बनकर संचालन करने से कुशलता से रहनेवाला शरीर बलहीन होकर, शरीर क्षीणित होकर, प्राणात्मा का विकास कम होकर, शरीर छोड़कर प्राणात्मा विलग होकर चलता है । इस तरह विलग होकर चलनेवाला प्राणात्मा पुनर्जन्म में मानव का रूप पाने की योग्यता खो जाता है ।

ऊपर कहने अनुसार हर एक मानव के शरीर में, अपने अपने स्थिति के अनुसार सांस लेकर विकसित करनेवाले अच्छे गुणों के भावों के साथ बोल उठने पर, अच्छे गुण की ध्वनि की लहरें बनकर, बात में प्रकट होकर, हवा में तैरती रहती हैं । इसी तरह बुरे गुणों के भावों के साथ कोसने पर भी गालिओं में बुरे भावों की ध्वनि की लहरें प्रकट होकर हवा में तैरती रहती हैं ।

उदाहरण के लिए देखें । दुनिया में 400 करोड़ लोग रहते हैं । उनमें कुछ वैज्ञानिक लोग अति सूक्ष्म ज्ञान के भावों की ऊर्जाओं को अपने तरस्नीय भावों से सदा तरसकर, आँखों तथा कानों के इंद्रिय

ज्ञान से अतिसूक्ष्म भावों की ऊर्जाओं को आकर्षित करके, अपने शरीरों में जोड़कर, अपने भीतर विकसित कर लेनेवाली भावतरंगें (उनकी) बोली में ध्वनि की लहरें बनकर प्रकट होकर हवा में तैरती रहती हैं ।

यदी वैज्ञानिक लोग, लोगों को कुशलता तथा संपन्नता पाने देकर, नाम और प्रशंसा पाकर प्रसन्न होकर रहने पर भी, वैज्ञानियों के जीवन में संदर्भवश, आँखों तथा कानों के इन्द्रिय ज्ञान से गुस्सा गुण की भावतरंगों को सांस लेने पड़ें तो, गुस्सा गुण की भावतरंगें शरीर में उगकर, क्रोध भाव के रूप में बढ़कर (सूचना: क्रोध भाव यही है कि सदा शत्रुओं को याद दिलाकर गुस्से के भाव को प्रिरित करते रहनेवाली ऊर्जा होती हैं ।) वे क्रोध की भावतरंगों के रूप में वीर्य होकर, शत्रु के देश या अपने शत्रुओं को नाश करने की स्थिति का ख्याल उत्पन्न होता है । लेकिन अपने सांस लेने गुस्सा की भाव तरंगें, क्रोध की भावतरंगों के रूप में विकसित होने की स्थिति में वातरोग, रक्त में दबाव आदि रोग वीर्य होकर, न केवल शरीर को स्थंभित होने देती हैं बल्की विचारों को भी स्थंभित कर देती हैं ।

रोगों से शरीर में उगनेवाले सूक्ष्म परमाणुएँ प्राण की आकर्षण में जाकर, प्राण की आलिंगन की प्राणात्मा के रूप में स्थित होकर, शरीर छोड़कर विलग होने के बाद, प्राणात्मा पुनर्जन्म में मानव का रूप पाने की स्थिति खोकर कीड़ा, मकोड़ा या जानवर बनने की स्थिति में पहुँचकर, हवा में तैरता रहता है ।

इसी तरह सामान्य मानव से लेकर वैज्ञानिक तक, परिस्थिति की हालत के अनुसार, संदर्भवश आँखों तथा कानों के इन्द्रिय ज्ञान से आकर्षित गुस्सा, क्रोध, नाराज़, अत्यंत भय आदि गुणों की

भावतरंगों को सांस लेकर, शरीरों में दाखिल होकर, उत्पन्न होनेवाले रोगों को ही वैज्ञानिक लोग हटा सकते हैं ।

लेकिन रोगों से शरीर में उगने वाले सूक्ष्म परमाणुएँ प्राण के आकर्षण में जाकर, प्राण के आलिंगन में प्राणात्मा बनकर संचालित रहनेवाले भावों के परमाणुशिशुओं को वैज्ञानिक लोग नहीं बदल सकते ।

वैज्ञान की प्रगति से मानव शरीर की रक्षा करने के अलावा, उनके शरीरों को संचालित करनेवाले प्राणात्मा को प्रकाशमान स्थिति के रूप में बदलने की ताकत वैज्ञानिक लोगों पर नहीं है ।

ज्ञानि लोग तथा महर्षि लोग अपने तप की ताकत से और ध्यानों से ब्रह्माण्ड में फैलते रहनेवाली महाऊर्जाओं की भावतंरगों की सच्ची स्थिति को देखकर, जानकर, इंद्रियों के ज्ञान से, उन महाऊर्जाओं की भावतरंगों को अपने तप एवं ध्यानों की महाऊर्जाओं से अपने इंद्रियों के ज्ञान से शरीर में इकट्ठा करके विकसित करने से, संदर्भ वश से, इन्द्रिय ज्ञान से आकर्षित करनेवाले बुरा, गुस्सा, क्रोध तथा नाराज़ आदि गुणों की भावतरंगों को सांस लेने पड़े तो उनको मिटाकर, अपने शरीरों में महाऊर्जाओं से भरी भावतरंगों को विकसित करके, प्राणात्मा को प्रकाशमान स्थिति में बदलते रहने की स्थिति में, अपने वचन तथा क्रिया से प्रकट करनेवाली महाऊर्जाएँ, ध्वनि की लहरें बनकर हवा में फैलते रहना और इसके साथ, अपने प्राणात्मा को प्रकाश के रूप में बदलकर शरीर छोड़कर आकाश की ओर जा पहुँचकर, सप्तऋषि मंड़ल बनकर, शोभित होकर संचालित करते हुए रहते हैं । उससे बाहर निकलते रहनेवाले प्रकाश तथा ध्वनि की ऊर्जाओं से भरी मावतरंगे ब्रह्माण्ड में फैलते ही रहती हैं ।

ऊपर कहनेवाली स्थितियों को हमारे गुरुनाथजी मुझे दृश्य तथा भावपूर्वक समझाकर, उपदेशित करके कृपा करने को हम आपको उपदेशित करते हैं ।

सच्चे ज्ञानि लोग और महर्षियों के उपदेशित करके कृपा करनेवाली ध्वनि रूपी भावतंरगों और सप्तऋषि मंड़लों से बाहर निकलकर ब्रह्माण्ड़ में फैलते रहनेवाली ध्वनि तथा प्रकाश की ऊर्जाओं से भरी भावतरंगों को पाने के लिए हमें अपने गुरुनाथजी के उपदेशित करके समझाने वाले – “सूरज से बाहर निकलनेवाली चुंबकीय शक्ति को ध्यान के द्वारा अपने अंदर पाकर, उसकी सहायता से, ज्ञानि लोग तथा महर्षियों के प्रकट करनेवाली ऊर्जाओं से भरी ध्वनि की लहरें रूपी भावतरंगों को और सप्तऋषि मंड़लों से प्रकट होकर ब्रह्माण्ड में फैलनेवाली ध्वनि एवं प्रकाश की ऊर्जा से भरी भावतरंगों को पाने के लिए, हमारे जीवन में हमारे अनजान में ही, हमारे इन्द्रिय ज्ञान से आकर्षित होकर, हम श्वास लेकर, बुरा, गुस्सा, क्रोध, नाराज़ आदि गुणों की भावतरंगों को मिटाने के लिए ‘आत्म शुद्धि’ कर लेने की रीतिरिवाज़ को – हमें अपने गुरुनाथजी के उपदेशित करके कृपा करने को – हम आपको भी पाना चाहिए – इसी आभिलाषा से, ‘आत्म शुद्धि’ करके बुरी, गुस्सा, क्रोध, नाराज़ आदि भावतरंगों को मिटाकर, आप भी कुशलता व सम्पन्नता पाकर, आप के प्राणात्मा को प्रकाशमान स्थिति पाने के लिए हमारे गुरुनाथ जी की प्रार्थना करते हैं ।

बाहर जाते समय

'आत्म शुद्धि' करके, "मेरा वचन और क्रिया पवित्र होने की कृपा करें ईश्वरा! मेरे वचन व साँस से दुनिया के लोगों को कुशलता पाने की कृपा करें ईश्वरा! मुझे अच्छा मन तथा मुझे देखनेवालों को अच्छे मन और मेरा मार्ग अच्छा मार्ग बनकर तुम्हें न भूलने की स्थिति पाने कृपा करें ईश्वरा!" इस तरह याद करने के बाद बाहर चले जाइये ।

काम करनेवाले जगहों पर

दफ़तरों में काम शुरू करने के पहले "आत्म शुद्धि" करके, "मेरा वाक् तथा क्रिया पवित्र होने चाहिए । मेरे वचन एवं साँस दुनिया के लोगों को शांति पाने की सहायता करनी चाहिए । मेरा कार्रवाई सब लोगो को भलाई करनी चाहिए ।"–इस प्रकार ध्यान करके काम को शुरू करें ।

व्यापार करनेवालों को

व्यापार शुरू करने के पहले "आत्म शुद्धि" करके, मेरे वाक् तथा क्रिया पवित्र होने चाहिए । मेरे वचन एवं साँस दुनिया के लोगों को शांति पाने की सहायता करनी चाहिए । मुझसे पदार्थ खरीद जानेवालों को कुशलता एवं संपन्नता पाना चाहिए, ईश्वरा! – इस प्रकार याद करके व्यापार के लिए रखनेवाले पदार्थों को देखना चाहिए ।

पत्रिकाओं को पढ़ते समय

पत्रिकाओं को पढ़ते समय, हमारे अनजान में ही कई संकट की भावतरंगें हमें पहुँचती हैं । इसलिए हमें पत्रिकाओं को पढ़ने के बाद, "आत्म शुद्धि" करके, "कल घटनेवाले सब कुछ भलाई करनेवाले होने चाहिए ।" – इस प्रकार याद करना चाहिए ।

रिश्तेदार व मित्रों के घर जाते समय

रिश्तेदार व मित्रों के घर जाते समय "आत्म शुद्धि" करके "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश इस परिवार के सभी लोगों को पाकर कुशलता व संपन्नता पाना चाहिए ईश्वरा!" – इस प्रकार याद करना चाहिए ।

विवाह के लिए जाते समय

विवाह होनेवाले जगह को जाते समय "आत्म शुद्धि" करके "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश वर, वधू दोनों पाकर उनके जीवन में कुशलता तथा संपन्नता पाना चाहिए ।" – इस प्रकार याद करके उन्हें आशीर्वाद देनी चाहिए ।

खेत में बीज बोतते समय

खेत में बीज बोतते समय, "आत्म शुद्धि" करके ये बीजों को अच्छी तरह उगना चाहिए ईश्वरा! – इसे खानेवालों को तंदुस्स्ती की स्थिति पाना चाहिए! – इस प्रकार याद करके बीज बोना चाहिए ।

खेत में खाद डालते समय, “आत्म शुद्धि” करके खाद डालना चाहिए । पौधा अच्छी तरह पनपने के लिए खाद डालने जाते सभी समय में “आत्म शुद्धि” करके खेत के पौधों को देखकर, “पौधे अच्छी तरह पनपकर उगना चाहिए ईश्वरा!” – इस भाव के साथ पौधों को देखना चाहिए ।

रोगियों से मिलते समय

रोगियों से मिलते समय “ओं ईश्वरा गुरुदेवा!” – इस तरह याद करके “आत्म शुद्धि” करके, “आप कुशलता पाएँगे! आपको किसी भी कमी नहीं आएगी ।” – इस प्रकार बताकर उन्हें कुशलता पाने के लिए आर्शिवाद देनी चाहिए ।

संकट देनेवाली भावतरंगों को हटाने के लिए

संदर्भवश हमें या किसी दूस्रे को कोई व्यक्ति के कोसने को सुनने पड़ते समय, अगला क्षण, “आत्म शुद्धि” करके, “आगे वे जो कुछ बोलते हैं, वे सब भलाई की बोल होनी चाहिए, ईश्वरा!” – इस तरह याद करना चाहिए ।

दृर्घटनाओं को या अप्रतीक्ष स्थितियों को देखते समय

यदी दुर्घटनाओं को या अप्रतीक्ष स्थितियों को देखने पड़ें तो, तुरंत ‘आत्म शुद्धि’ करके, “बाधा में पड़नेवालों को भलाई होनी चाहिए. ईश्वरा!” इस प्रकार याद करके पाँच मिनट या उसके अंदर “आत्म शुद्धि” कर लेना चाहिए । (इस तरह करना अत्यंत आवश्यक है)

दुखभरी धटनाओं को जाते समय

दुख (मृत्यु) होनेवाले घर जाते समय “आत्म शुद्धि” करके, सप्तऋषि मंड़लों की महाप्रकाश में शरीर से विलग होकर जानेवाला प्राणात्मा को मिश्रित होना चाहिए!” – इस प्रकार याद करना चाहिए ।

कुल दैवों की पूजा करने का नियम

माता और पिता आपको पैदा करके, बढ़ाव करने केलिए कई तकलीफ़ें तथा मुसीबतें झेलकर, विकसित करके व्यक्ति बनाकर, जीने के लिए मार्ग दिखाकर, कई सुविधाओं को करके देकर, अच्छे मार्ग पर चलाकर, अच्छी राह में आपके चलने के लिए कई आभिलाषाओं के साथ आपको विकसित करनेवाले माता, पिता और काल से शरीर से विलग होनेवाले हमारे पूर्वजों को दैव मानकर पूजा करने के नियम ही भूत कालिक ज्ञानियों से बनाये हुए कुल दैवों की पूजा करने के नियम होते हैं ।

माता व पिता के पहननेवाले कपड़ो तथा उनके मुख्य रूप से उपयोगित करनेवाली चीज़ों को रखकर, परिवार के सभी लोग एकत्रित होकर, माता व पिता के आपको अच्छी राह पर चलाने के अभिलाषा के साथ होनेवाले अच्छे भावों के विचारों को दैव मानकर, आपके परिवार के सभी लोगों को उन दैविक गुणों को पालन करने की कृपा करनी चाहिए – इस प्रकार याद करके, माता व पिता के प्राणात्मा को स्वर्ग जा पहुँचना चाहिए – इस प्रकार प्रार्थना करते रहते थे । आगे चलकर उसी को ही कुल दैव के रूप में बदलकर पूजा करने लगें ।

रोज़ ध्यान की रीति के अनुसार, ध्यान करते रहनेवाले, माता व पिता की कृपाआशिषें पाते हैं । अप्रतीक्ष हानेवाले वेदना तथा भय की भावतरंगें शरीर में न जोड़ने की तरह आत्म शुद्धि भी कर लेते हैं ।

हफ़्ते में एक दिन परिवार के सभी लोग एकत्रित होकर संयुक्त ध्यान करके माता व पिता के प्रसाद देते समय, माता व पिता की दृष्टी पड़ने से बच्चे अपने अभाग्य एवं रोगों को हटाने की मदद पाते हैं । जब जब ध्यान करते हैं, तब तब सप्त ऋषि मंड़लों तथा महर्षियों को याद करके महर्षियों की कृपाशक्ति पानी चाहिए – इस भाव के साथ रहने से महर्षियों की कृपाशक्ति की लहरें धीरे धीरे शरीर में इकट्ठा होकर, अच्छे भाव ताकत पाते हैं ।

इसलिए परिवार के सभी लोगों को ऊर्जा होने से, हफ़्ते में एक बार ध्यान करके अंत में घर के मुखिया या मुखियाइन को "हमारे कुल दैव रूपी पूर्वजों के प्राणात्मा को सप्त ऋषि मंड़लों के महाप्रकाश में मिलना चाहिए, ईश्वरा!" – इस तरह बताना चाहिए । दूस्रों को उसे दुहराना चाहिए । इस तरह परिवार के सभी लोगों के बताने से पूर्वज़ों के प्राणात्मा आकाश पहुँचकर, सप्र ऋषि मंड़लों के महाप्रकाश में शामिल होते हैं । ज्ञात करें कि यही माता, पिता व पूर्वजों को आपके करनेवाला प्रधान कर्तव्य होता है ।

मंदिर जाकर पूजा करने के नियम

किसी भी मंदिर जाएँ, विनायक (गणेश) के मंदिर को पहले जाकर विनायक को देखकर, "ओं ईश्वरा!" – इस प्रकार अपने प्राण को याद करके, आकाश की ओर देखकर, "इन सब को अनुग्रह करने वाले महर्षियों की कृपा आशिषें मुझे पानी चाहिए,

ईश्वरा!" – इस तरह तरसने के बाद, आँखों को बंद करके, "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मेरे जीवान्मा को पानी चाहिए ।" – इस भाव के साथ शरीर को याद करके, आँखों को खोलकर, दीपाराधना दिखाते समय, "मार्ग जानकर कार्रवाई करने की ज्ञानस्थिति पाने की कृपा करें ईशवरा!" – इस प्रकार याद करके तरसने के बाद, वहाँ के फूलों को देखकर "फूल का सुगंध मुझे पाने की कृपा करें ईश्वरा!" – इस तरह सोचकर तरसने के बाद फलों को देखकर, 'इन फ़लों के स्वाद की तरह मेरे वाक् और कार्य रुचिकर होने चाहिए ।" इसतरह याद करके तरसने के बाद, "यहाँ आनेवाले सभी लोगों को महर्षियों की कृपा आशिषें पानी चाहिए, ईश्वरा! उनके जीवन में कुशलता एवं संपन्नता पाने की कृपा करें ईश्वरा!" – इस प्रकार याद करके तरसना चाहिए ।

रख लें कि मीनाक्षी अम्मन (देवी) का मंदिर जाते हैं । उस मंदिर के स्थल पुराणों के अनुसार यदी मीनाक्षी अम्मन की पूजा करके प्रार्थना करें तो सर्व दुखों को हटाकर, याद में जिसे सोचते हैं उसी तरह सर्व सुखों को देगीं । प्रार्थना करनेवाले वरदान देकर, प्रार्थना करनेवाली कृपा देकर, हम सब को अच्छी राह ले चलेगी । भलाई को ही करेगी – इस प्रकार अच्छे उपदेशों को काव्य के रूप में सृष्टि करके उस राह पर सामान्य लोग भी आत्मज्ञान प्राप्त करने लायक मंदिरों को निर्माण करके, अच्छे गुण के कार्रवाई को समझाने के लिए मूर्तियों को बनाकर, अच्छे गुणों की गंध को समझाने के लिए सुगंधित फूलों को डालकर, वाक् में स्वाद (मीठापन) लाने के लिए फ़लों को रखकर, इन सब को अंधेरे में छिपाकर, कपूर दीप दिखाकर, अंधेरे को हटाकर, वहाँ देखते समय, इन्द्रिय ज्ञान से अच्छे भावों को सूँघने देकर, सामान्य लोग भी

आत्मज्ञान प्राप्त करने के मार्ग को महर्षि, ज्ञानि तथा सिद्धा लोग समझाकर चले गये ।

इसलिए ध्यान करनेवाले सभी लोगों को मंदिर जाते समय, पहले विनायक का मंदिर जाकर, पहले सूचित करने के अनुसार ध्यान करके, आगे अम्मन (देवी) का मंदिर जाते वक्त, गोपुर के द्वार के सामने आते ही गोपुर को देखकर, "मुझे उन्नतीय विचारें पाना चाहिए" - इसे सोचकर, इसी भाव के साथ, किसी से भी न बोलकर, प्रहार को चक्राहट करके, सन्निधि के सामने बसा हुआ ध्वजस्तंभ या धूपस्तंभ होनेवाले स्थल में एक मिनट तक खड़ा होकर सन्निधि को सीधे देखना चाहिए । तब "इस दैविक गुण को मुझे पाना चाहिए, ईश्वरा!" इस तरह के तरसनीय भाव के साथ, आपके प्राण को याद करके, आकाश की ओर देखना चाहिए । आकाश की ओर देखते समय, "इस दैविक गुण को अनुग्रहित करनेवाले धृव महर्षि की कृपाशक्ति मुझे पाने की कृपा करें, ईश्वरा! । धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश हमें पाने की कृपा करें ईश्वरा" । इस भाव के साथ तरसते हुए, आँखों को बंद करके, "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश मेरे शरीर भर फैलकर, रक्त के नलों में मिलकर, रक्त के नलों में होनेवाले जीवान्मा तथा जीवाणुओं को पाने की कृपा करें ईश्वरा!" इस भाव के साथ शरीर भर एक मिनट तक ध्यान करके, आँखें खोलकर मंदिर के अंदर जाना चाहिए ।

प्रहार को चक्राहट करते समय 'इस दैविक गुण की तरह मेरे वाक् और क्रिया होने चाहिए ।' - इस भाव के साथ चक्राहट करके, मूलस्थान आने पर, इसी भाव के साथ मूल विग्रह को देखते रहिए ।

कपूर दीपाराधना दिखाते समय, 'मार्ग जानकर कार्रवाई करने की इस ज्योति की स्थिति पानी चाहिए ईश्वरा' – इस भाव के साथ देखिए । तब मूलविग्रह पर डालने वाले पुष्पालंकार दीख पड़ेगा । उस समय इस प्रकार तरसते रहिए कि "इन फूलों की सुगंध मेरे अंदर पानी चाहिए ईश्वरा!" । वहाँ रखनेवाले फलों को देखकर, "इन फलों की स्वाद की तरह मेरे वाक् व क्रिया रुचिकर (मीठापन) होने चाहिए" । इस भाव के साथ तरसते हुए एक मिनट आँखें बंद करके "मेरे जीवान्मा को इस दैविक स्थिति पानी चाहिए ईश्वरा" । इस भाव को शरीर भर फैलाने के बाद आँखें खोलकर, "यहाँ आनेवाले सभी लोगों को इस दैविक स्थिति पानी चाहिए ईश्वरा" – इस भाव के साथ बताने के बाद सन्निधि से बाहर आकर मंदिर में एक शांत स्थल को देखकर एक कोने पर बैठकर, ऊपर कहने के अनुसार पाँच मिनट तक आँखों को बंद करके, ध्यान करने के बाद आँखें खोलकर, उस मंदिर आनेवाले सारे मानवों के शरीरों को 'आलय' (मंदिर) मानकर, उन शरीरों को संचालित करके शासन करने वाले प्राण को अंतर्यामी (भगवान) के रूप में विचार करके, "यहाँ अनुग्रह पाने लिए आनेवाले सारे प्राणात्माओं को कुशलता, संपन्नता और धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाने की कृपा करें ईश्वरा!" – इस भाव को मंदिर भर फैलाइए ।

इस नियम के अनुसार मंदिर जाकर पूजा करके ध्यान करने से ज्ञानि तथा महर्षियों के उपदेशित कृपाशक्ति की लहरें आपके आत्मा में जोड़ती हैं । उससे आपका आत्मा दैविक स्थिति पाता है । आप मंदिर में दस मिनट तक ध्यान में बैठकर, "मंदिर आने वाले सभी लोगों को जीवन में कुशलता एवं संपन्नता पाने की कृपा करें, ईश्वरा!" – इस भाव के साथ फैलानेवाले सांस की लहरों से आप

मंदिर आनेवाले सभी लोगों के जीवन में कुशलता एवं संपन्नता पाने की सहायता करने वाले हो जाएँगे ।

जीवन में भलाई को ही करके, किसी भी व्यक्ति को तकलीफ़ न देने की तरह रहने पर भी, संदर्भवश और अप्रतीक्ष रूप से भयभीत हो जाते हैं । उस समय भय की भावतरगें हमारे शरीर में इकट्ठा हो जाती हैं । रख दें कि एक मित्र हमें देखते हैं । वे अपने कष्ट व नष्टों के बारे में वेदना के साथ बताते हैं । उसे हम सुनते रहते हैं । उनके वेदना के साथ बतानेवाली भावतरंगें हमारे शरीर में मिलकर हमें भी वेदना में डालती हैं । इस तरह हमारे गल्ती करने के बिना ही, हमारे जीवन में कई दुख, विभिन्न वेदना की भावतरंगें हमारे अनजान में ही घेरकर, मनशांति खोकर, दुख में पीड़ित लोगों के दुख की भावनाओं को हटाने के लिए ही, ज्ञानि लोगों ने उस काल में मंदिरों के निर्माण करने के लिए सहायता की ।

इसलिए **मंदिर जाकर, दुख तथा वेदनाओं के बारे में बताकर शिकायत मत कीजिए** । आपके अनजान में शिकायत करने से, **ये दुख भरी भावतरंगें वहाँ आनेवाले सभी लोगों को दुख पहुँचाएँगी** । इसलिए मंदिर आनेवाले भक्तों के शरीरों को मंदिर के समान आदर करके उनके 'प्राण को अंतर्यामी' मानकर, **"इस मंदिर आनेवाले सारे भक्त लोग यहाँ के दैविक गुणों को पाकर कुशलता एवं संपन्नता से जीने की कृपा करें ईश्वरा!"** – इस प्रकार याद करके प्रार्थना कीजिए ।

मंदिर से घर आकर, घर के आँगन में बैठकर पाँच मिनठ तक ध्यान करके, "हमारे परिवार के सारे लोगों को दैविक गुण पाना चाहिए! हमारे घर आनेवाले सारे लोगों को दैविक गुण पाना चाहिए!

हमारे पास व्यापार के कारण आनेवालों को कुशलता एवं संपन्नता पाना चाहिए! हमारे धंधे करनेवाले स्थलों में समृद्धि बढ़नी चाहिए, ईश्वरा!" – इस तरह याद करके, मंदिर से लानेवाले विभूति तथा पुष्पों को एक छोटे से घड़े के पानी में डालकर, ऊपर कहनेवाले भाव के साथ, उस पानी को घर के सारे स्थानों पर छिड़क दीजिए । इस तरह करने से घर में होनेवाले बुरी भावतरंगें गायब होकर, अच्छी भावतंरगें घर में फैलेंगी ।

घर मंदिर बनता है । आपका विचार दैव बनता है ।
आपका प्राण अंतर्यामी (भगवान) बनता है ।

ऊपर कहने अनुसार ध्यान करने वाले सारे लोग, परिवार सहित ध्यान करके, धृव महर्षि की कृपाशक्ति पाकर, 'आत्मशुद्धि' करते हुए मन में शांति पाकर, विचार, वाक् व क्रिया में ताकत पाकर, प्रतिभा एवं वाक्चादुर्य पाकर, आपके वचन और कार्रवाई में पवित्रता पाकर, आपके करनेवाले पेशे में कुशलता और संपन्नता पाकर, आपके साथ व्यापार करने वाले सारे लोग कुशलता व संपन्नता पाकर, आपके बोल और साँस दुनिया के लोगों को कुशलता पाने की सहायता करें ।

आपके धंधे करनेवाले स्थानों पर आप के वाक् और क्रिया से प्रेम तथा सद्गुण फैल जाएँ । मंदिरों में आपकी बोल और साँस मंदिर आनेवालों को पवित्रता पाने की सहायता करें । आपकी बोल तथा साँस दैविक स्थिति पावें।

पति और पत्नी ध्यान के द्वारा धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पाकर आपका आत्मा प्राण में एकत्रित होकर, प्रकाश बनकर, चन्मजात स्थिति रूपी महास्थिति रूपी

मोक्ष प्राप्ती करने के लिए सर्व पदार्थों में सर्वत्र बनकर मिश्रित होनेवाले हमारे गुरुनाथ जी की प्रार्थना करता हूँ ।

कुशलता पावें! संपन्नता पावें!
धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पावें!

विनायक (गणेश) चतुर्थी – तत्व का स्पष्टीकरण

विनायक (गणेश) चतुर्थी के बारे में पहले ज्ञानियों के दिखाये कृपा मार्ग को देखें । आकाश में उत्पन्न होनेवाला प्राणाणु हमारी पृथ्वी पर आकर्षित होकर, वनस्पति वर्ग के सार से प्रकट होनेवाले सार को यह प्राणाणु अपने अंदर आकर्षित करके, अपने भीतर शरीर का बनावट होकर एक कीड़े का रूपधारण करता है । उस कीड़े को रूपधारण करनेवाले उस दिन को, उसे शिवम् – 'शिव रात्री' के रूप में मनाया जाता है । कारण यही है कि प्राण बननेवाली प्रकाशमान लहरें वनस्पति वर्ग के सार के भाव को अपने अंदर जमा करके, इस भाव के सार से, उस प्राण को घेरकर, कीड़े का शरीर पानेवाला दिन ही 'शिवरात्री' बन जाता है । शक्ति शिव का रूप प्राप्त करता है । इस लिए इस अच्छे दिन को मनाते हैं ।

वह प्राणाणु अपने अंदर जमा करनेवाली स्थिति लेकर, प्रारंभ स्थिति में परिणाम विकास में, एक कीड़े के रूप में उत्पन्न होता है । वह एक पौधे के सार को, अपने सांस में लेकर, उस सार से अपने अंदर जमा कर लेनेवाले भाव के सार से शरीर पाने के बाद, जिस पौधे के सार से यह कीड़ा उत्पन्न हुआ, उस वनस्पति वर्ग के सार – पत्ते के सार को अपने अंदर आहार के रूप में लेकर वह खाता है ।

लेकिन, उस पौधे के पत्ते खत्म हो जाने पर, वह अपने आप सूंघ सूंघकर भटकता है । उसी वर्ग के पत्ते को अपने भूख मिटाने के लिए अपने आप सूंघकर उस पौधे के पत्ते को खोजकर, अपने भूख मिटाने के लिए सरक सरककर चलता है । उस गंध से, वह जानकर चलनेवाले इस संदर्भ में, अपने सरककर जाते वक्त, शरीर में वेदना के साथ, उसी समय भूख की प्रेरणा से, इस भाव की उत्तेजित करने के संदर्भ में भूख के मारे तड़पकर, जिस पौधे की स्थिति लेकर यह शरीर का रूप पाया, उसी सार की गंध को सूंघकर, उस दिशा की ओर तरसते हुए देखता है ।

तरस तरसकर देखने पर भी आँखें नहीं हैं । उसके संदर्भवश उस गंध और उस श्वास के भाव लेकर, उसी तरफ़ वह सूंघ सूंघकर देखता है । वह तरसते हुए जाता है । अब एक पेड़ अपने सार के साथ भूआकर्षन में रहते समय, अपने समीप में चलने वाले हवा में मिश्रित अपने सार की स्थितियों को अपने आप आकर्षित करके, अपने अंदर इकट्ठा करके पेड़ उगते हैं । उसीतरह ही यह कीड़ा भी अपनी गंध के लिए तरसकर, उस भाव के तरसने की शक्ति से, सरककर, चलकर उसी वर्ग के पत्ते को खोजकर चलता है ।

खोजकर देखने के लिए आँखें नहीं हैं, उसी गंधे से ही जान सकता है । अपने भूख से तड़पने के भाव प्रेरित होते समय वह 'देखना चाहिए' – इस तरसने की धड़कन ज्यादा होकर, तरसते हुए आकाश की ओर देखता है । इसलिए उस तरह देखने वाले तरसने के भाव से श्वास लेकर, वे भाव इस आँखें रहित कीड़े के शरीर में जमा होकर, 'क्रिया' (विनै) के रूप में शरीर में उगकर, उस प्राणात्मा में इकट्ठा होने वाले उस क्रिया की स्थिति में, आँखें रहित

कीड़े के शरीर से विलग होकर चलनेवाला प्राणात्मा पुनर जन्म में, वनस्पति वर्ग के सार को वह सूंघकर उस गंध के अनुसार, वह सरककर, उसी सार से उत्पन्न होनेवाले कीड़ा, आँखें होने वाला कीड़े का रूप पाता है ।

इस तरह पहले इकट्ठा कर लेनेवाली क्रियाओं – यानी 'विनै'– के नायक बनकर आँखें होनेवाले कीड़े का शरीर पाता है । इसलिए ही उस प्राण की स्थिति अपने अंदर जमा कर लेनेवाली स्थितियों के अनुसार 'विनायक' – इसतरह हमें जान लेने की तरह ज्ञानियों ने नाम रखा । उस के जमाकर लेनेवाले (क्रिया) विनैयों के अनुसार आँख उत्पन्न होने पर भी उसकी ऊर्जा को हमें ज्ञात करने के लिए आँख रूपी इंद्रिय ज्ञान के क्रिया को हमें समझ लेने के लिए अष्टमी के दिन 'कण्णन' (कृष्ण) पैदा हुआ – इस तरह उपदेश करते हैं ।

'अष्टमी' कहने पर आठ ग्रहों के सारों की स्थिति से ही दूसरे वनस्पति वर्ग उगते हैं । सूरज के चुम्बकीय लहरों के आकर्षण के संपर्क से दूसरे वनस्पति वर्ग विकसित होकर उगते हैं । लेकिन आठ ग्रहों के सार की स्थितियाँ कई परमाणुओं के रूप में विभाजित होकर, कई परमाणुएँ एक के साथ एक मिलकर, उसके मिश्रण की स्थिति के अनुसार, उस वनस्पति वर्ग के पौधों की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं । इस तरह उस वनस्पति वर्ग के सार की स्थिति को यह प्राणाणु सांस लेकर, वह शरीर के रूप में हो जाते समय, उस आठ ग्रहों के सार के मिश्रण की स्थिति ही, इस शरीर के विधानों को, अपने सोचनेवाले इस पंजीकृत की स्थिति से ही, अपने सूंघ लेनेवाले सूरज की चुम्बकीय शक्ति में जोड़कर, वह आँख के रूप में उत्पन्न होनेवाले संदर्भ से रूप पाता है ।

शरीर रूपी शिव, रात्री बनने की इस भाव की स्थिति को ही, शरीर में सोचने वाले इस भाव के सार को वह याद करते समय संदर्भ को पाता है । उस आँख को **'कण्णा'** (कृष्णा) – इस नाम रखकर उसे **'परंदामा'** कहते हैं । क्योंकि उस 'कण्णा' बननेवाले 'कण' (आँख) फैलकर रहनेवाले सभी को अपने अंदर अपना बनाकर दीखता है – इस सच्चाई को **'परंदामा'** का नाम रखते हैं ।

अष्टमी में पैदा हुआ कण्णन (कृष्ण) – इस तरह गीता में दिखाया गया है न? कृष्ण सारथि बनकर चलता है । अपनी आँख (कृष्ण) हमें मार्गदर्शक बनकर हर एक को हमें समझाता है । एक व्यक्ति गलती करता है – इसे हम देखते वक्त, उस गलती के भाव हमारे अंदर आकर्षित होकर, जान लेने पर भी, उस भाव के सार हमारे शरीर के अंदर विनै (क्रिया) बनकर जमा होते हैं ।

एक व्यक्ति गलती करता है – इसे हम समझ सकते हैं । लेकिन उस गलती के भाव के सार हमारे शरीर के अंदर पंजीकृत होकर मिश्रित हो जाता है । इन गलती के भाव बुरी क्रिया (विनै) बनकर इकट्ठा होकर हमारे शरीर में उगते हैं । इसी तरह आँख की दृष्टी में अपने अंदर हर एक को इकट्ठा करके, अपनी रक्षा करने के सार – (यानी) अपने विचार की स्थितियों को अपने अंदर "विनै" के रूप में जमा होकर, अपने अंदर, जिस जिस विनै को अपने भीतर रक्षा करने के लिए सोचा था, उस भाव की स्थिति को आँखों से देखने और उसके अनुसार अपने जीवन में अपने सांस में लेनेवाले इस भाव के सार से ही परिणाम विकासों में उगकर, हम अपने इकट्ठा कर लेनेवाले विनैयों (क्रियाओं) के अनुसार, नायक बनकर, इस तरह कई करोड़ों शरीरों को पाकर, मानव तक रूपधारण किया है ।

हमारे प्राण में इकट्ठा कर लेनेवाले विनैयों (क्रियाओं) के अनुसार ही नायक बनकर, परिणाम विकास में उसके मुनासिब शरीर बने; हम कीड़े से होकर मानव पर्यंत उत्पन्न होने तक कई प्रकार के, साधारणत: कीड़े हैं तो वनस्पति वर्ग के सार को खाता है । इसी तरह कितने ही भी प्रकार के पत्तों को – वह जिस जिस को खाता है, उस सार के अनुसार उसके रंग और गुण बनकर आते हैं ।

जिस जिस गुण की स्थिति को अपने भीतर मान कर लेता था, उस गुण को अपनी रक्षा कर लेने के लिए, उसे अपने अंदर, अपनी रक्षा करनेवाले भावों के सार को विनै के रूप में इकट्ठा करके, बाद में अपने इकट्ठा कर लेनेवाले विनैयों के अनुसार पुनर्जन्म पाते वक्त, पहले शरीर में जिस जिस भाव को – अपनी रक्षा करनेवाले भाव को सांस में लेता था उसके अनुसार अंग उत्पन्न होकर, इस तरह सब की रक्षा करनेवाली यादों के सार उत्पन्न होकर, भाव के सार के अनुसार आज मानव के रूप में पैदा होने की तरह किया है हमारा प्राण– **"आदिमूल"** होनेवाला यह प्राण रूपी ईश की कारीगरी ।

इसे हम जान लेने के लिए ही नाम दिये हैं कि **"विनायक चतुर्थि"** । कीड़े से जानवर बनने तक प्रकृति में उगनेवाली सभी चीज़ों को वह खाता रहता है । लेकिन मानव बनने के बाद हम प्रकृति में उगनेवाली सभी चीज़ों को पकाकर खाते हैं । उदाहरण के लिए, एक पौधे में होनेवाले खारापन की स्थिति को, हमारे पक जाने पर, उस खारापन हट हो जाता है । उसके अंदर तरह तरह के स्वादिष्ट पदार्थों को जोड़कर रुचिकर पदार्थ बनाकर हम खाते हैं ।

इसी तरह, कई पदार्थों की स्थितियों को हम स्वादिष्ट रूप से पकाकर खाने की उस ऊर्जा पाने की योगयता की स्थिति ही

विनायक चतुर्थि है । जानवर की हालत में अभी तक प्रकृति में उगनेवाले वनस्पति वर्ग के सार से विकसित होकर आने पर भी, उसे रोककर, अनन्तर हमारे लिए पकाने की ताकतवर शक्ति पानेवाले मानव के शरीर के अंदर इकट्ठा कर लेनेवाले विनैयों के अनुसार, उस विनै की शक्ति की ऊर्जा ही हमारे कार्यान्वित होनेवाली यादों के भाव – इस स्थिति को समझाने के लिए ही हमें किस विनै को इकट्ठा करना चाहिए – इस स्थिति के लिए ही विनायक चतुर्थि को हमें दिखाये ।

विनायक चतुर्थि का दिन हम सब मिट्टी से विनायक (गणेश) बनकर, उसको गन्ना, मिठाई, मोदक और फल वर्गों को नैवेद्य करके हम बाद में मिट्टी से बना हुआ उस विनायक को पानी में गला देते हैं । उसका गूढ़ार्थ, इस मनुष्य जीवन में भूत काल में – एक साल के समय हम अज्ञात में ही, भलाई की चिंता के साथ कार्य करने पर भी हमारे अनजान में दुर्वलता, संचलता, संकट, क्रोध, उतावला, गुरसा, घृणा, भय आदि भाव हमें राह दिखाने की तरह बनते रहने पर भी वे सब हमें वेदना देनेवाले कार्य ही हैं । इस तरह **हमारे अंदर इकट्ठा कर लेनेवाले बुरे विनैयों को हटाकर, भले विनैयों को हमारे अंदर इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित करनेवाला दिन ही विनायक चतुर्थि होता है ।**

हमारे जीवन में हमें अनजान में ही जमा होनेवाले विनैयों को हटाने के लिए, इस तरह के रूचिकर आहार को नैवेद्य करके इस सच्चाई को समाझाने वाले महर्षियों की कृपा शक्ति हमें प्राप्त करनी चाहिए – इस तरह तरसकर, हमारे जीवन के हर एक मिनट ज्ञानियों के अनुग्रहित करनेवाले उस कृपावचन के अनुसार, हमारे जीवन में हमारे सारी कार्यवाही, वह बहुत रुचिकर होना चाहिए – उस विचार

को हमारे अंदर जमा कर लेने का वह याद दिलानेवाला दिन ही विनायक चतुर्थि होता है । प्रकृति के वनस्पति वर्ग के सार को यदी हम खायें तो, उस वनस्पति वर्ग के सार के अनुसार ही हमारी याद की लहरें, उसके संचालन और उसके उद्देश्य चलते हैं ।

मैं आज स्वादिष्ट पकाकर हर एक (चीज़) को मिलकर हमें जिस तरह चाहिए उसतरह पकाकर हम प्रसन्न होकर रुचि के साथ खाने की इस क्रिया को करने देनेवाले विनैयों को हमारे अंदर विकसित करने वाले इसी को ही, हम सच्चे प्रकाश देने वाली वह चतुर्थि - पहले होनेवाली स्थितियों को रोककर, आज की स्थितियाँ, ज्ञानियों की कृपा वाणी को हमें प्राप्त करने की योगयता को हमें याद दिलानेवाला भलाई का दिन है यह ।

हम रास्ते पर जाते वक्त, एक व्यक्ति गलती करता है । एक व्यक्ति को दूस्रा व्यक्ति मार पीटता है । लात मारने जानेवाले को देखते समय हमें जलन आता है । हमें चिल्लाने वाले को देखने पर वेदना आता है । ये दोनों भाव हमारे अंदर उस चेतना को प्रेरित करके जब हमारे प्राण रूपी 'ईश' में पड़ता है, तब प्राण रूपी 'ईश' में भी जलन उत्पन्न होता है । भाव की तरंगें हमारे शरीर के भीतर घुसकर जलन को उत्पन्न करनेवाले क्रिया को हमें दे देता है । उस जलन रूपी विनै की स्थितियाँ हमारे शरीर रुपी शिव में ऐक्य हो जाती हैं ।

उस जलन रूपी वेदना की स्थितियाँ हमारे अंदर व्याधि बनकर विनै का रूपधारण करती है । इस विनै को हटाने के लिए, हम आज मोदक बनाकर रूचिकर अमृत को जमा करते हैं न? इसे याद कराने के उद्देश्य इस तरह के विनैयों को हम हल करने के लिए ही हैं ।

यदी एक व्यक्ति गलती करें तो उस गलती को देखने के बाद उस भाव का सार हमारे शरीर में न मिलने की तरह रोकने के लिए, ध्यान करनेवाले सभी लोग 'ओं ईश्वरा' – इस तरह (अपने प्राण को) याद करके, "धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महा प्रकाश हमें पाना चाहिए । इसे मेरे जीवानमा को पाना चाहिए ।" – इस तरह उन ज्ञानियों की कृपावाणी रूपी उस भाव की स्थिति को सांस में लेकर "इसे मेरे जीवान्मा को पाना चाहिए" – इस ख्याल को हमें संचालित करके उस ज्ञानी के प्रकाश की सहायता से हमारे अंदर उसे जमा करते वक्त दूस्रे लोगों के हमारे सामने करने वाले उस जलन को रोकना तथा उसे हटाकर भले विनैयों की स्थिति को हमारे अंदर जमा कर लेना – उसे याद दिलाने वाला उच्छा दिन ही विनायक चतुर्थि होता है ।

इस तरह हम सोचते हैं कि घर में लड़के को अच्छी तरह पढ़ना चाहिए । यदी वह न पढ़ें तो उसे देखते ही हम वेदना में पड़ जाते हैं, संचल हो जाते हैं, नाराज़ हो जाते हैं । कारण यह है कि हमारे सोचनेवाले इस भाव की स्थितियाँ हम जिसे सांस में लेते हैं, जिसे याद करते हैं उन भावों को हमारे अंदर सांस लेने देकर, हमारे भीतर उन वेदनाएँ उत्पन्न हो जाते हैं । लेकिन लड़का अच्छी तरह रहना चाहिए – इस तरह सोचते हैं । भलाई को थोड़ी देर याद करके, भविष्य काल के बारे में सोचकर वेदना के सांस को हमारे अंदर जमा करके, बुरी क्रिया को इकट्ठा करके, इस बुरे भाव को उत्पन्न करने वाले ख्याल को ही हम लड़के पर बहाते हैं ।

इन सब को बदलने के लिए ही ध्यान मार्ग में दिखाये हुए 'आत्मशुद्धि' करके – हम कलश के सामने खड़े होकर बच्चों को

अच्छी तरह पढ़ना चाहिए – इसे याद करके 'ओं ईश्वरा' – इस प्रकार (प्राण को) याद में लाकर 'महर्षियों की कृपाशक्ति मुझे पानी चाहिए । मेरे जीवान्मा को पानी चाहिए' – इस तरह सोचकर, 'हमारे बच्चों को महर्षियों की कृपा शक्ति पानी चाहिए । उस उर्जा को उसे पाना चाहिए । उस मार्ग से उसे ज्ञानी बनना चाहिए । शिक्षा में होशियारी पानी चाहिए ।' – इस तरह सोचकर उस विनै को जमा करके उस विनै के भाव में उगनेवाले ख़याल को बच्चों पर हमें वहाना चाहिए । हमारे अंदर प्रकाश पाने की शक्ति को हमें विकसित करने को याद दिलाने वाले भलाई का दिन ही विनायक चतुर्थि होता है ।

महर्षियों की कृपाशक्ति को हर एक मिनट आप अपने शरीर में जमा करके, हमारे अनजान में आनेवाले सभी बुरे विनैयों को हटाकर, आपके जीवन में धंधे में उन्नति, मनोबल और तंदुरुस्ती पाकर, महर्षियों के कृपाप्रकाश पाकर, विकसित होकर, आपके बोल तथा श्वास, दुनिया के लोगों को कुशलता पाने की सहायता करनी चाहिए – इस तरह प्रार्थना करके पूर्ति करता हूँ ।

उस मार्ग पर आपको सर्व भलाइयाँ प्राप्त होंगी ।

हमारी कृपा आशिषों के साथ

वेणुगोपाल स्वामी जी

विनायक (गणेश) चतुर्थि का दिन

तपोवन में अनुग्रह करनेवाला वचन

कुशलता पावें! संपन्नता पावें!

धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश पावें!

ओं ईश्वरा गुरुदेवा

ज्ञानगुरु और तपोवन

हमारे ज्ञानगुरुजी अपने गुरुनाथ जी के दिखाये कृपा मार्ग पर, भारत के विभिन्न प्रदेशों को जाकर, आकाश शास्त्र, भूशास्त्र, प्राणी शास्त्र – आदि की सच्ची स्थितियों को जानकर, समझकर, उसे सभी लोगों को पाना चाहिए – इस अभिलाषा से, ध्यान के द्वारा और उपदेश के द्वारा समझाते रहने की तरह ज्ञानगुरु के दिखाये कृपामार्ग पर स्वामी अम्मा ध्यान का अय्यास तथा कृपाआशिषें देती रहती थीं ।

ईरोडु जिल्ला, सत्यमंगलम तालूका, पुन्जै पुळियमपट्टि शहर के पास वडुगपाळैयम नामक गाँव में अपने गुरुनाथ जी के नाम पर ज्ञानगुरुजी के “मामहर्षि ईश्वराय गुरुदेवर तपोवनम्” को निर्माण करके उसमें “सच्चे ज्ञान ध्यान विकास श्रीसभा” को भी निर्माण करने

को ज्ञानगुरुजी की प्रकाशमान स्थिति प्राप्त करने के बाद स्वामी अम्मा चलाती रहती थीं ।

तपोवन में "पूर्णिमा ध्यान" में हम आकाश की ओर याद करके, धृव नक्षत्र को ध्यान करते समय, आकाश के धृव नक्षत्र, सप्त ऋषि मंड़लों और ब्रह्माण्ड से प्रकट होने वाली कृपाज्ञान शक्तियों को हम प्राप्त कर सकते हैं । पूर्णिमा के दिन संयुक्त ध्यान में हमारे कुलदैव रूपी पूर्वजों के शरीर से विलग होकर जानेवाले प्राणात्माओं को तथा हमारे साथ जीवित होकर विकसित करके शरीर से विलग होकर जानेवाले मित्र और रिश्तेदारों के प्राणात्माओं को सप्तऋषि मंड़लों में जोड़कर जन्मजात स्थिति पाने के लिए ध्यान करना विशेष अंश है । उस दिन में ध्यान करने वालों को अत्यंत शक्तियाँ मिलती हैं । उसे प्रयोग करके आकाश से मिलनेवाली धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा महाप्रकाश और सप्तऋषि मंड़लों की महाकृपा तथा महाप्रकाश हम सब लोगों को पाने के अपूर्व मौका मिलता है । उसे प्रयोग करके, कई शहरों से तपोवन के सदस्य, अन्य शहर एवं अन्य राज्यों (प्रदेशों) के लोग तथा तपोवन के आसपास के गाँवों के लोग शामिल होकर कृपाशक्ति पाते रहते हैं । तपोवन में ठहरने के लिए कमरे, खाने के लिए भोजनालय बसे हुए हैं ।

तपोवन पुन्जै पुळियम्पट्टी से सत्यमंगलम जानेवाले रास्ते में तीन किलो मीटर दूर पर है । अधिक मात्रा में बस की सुविधा भी होती है । नम 6, 6A, N6 आदि बस तपोवन के मार्ग पर चलते हैं । कोयम्बत्तूर से सत्यमंगलम् जानेवाले रास्ता तथा ईरोड्ड, अविनाशि, पुन्जै पुळियम्पट्टी मार्ग से भी तपोवन पहुँच सकते हैं ।

तपोवन से "उयिरे कडवुळ" (मतलब – प्राण ही अंतर्यामी) नामक सच्चाज्ञान मासिक पत्रिका (तमिल भाषा में) ज्ञानगुरुजी के उपदेशों के साथ प्रकट होता है । उसका वार्षिक चन्दा रु.100 तथा आजीवन चन्दा रु. 500 इस प्रकार निर्दिष्ट किया हुआ है । और भी सच्चे ज्ञान ध्यान विकास श्रीसमा के आजीवन सदस्य के लिए रु. 1500 चन्दा निर्दष्ट किया हुआ है ।

ऊपर कहनेवाले आजीवन सदस्य बननेवाले प्रेमियों को कृपाज्ञान चक्र ज्ञानगुरु तथा स्वामी अम्मा की आशीर्वाद के साथ दिया जाएगा ।

– निर्वाहकगण

वैज्ञानिक महान संकट से छुटकारा पाने लिए

आज वैज्ञानिक दुनिया में जीवन विताते हैं । वैज्ञान से महान संकट आनेवाले हैं । धर्म के लिए युद्ध, जाति(वर्ग) के लिए युद्ध आदि स्थितियों में तीव्रवादें बढ़कर लोगों को धमकाने की स्थितियाँ ही आती हैं । इन सब से छुटकारा पाने के लिए, हमारे गुरुनाथ जी के दिखाये कृपामार्ग पर, अगस्त्य धृव बनकर, धृव महर्षि बनकर, धृव नक्षत्र बननेवाले उस धृव नक्षत्र की महाकृपा तथा पहाप्रकाश को हमें याद करके अपने अंदर उसे विकसित करना चाहिए । उसतरह हम विकसित करते समय प्राण में इकट्ठा हानेवाली भावनाएँ महाप्रकाश की भावनाओं के रूप में जोड़कर, इस मानव जन्म के बाद जन्मजात, प्रकाशमान शरीर पाने के हेतु बनेंगे ।

– **'ज्ञानगुरुजी'**

शरीर के अंगों को याद करके ध्यान करने का मुख्यत्व

हवा मंडल जहरीली स्थिति में है । हवा मंडल से जहरीली स्थिति को हटाकर, वराह अवतार बनकर, अच्छी शक्ति आपको पानी चाहिए । उस अच्छी शक्ति को आप पाकर विकसित कर सकते हैं । इलक्ट्रिक और इलक्ट्रानिक से कंप्यूटर के चलाए हुए 'रोबोट' को तैयार करते हैं । एक व्यक्ति को देखते ही उसके मन की स्थिति में जो होता है उसे जानकर अपने मालिक को सावधानी देता है कि वह गलती करनेवाला है । उसी तरह शरीर के अंगों को इलक्ट्रिक और इलक्ट्रानिक की स्थितियों में आपके शरीर के अंगों को शक्ति देता हूँ । उसे विकसित करना आप की स्थिति है । विकसित करें तो भलाई होगी ।

– **'ज्ञानगुरुजी'**

अंतिम वाणी – 15.06.2002

தபோவன வெளியீடுகள்

"ஞானகுரு அருளியவை"

1. உயிரே கடவுள்
2. முருகனும் போகனும்
3. விநாயகத் தத்துவம்
4. உணர்வுகளின் இயக்கங்கள்
5. உணர்வுகளின் பெருக்கமும் உயிரின் இயக்கமும்
6. வினை நீக்கும் விண்ணின் ஆற்றல்கள்
7. எண்ணத்தின் தோற்றமும் எண்ணத்தின் இயக்கமும்
8. மெய்ஞான உணர்வும் விஞ்ஞான உணர்வும்
9. பேரண்டமும் பெருவீடும்
10. மகா சிவன் ராத்திரி
11. அகத்தியர் அருளிய குரு வழி தியானம்
12. ஞான பொக்கிஷம் பாகம் - I
13. ஞான பொக்கிஷம் பாகம் - II
14. குரு வழியில் ஞானகுரு - I
15. குரு வழியில் ஞானகுரு - II
16. மனித உணர்வுகளால் வரும் நோய்கள் நீங்கும் வழி
17. கீதையின் சாரம்
18. ஆத்ம சுத்தி
19. ஆத்ம ஜோதி
20. நாராயணனின் அவதாரம் பத்து
21. அருள்ஞான பொக்கிஷம்
22. மாமகரிஷிகள் அருளிய பேருண்மைகள்
23. பேரின்பத்தைத் தரும் பேரொளி
24. कृपा ज्ञान कोष (ஹிந்தி - புத்தகம்)
25. ஞானகுரு உபதேசித்து அருளிய மூலக்கூறுகள்
26. துருவ தியானமும் ஆத்ம சுத்தியும்
27. Treasure of Wisdom
28. Divine Revelation on
29. தன்னைத் தான் அறிதல்
30. குருவிடம் பெற்ற அனுபவங்கள்
31. துருவ தியானம்

32. Liberation of Soul
33. தெளிந்து வாழ்ந்திட குருவின் அருள்ஞானம்
34. தியானப் பயிற்சியும் பலன்களும்
35. சற்குருவின் அருள் ஞானம்
36. குருவின் மெய்வழி
37. காளிங்கநாதரும் போகமா மகரிஷியும்
38. தவம்
39. ஆன்மாவின் நிலைகள்
40. அருள் ஒளி பெறும் அருள் வாழ்க்கை
41. அருள் ஞானம்
42. தியான அருட் பயிற்சி
43. அருள் ஞானப் பொக்கிஷம்
44. குரு வழியில் வாழும் வழி
45. துருவ தியான விளக்கம்
46. மெய்ஞானப் பாடல்கள்
47. விநாயகனை தியானிக்கும் முறை
48. உயிர் உடல் இயக்கம்
49. ஆலய வழிபாடு
50. வாழும் வழி முறை
51. அருள் வாழ்க்கை
52. ஞானகுருவின் மருத்துவக் குறிப்புகள்
53. ஆத்ம சுத்தியும் தியான பயிற்சியும்
54. விஷ்ணு தனுசு
55. அகச்செல்வமும் அருட்செல்வமும்
56. அருள்ஞான வழி
57. அகத்தியர் - 1
58. உயிரே கடவுள் (தெலுங்கு)
59. அகத்தியர் - 2
60. அகத்தியர் - 3
61. கோலமாமகரிஷி - பாகம் - 1
62. பிருகு மகரிஷி
63. கோலமாமகரிஷி - பாகம் - 2
64. கொல்லூர் உபதேசம்
65. ஞானகுருவின் அருளுரைகள் - 1

66. குருவழி
67. அத்திரி மாமகரிஷி
68. வான்மீகி மாமகரிஷி
69. அருள்ஞான முத்துக்கள்
70. மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் - பாகம் - 1
71. மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் - பாகம் - 2
72. வியாச பகவான்
73. காளிங்கநாதர்
74. சற்குருதேவரின் தபோவனம்
75. அருள்ஞானப் பொக்கிஷம் (தெலுங்கு)
76. ஞானகுரு வெளிப்படுத்திய உண்மை நிலைகள்
77. சப்தரிஷி மண்டலமும் ஒளிச்சரீரமும்
78. ஞான காண்டம்
79. அகத்தியம்
80. கொங்கணவ மாமகரிஷி
81. உயிர் வழி சுவாசம்
82. மகரிஷிகள் வெளிப்படுத்திய உண்மை நிலைகள்
83. ஞான அருள்
84. உங்களை நீங்கள் நம்புங்கள்
85. Uyire Kadavul
86. அருள்ஞான முத்துக்கள் - பாகம் - 2
87. அன்னை, தந்தை அருளால் குரு அருள்
88. அருள்ஞான முத்துக்கள் - பாகம் - 3
89. மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் கொடுக்கும் ‘‘அழியாச் சொத்து’’ ஞானப்பொக்கிஷம்
90. மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் கொடுக்கும் அழியாச் சொத்து ஞானக்கண்
91. சாமி பெற்ற ஞானம்
92. மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் கொடுக்கும் ‘‘அழியாச் சொத்து’’ ஏகாந்த நிலை
93. மகரிஷிகளுடன் பேசுங்கள் - குரு பலம்
94. ஞானகுரு அருளிய தியானம்
95. மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் அருளிய சப்தரிஷி மண்டலம் அடையும் மார்க்கம்
96. प्राण ही अंतर्यामी

ஞானகுரு வேணுகோபால சுவாமிகள் அருளிய ஒலி, ஒளி தட்டுக்கள், மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் தபோவனம் டிரஸ்ட் வெளியீடுகள்

ஒலித் தட்டுக்கள் (AUDIO CD)

வ.எண்	பெயர்	விபரம்	எண்ணிக்கை
1.	துருவ தியானப் பயிற்சி		1
2.	மெய்ஞானப் பாடல்கள்		1
3.	ஞானப் பாடல்கள்		1
4.	அருள் ஒளி பெறும் அருளுரை பாகம் - I		1
5.	அருள் ஒளி பெறும் அருளுரை பாகம் - II		1
6.	மருத்துவக் குறிப்புக்கள்		1
7.	துருவ தியான விளக்கம்		1
8.	உயிர் உடல் இயக்கம்		1
9.	விநாயகனைத் தியானிக்கும் முறை		1
10.	ஆலய வழிபாடு		1
11.	வாழும் வழி முறை		1

ஒலி, ஒளித் தட்டுக்கள் (VCD)

வ.எண்	பெயர்	விபரம்	எண்ணிக்கை
1.	முதல் குரு பூஜை பாகம்-1	காலை 10 மணி	2
2.	முதல் குரு பூஜை பாகம்-2	காலை 10 மணி	2
3.	முதல் குரு பூஜை பாகம்-3	இரவு 7 மணி	2
4.	2-வது குரு பூஜை	காலை 10 மணி	3
5.	3-வது குரு பூஜை	காலை 10 மணி	3
6.	6-வது குரு பூஜை	காலை 10 மணி	4
7.	7-வது குரு பூஜை	காலை 10 மணி	4

8.	8-வது குரு பூஜை பாகம்-1	துருவ தியானம்	3	
9.	8-வது குரு பூஜை பாகம்-2	காலை 10 மணி	3	
10.	9-வது குரு பூஜை	இரவு 7 மணி	3	
11.	10-வது குரு பூஜை	துருவ தியானம்	2	
12.	10-வது குரு பூஜை	இரவு 7 மணி	3	
13.	10-வது குரு பூஜை	காலை 10 மணி	3	
14.	11-வது குரு பூஜை	காலை 10 மணி	3	
15.	12-வது குரு பூஜை பாகம்-1	இரவு 7 மணி	3	} 4
16.	12-வது குரு பூஜை பாகம்-2	துருவ தியானம்	2	
		காலை 10 மணி	2	
17.	கடனா நதி 1999-ம் வருடம்		2	
18.	கடனா நதி பாகம்-1	1, 2	2	
19.	கடனா நதி பாகம்-2	3, 4	2	
20.	கடனா நதி பாகம்-3	5, 6	2	
21.	கடனா நதி பாகம்-4	7, 8	2	
22.	கடனா நதி பாகம்-5	9, 10	2	
23.	சிதம்பரம் உபதேசம்	1, 2	2	
24.	கீதையின் சாரம்	1, 2	2	
25.	விநாயக சதுர்த்தி	1, 2, 3	3	
26.	அண்டமும் பிண்டமும்	1, 2, 3	3	
27.	தன்னைத்தான் அறிதல்	1, 2, 3	3	
28.	பௌர்ணமி தியானம்	1, 2	2	
29.	பௌர்ணமி உபதேசம்	1, 2, 3	3	
30.	சாமி அம்மாள் உபதேசம் பாகம்-1	1, 2	2	
31.	சாமி அம்மாள் உபதேசம் பாகம்-2	3, 4	2	

வெளியீடு :

மாமகரிஷி ஈஸ்வராய குருதேவர் தபோவனம்

புஞ்சை புளியம்பட்டி - 638 459 ஈரோடு மாவட்டம்

MP3

நமது **ஞானகுரு** அவர்கள் 1986-ஆம் வருடம் முதல் 2002-ஆம் வருடம் வரை உபதேசித்த அருள்ஞான உபதேசங்கள், MP3 வடிவில் CD-யாக மாற்றப்பட்டு உள்ளது. அதனை தலைப்பு வாரியாக தொகுத்து அட்டவணைப் புத்தகம் தயார் செய்யப்பட்டு தபோவன அலுவலகத்தில் உள்ளது. தேவையான CD விபரங்கள் அதற்குண்டான தொகையை தபோவன அலுவலகத்தில் செலுத்தி உரிய MP3 CD-க்களை பெற்றுக் கொள்ளும்படி கேட்டுக் கொள்கிறோம்.

- நிர்வாகிகள்